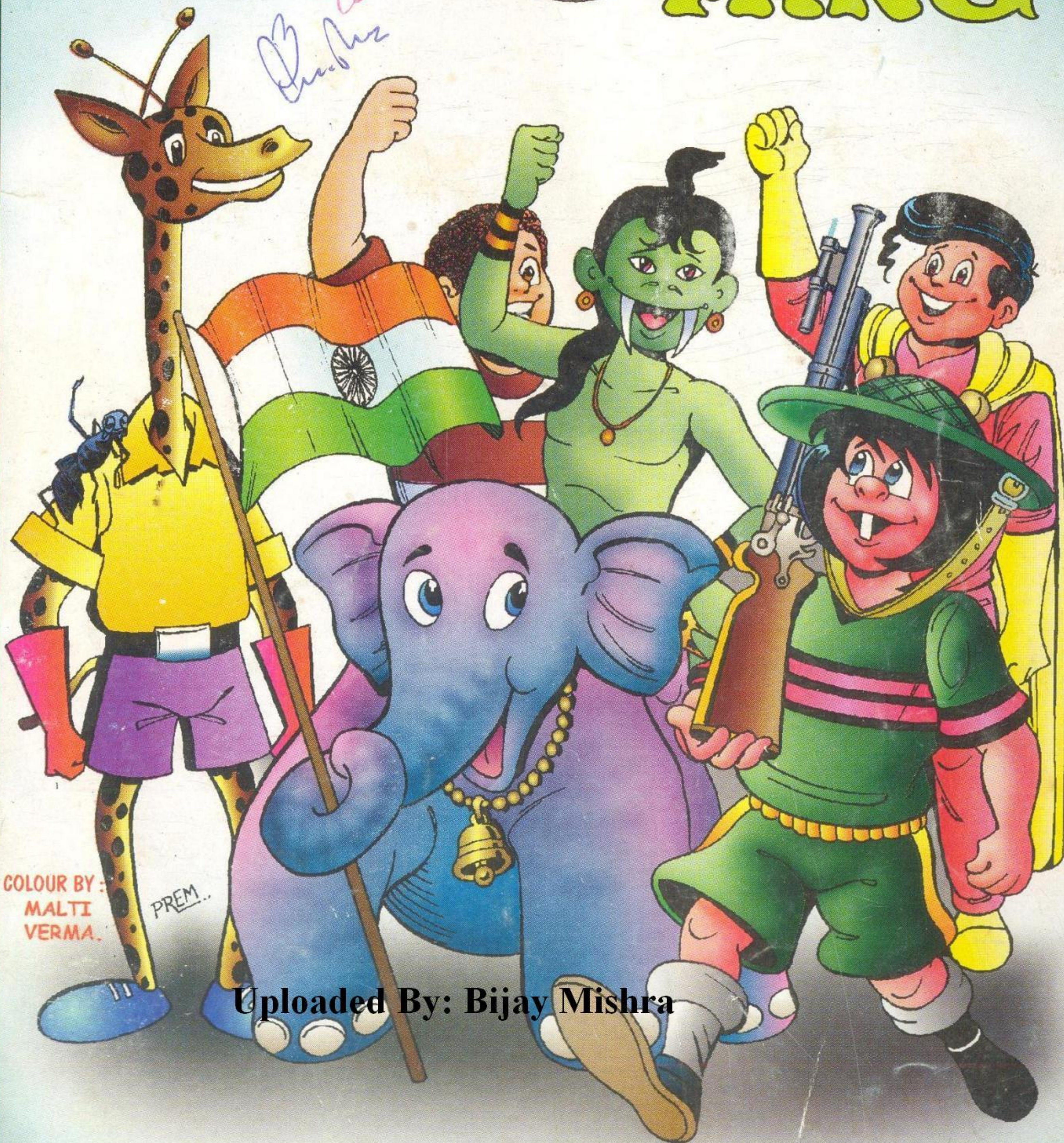




# कैला FANG

90  
Bijay



COLOUR BY:  
MALTI  
VERMA.

PREM...

Uploaded By: Bijay Mishra





# इनसे प्रेरणा पाएं... भारत मां के वीर सपूत



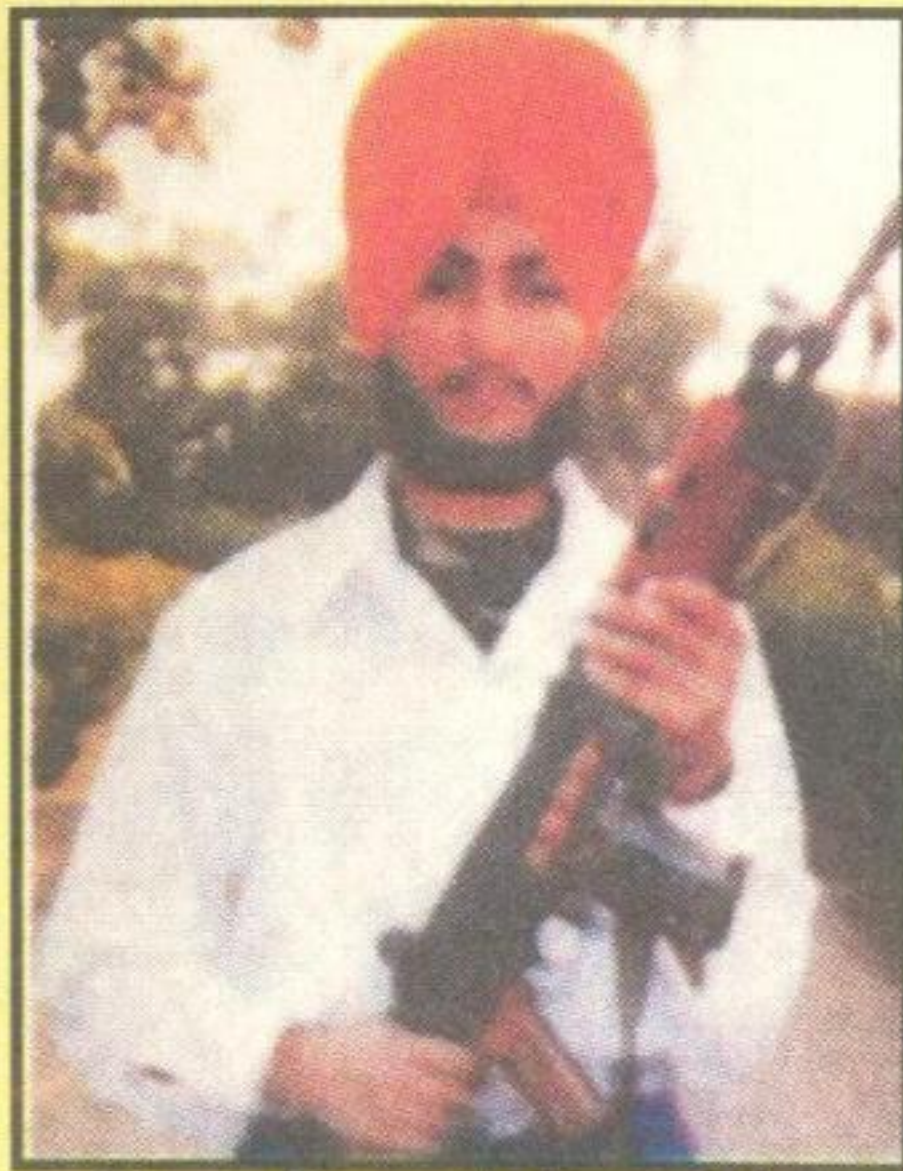
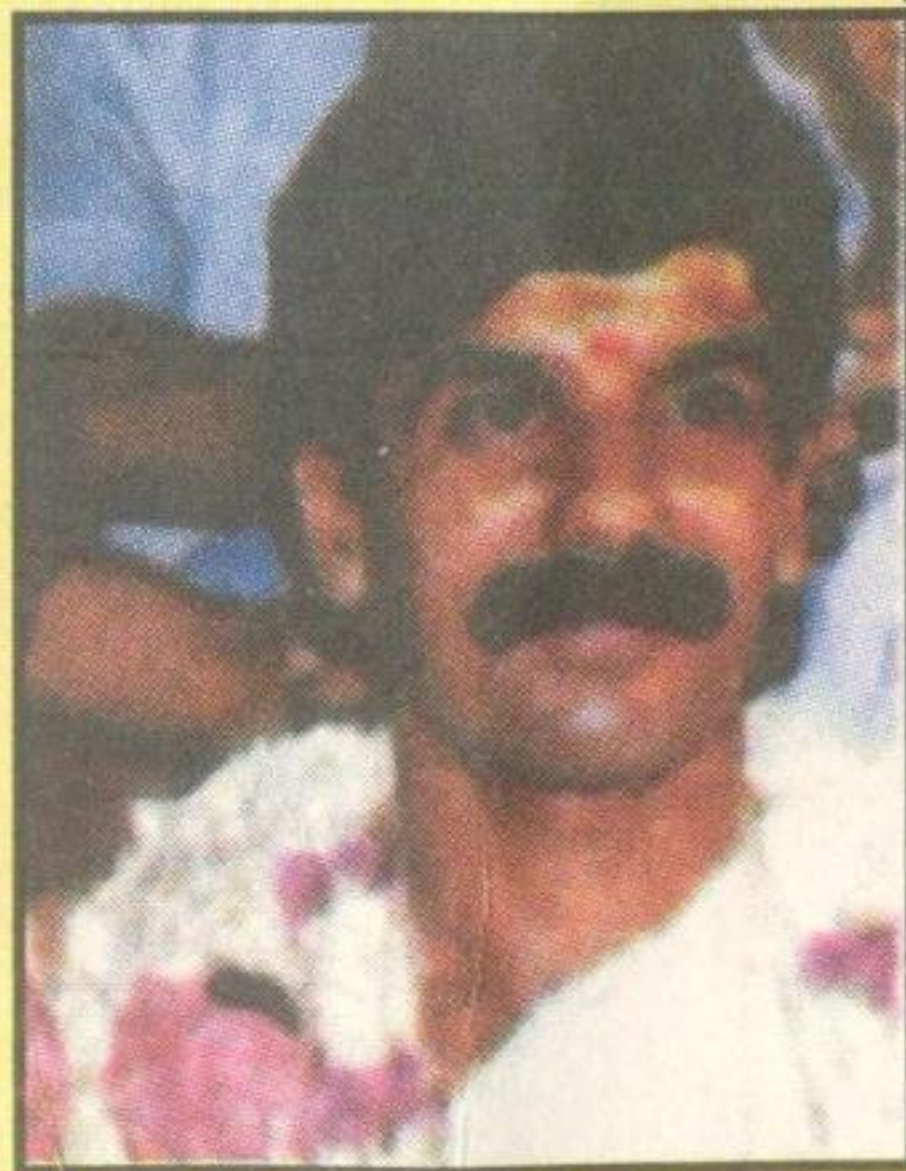
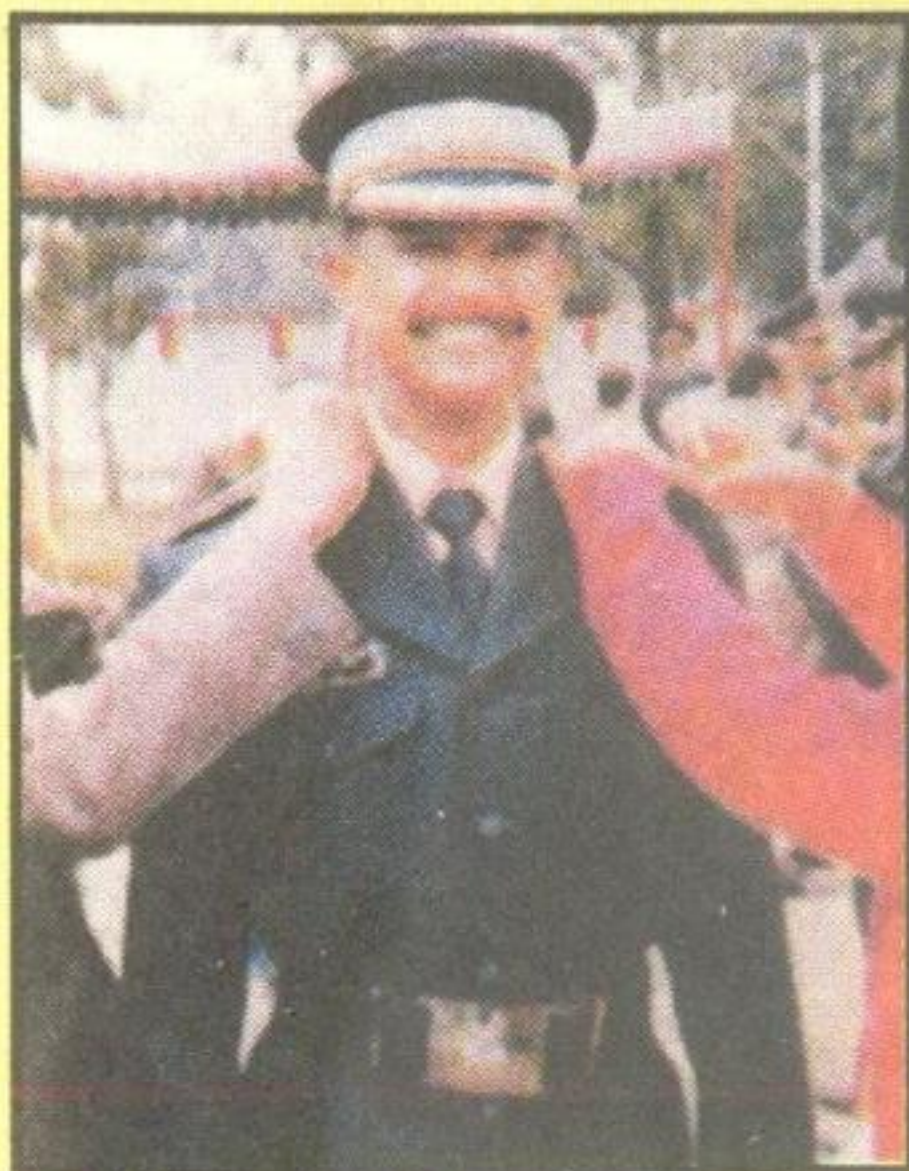
मेजर विवेक गुप्ता हिन्दुस्तान की सरजमीं पर जब-जब भी विदेशी आतताइयों की नापाक नजरें पड़ीं, भारत मां के वीर सपूत दुश्मनों के खून से होली खेलते हुए 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गा मेजर राजेश अधिकारी उठे। देश की आन-बान पर अपनी जान कुरबान करने को हमेशा तैयार ये वीर सपूत भारत मां की गोद में सदियों से खेलते आए हैं कभी मंगल पांडे, तात्यां टोपे और लक्ष्मीबाई बनकर तो कभी वीर सुभाष, चन्द्रशेखर, भगतसिंह और अशफाक बनकर।

भारत शांति और न्यायप्रिय देश है, किन्तु जब कोई विदेशी ताकत अहंकार में चूर होकर हमारी शांति भंग करने का प्रयास करती है, न्याय को अन्याय तले रौंदना चाहती है तो भारत मां के वीर सपूत खून की नदियां बहाने से भी नहीं हिचकते। भारत के रण बांकुरों ने सैकड़ों बार इतिहास को अपने लहू से लिखा है।

आज एक बार फिर भारत के वीर सपूतों ने कारगिल के दुर्गम पर्वत शिखरों पर अपने रक्त का तिलक लगाकर एक नया इतिहास लिख दिया है। कारगिल के पर्वत शिखरों की एक-एक चट्टान कल चीख-चीखकर यही कहेगी कि हमने भारत के 'कल' के निर्माण के लिए अपना 'आज' बलिदान कर दिया।

भारत का जन-जन इन अमर शहीदों का सदैव ऋणी रहेगा, जिन्होंने मातृभूति को दुश्मन की नापाक नजरों से बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इन अमर वीर शहीदों की याद में ये पक्तियां बार-बार दोहराई जाती रहेंगी।

शहीदों की चिताओं पर, लगेगे हर बरस मेले।  
वतन पर मरने वालों का, बस यही बाकी निशां होगा।



कैप्टन अमोल कालिया    ले. कर्नल आर. विश्वनाथन    सिपाही रसविंदर सिंह    नायक राजकुमार पूनिया



संजय गुप्ता पेश करते हैं

हस्य, विनोद, शिक्षा एवं मनोरंजन  
की बाल मासिक पत्रिका

डूबी

डूबी

डब

डब

मेरे आजाद दोस्तो, आजादी का प्रतीक यह शुभ दिन सभी को मुबारक हो। आप लोगों ने पतंगें तो खरीद ही ली होंगी। जिन्हें पतंग उड़ाने का शौक नहीं है उन्होंने किसी छोटे मोटे टूर का प्रोग्राम बना लिया होगा। जिन्हें यह दोनों शौक नहीं हैं उन्होंने देशभक्ति के गानों की कैसेट्स तो खरीद ही लिये होंगे। भई आजादी के दिन की खुशी किसे नहीं होती पर सभी का खुशियां मनाने का अंदाज अलग-अलग होता है। आप आजादी की खुशियां जरूर मनाएं पर एक गुजारिश है जिन शहीदों की वजह से हमें आजादी मिली उन्हें एक बार याद जरूर कर लेना। मनोज गुप्ता

फेंग

अगस्त 1999

वर्ष:2 अंक:20



संपादक/प्रकाशक  
मनोज गुप्ता

सह संपादक  
विवेक मोहन

सहयोग  
भरत

कार्यालय:  
राजा पॉकेट बुक्स  
330/1, बुराड़ी,  
दिल्ली-84

फोन:  
7221410, 7259599  
7415036, 7415037  
7415038, 7415039  
फैक्स: 7258227

email: rajam@nda.vsnl.net.in.  
website: http://www.imns.com/vrpb

## विषय सूची

### चित्रकथाएं

05 भग्न सपेरा  
(नागराज)

11 वीर बालक  
(अनाड़ी)

23 15 अगस्त  
(जंबो)

41 सूर्यपुत्र कर्ण  
(धार्मिक चित्रकथा)

49 कौन बड़ा बेवकूफ  
(बोनी)

53 जंगल में मंगल  
(फेंग)

55 कितनी गर्म चाय  
(हिना)

59 हाथ कांटा चुभ गया  
(फ्रेंडी)

### स्थायी स्तंभ

04 देवता की मूर्ति  
(लघुकथा)

09 पीड़ा  
(कहानी)

15 फकीर मोहम्मद घोसी  
(फेंग ऑफ द मंथ)

16 मूर्खता की दाढ़ी  
(हंसिए और फंसिए)

17 विषैला मेढक/डोडो चिड़िया  
(वाइल्ड लाइफ)

18 उल्लू व कौए की दुश्मनी  
(लघुकथा)

19 चोर की सीख  
(लघुकथा)

20 हरा टमाटर...  
(जानकारी)

21 जनगणना क्यों की जाती है  
(जानकारी)

22 कौन अधिक सुंदर  
(लघुकथा)

27 गा मेरे मन गा  
(प्रतियोगिता)

28 पदचिन्ह सुराग  
(भेदिया जासूस)

29 आधी रात की आजादी  
(कहानी)

31 डायनासोर क्रेज मेज  
(पजल)

32 सर्पाकार प्रतियोगिता  
(प्रतियोगिता)

33 ये कौन वर्ग पहेली  
(प्रतियोगिता)

34 किन्नी-कुन्नु क्या  
(जानकारी)

35 ढूँढ़ो ढूँढ़ो प्रतियोगिता  
(प्रतियोगिता)

36 अपना नाम लिखो  
(मजेदार खेल)

37 पद्म भूषण  
(जानकारी)

38 अनाड़ी का खेलना  
(प्रतियोगिता)

39 किस खेत की मूली हैं हम  
(जानकारी)

40 फैन्सूज  
(समाचार)

45 अकेलापन  
(कहानी)

47 जेवर दुगने  
(विज्ञान कथा)

48 घोड़ा आदमी का गुलाम  
(लघुकथा)

51 सिगरेट से हानि  
(जानकारी)

52 जूतों का आविष्कार  
(जानकारी)

56 कारगिल की कहानी  
(जानकारी)

57 (खेल जगत)





## देवता की मूर्ति

यूनान के राज दरबार में मूर्तिकला की प्रदर्शनी लगी हुई थी। देश भर के कलाकारों ने अपनी-अपनी मूर्तिकला का प्रदर्शन किया था। उन्हीं मूर्तियों में राजा को 'अपोलो' की एक मूर्ति पसंद आई और उन्होंने वहां उपस्थित सामान्यजन से प्रश्न किया, "इसे किसने बनाया है?" लेकिन मूर्ति का मूर्तिकार सामने नहीं आया। थोड़ी देर में सिपाही एक लड़की को पकड़ कर लाए। उन्होंने राजा से कहा, "इसे पता है कि मूर्ति किसने बनाई है, लेकिन यह बताने से इंकार करती है।"

राजा ने उससे बार-बार पूछा किन्तु लड़की के मुंह पर चुप का ताला लगा रहा। अंत में गुस्से में भरकर राजा ने कहा, "यह कुछ नहीं बताती। इसे जेल में डाल दो।" तभी एक नौजवान भीड़ को चीरता हुआ राजा के



सामने पहुंचा और वह बोला, "मेरी बहन को छोड़ दें, कुसूर मेरा है। मूर्ति मैंने बनाई है।"

राजा ने पूछा, "कौन हो तुम?"

"मैं एक गुलाम हूं।" युवक ने जवाब दिया।

उसके इतना कहते ही भीड़ उत्तेजित हो उठी। मारो-मारो की आवाजें उठने लगीं। एक गुलाम की इतनी जुर्रत कि देवता की मूर्ति बनाए। लोग युवक को मारने दौड़े।

राजा कला प्रेमी था। उसने भीड़ को रोका, "तुम सभी शांति से काम लो। यह देखो कि देवता की यह मूर्ति क्या कह रही है? यह कहती है कि देवता की दृष्टि में सब बराबर हैं। उसने जब युवक को मूर्ति बनाने के इस अपराध पर दंड नहीं दिया, तो तुम कौन होते हो दंड का निर्णय देने वाले?"

राजा ने मूर्तिकार युवक का सम्मान किया और उसे इनाम देकर विदा किया।

—अनीता गौड़





लेखक: तरुणकुमार वाही

पेंसिलिंग: सुरेश डीगवाल

इंकिंग: राजेन्द्र धौनी

# भाग सपेरा

(नागराज)

सांप को देखकर किसकी नानी नहीं मर जाती ?



सांप, सांप !



आण्टी ! कहां हैं सांप ?

तू बता छवि कहां है सांप ?

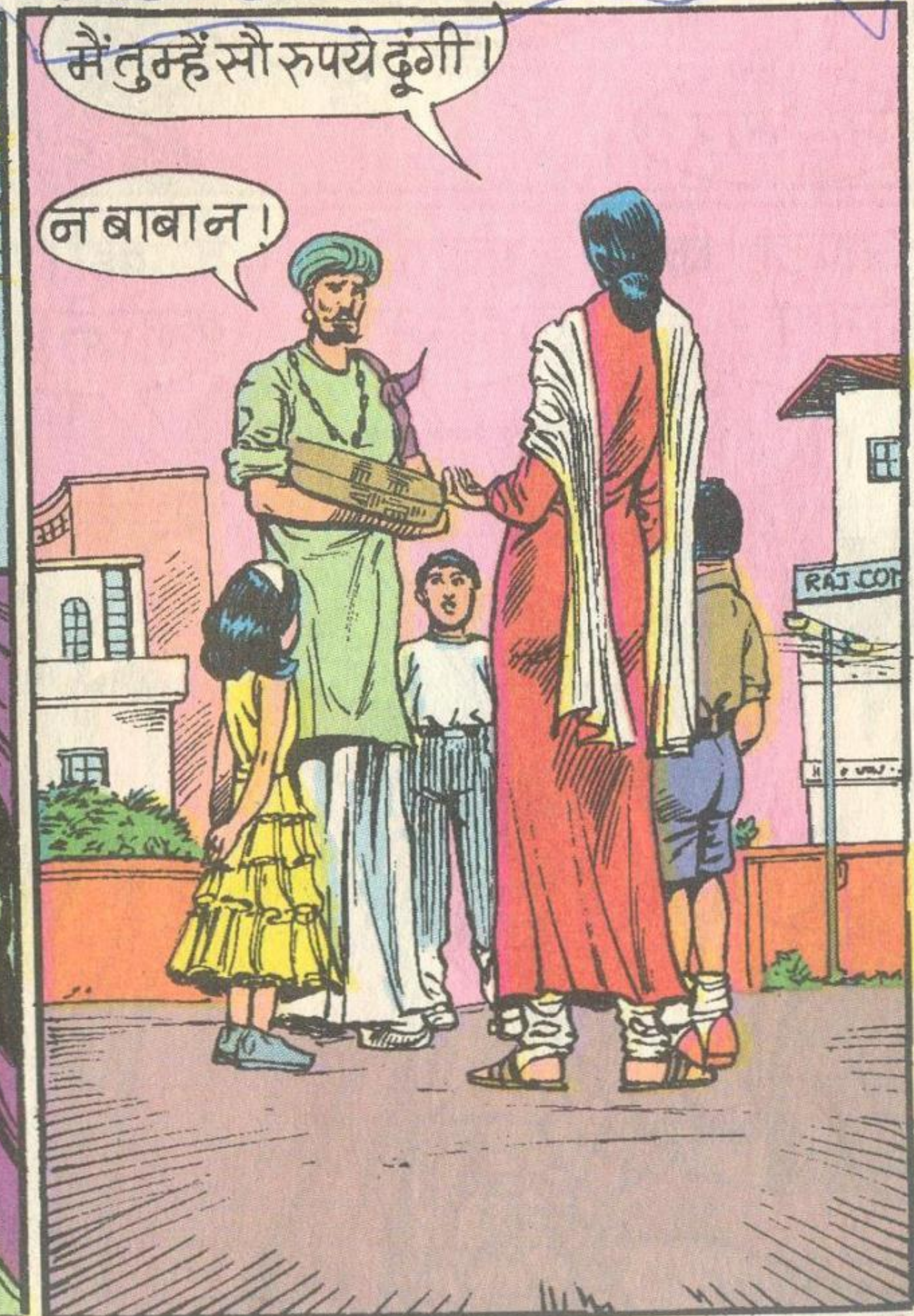
व... वहां। कमरे में।



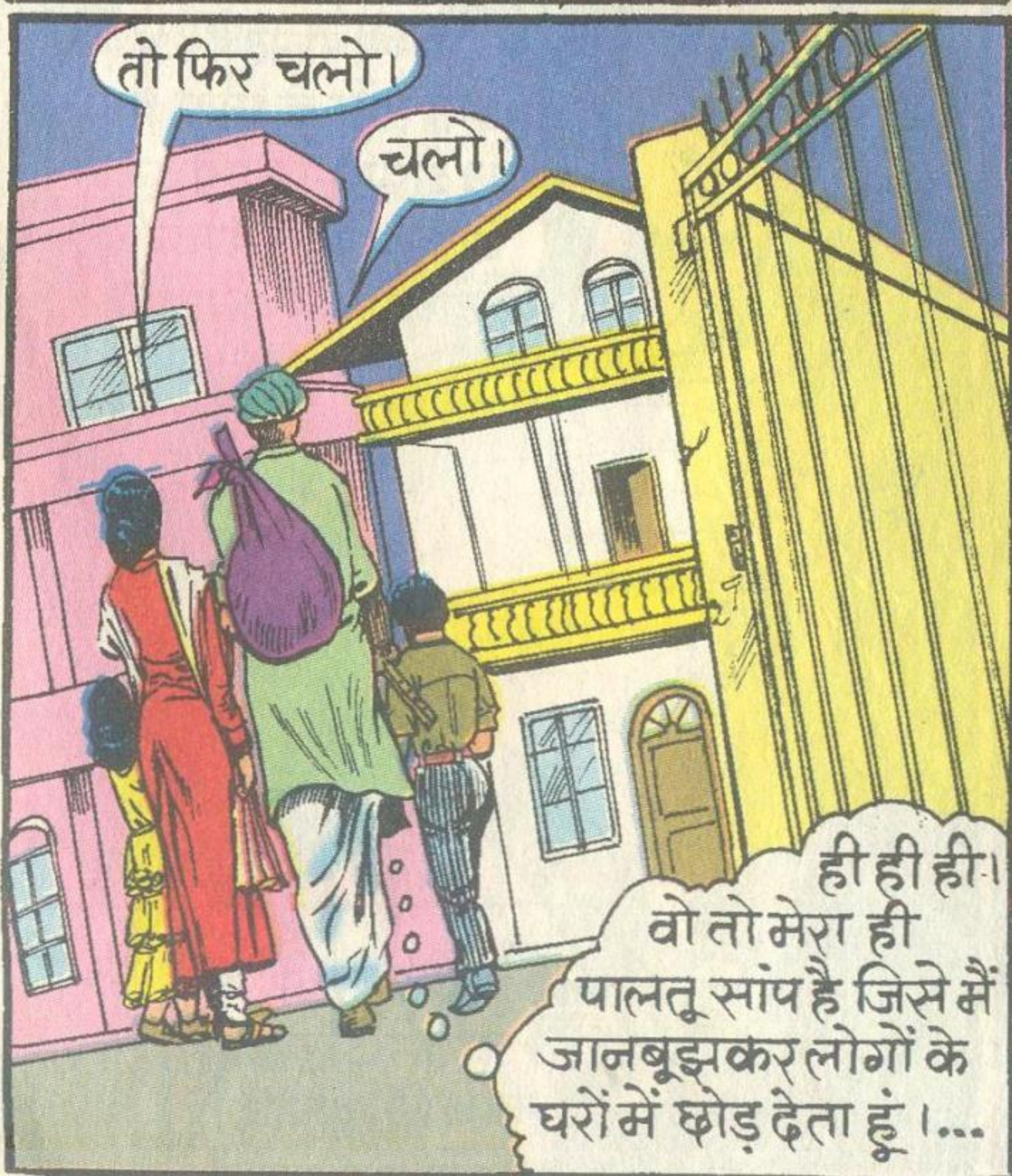
आप घबराइये नहीं आण्टी। मेरे साथ चलिये।



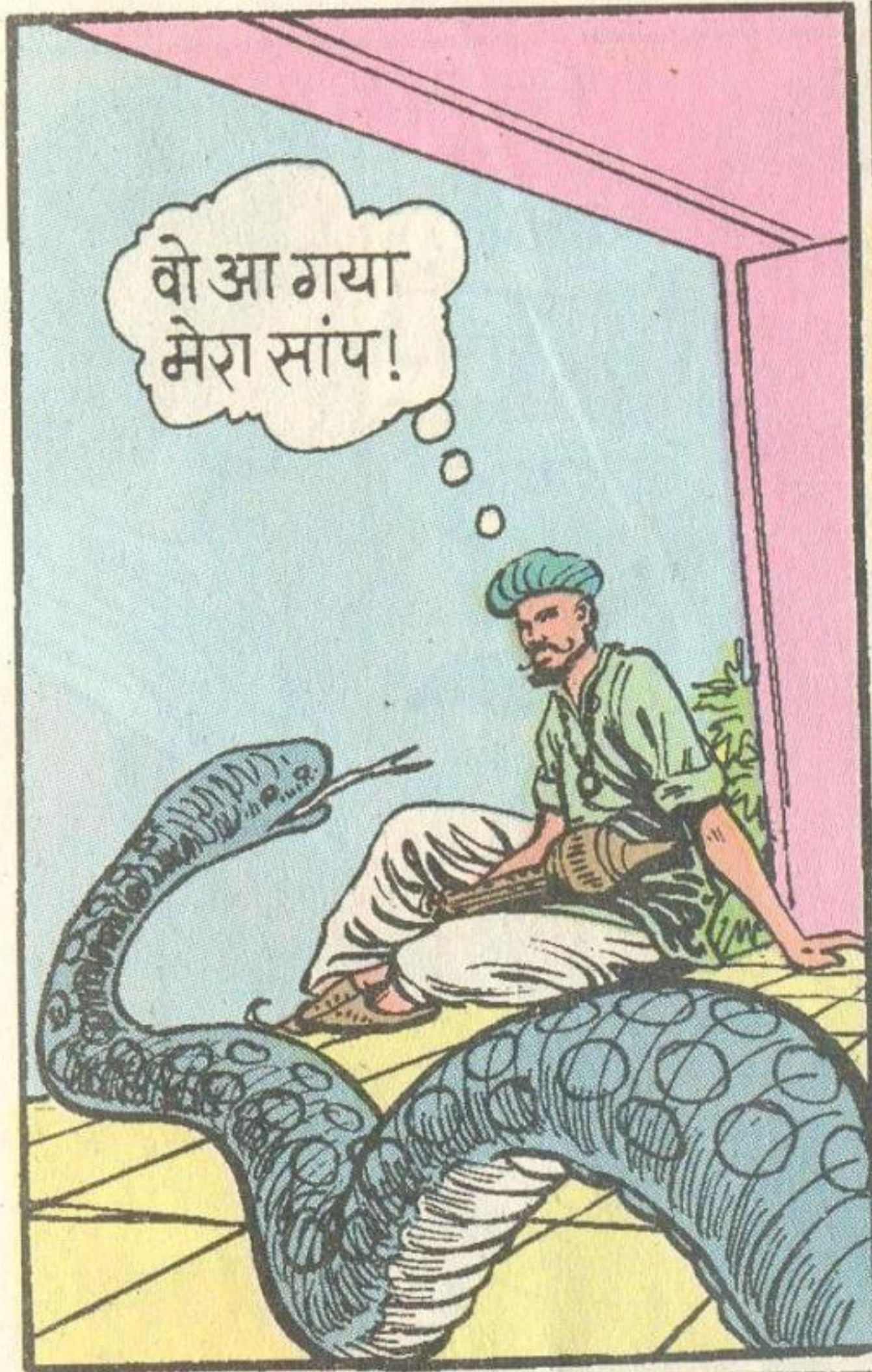














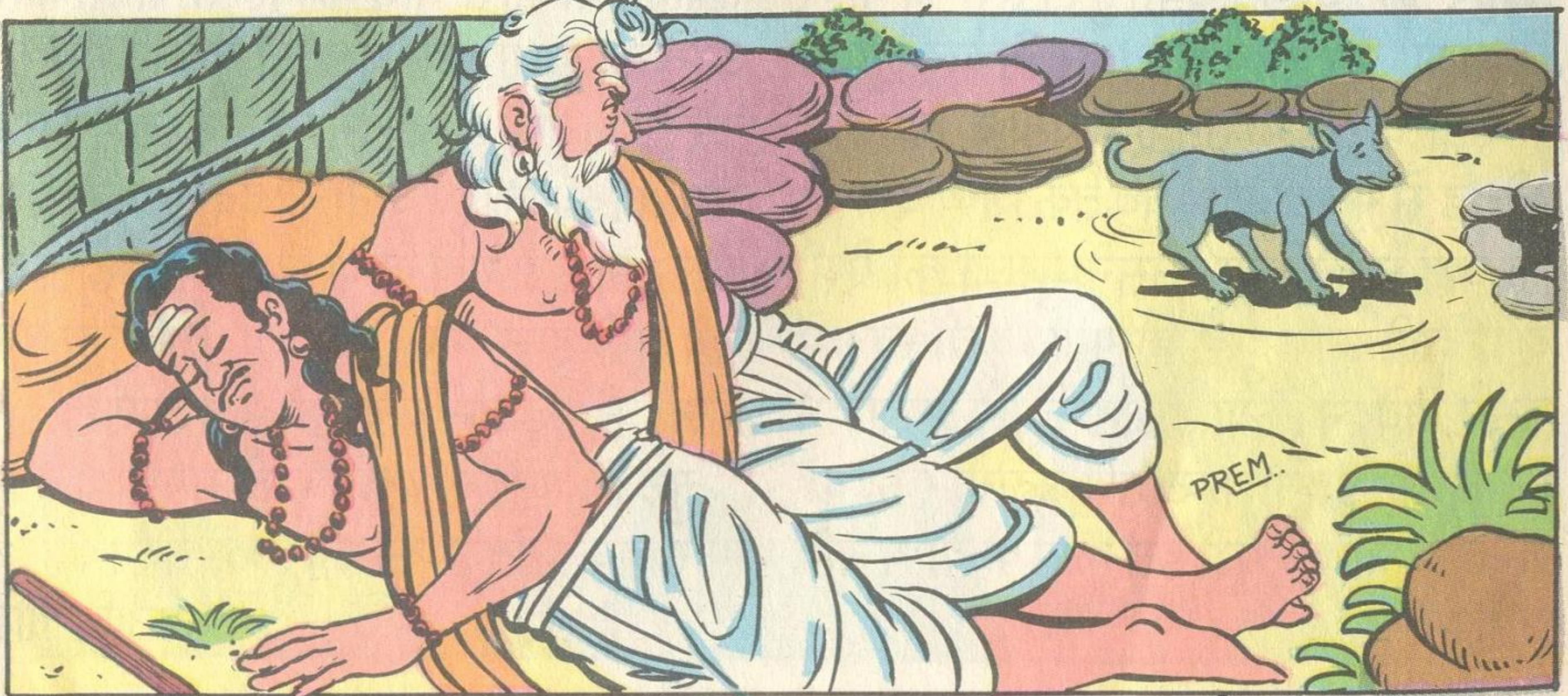


एक बार गुरु शिवानंद और उनका शिष्य दयानंद कहीं जा रहे थे। वे लोग काफी देर से भ्रमण पर निकले हुए थे, इसलिए चलते-चलते अत्यधिक थक चुके थे। उन्हें मार्ग में एक विशाल वटवृक्ष मिला। गुरु शिवानंद ने दयानंद से कहा कि वे लोग इस वृक्ष के नीचे ही थोड़ी देर थकावट दूर करने के लिए रुकते हैं। दयानंद ने गुरुजी के लेटने के लिए एक स्थान साफ कर दिया और स्वयं भी उनसे कुछ दूरी पर एक स्थान साफ करके विश्राम करने लगा।

उनसे थोड़ी दूरी पर एक कुतिया कूंकूँ करती हुई गोल दायरे में चक्कर काट रही थी। वह बड़ी बेचैन दिखाई दे रही थी। कभी वह आकाश की ओर मुंह करके जोर-जोर से रोने लगती तो कभी उस दायरे के भीतर की तरफ

मुंह करके अगले पांव से मिट्टी कुरेदने लगती। दयानंद ने कुतिया के उन कार्यकलापों को देखकर भी अनदेखा कर दिया। लेकिन गुरु शिवानंद उस कुतिया की बेचैनी को अपनी आत्मा की गहराई तक महसूस कर रहे थे। इसलिए उनसे विश्राम नहीं किया जा रहा था। जब यह बेचैनी संभाले नहीं संभली तब उन्होंने दयानंद से कहा, “वत्स, देखो तो वह कुतिया इतनी बेचैन क्यों है?”

दयानंद गुरुजी का आदेश सुनकर तुरंत खड़ा हुआ। वह कुतिया को देखने उसके समीप तक गया और तुरंत ही वापस आ गया। वापस आकर उसने गुरुजी को सूचना दी, “गुरुवर, वहां एक गहरा गड्ढा है। गड्ढे की तली में पानी है और कुतिया का नन्हा पिल्ला उसमें गिरा हुआ है। पिल्ला निकलने की बहुत कोशिश कर रहा है लेकिन वह बाहर निकल







नहीं पा रहा है और कुतिया भी उसे बाहर नहीं निकाल पा रही है, इसलिए वह बेचैन है।”

इतना कहकर दयानंद पुनः अपने स्थान पर लेटकर विश्राम करने लगा। गुरु शिवानंद तुरंत उठे और उस गड्ढे के पास पहुंच गये। एक बार उन्होंने झुक कर जीवन मृत्यु के संघर्ष में लगे पिल्ले को देखा और फिर वे झट से गड्ढे में कूद गये। उन्होंने डूबते हुए पिल्ले को बाहर निकाला और स्वयं भी बाहर निकल आये।

ऐसा करने में उनके कपड़े व हाथ-पैर कीचड़ से गंदे हो गए। तब तक शिष्य दयानंद भी वहां पहुंच गया। उसने गुरुजी की ऐसी दशा देखी और दुखी हो गया। दुखी स्वर में उसने निवेदन किया, “आपने मुझे आज्ञा देने की अपेक्षा इतना कष्ट क्यों उठाया गुरुदेव? लगता है आपने मुझे इस कार्य के योग्य नहीं समझा?”

“देखो पुत्र, कुतिया अपने पिल्ले के लिए कितनी बेचैन थी। उसके भीतर अपने पिल्ले की मर्मन्तक पीड़ा को देखकर जो बेचैनी पैदा हुई थी, वह मर्मन्तक पीड़ा मैंने अपने भीतर महसूस की थी। कुतिया का पिल्ला जो दर्द डूबते वक्त अनुभव कर रहा था, वही दर्द मैंने अपने भीतर अनुभव किया था। इसलिए बेटा, कुतिया द्वारा अपनी संतान को फिर पा लेने तथा पिल्ले द्वारा मौत के मुंह से वापस लौट आने की खुशी तथा सुख भी मुझे ही महसूस करने दो। तुम्हें आज्ञा देने की जरूरत मैंने नहीं समझी। क्योंकि इन दोनों का दर्द तुमने स्वयं के भीतर महसूस नहीं किया। यदि किया होता तो जब तुम्हें इधर भेजा गया था, तभी तुम इस पिल्ले को गड्ढे से बाहर निकाल लाए होते।”

गुरु शिवानंद ने दयानंद को समझाया और फिर अपने गंतव्य की ओर बढ़ गए।

—अनीता गौड





# अनाड़ी

## वीर बालक

लेखक व चित्र: भरत

अनाड़ी, बाहर निकल आ!

ठहरो, मैं इसके मामाजी कर्नल भैया को बुला रही हूँ...

पलंग के नीचे छुप बैठा है!



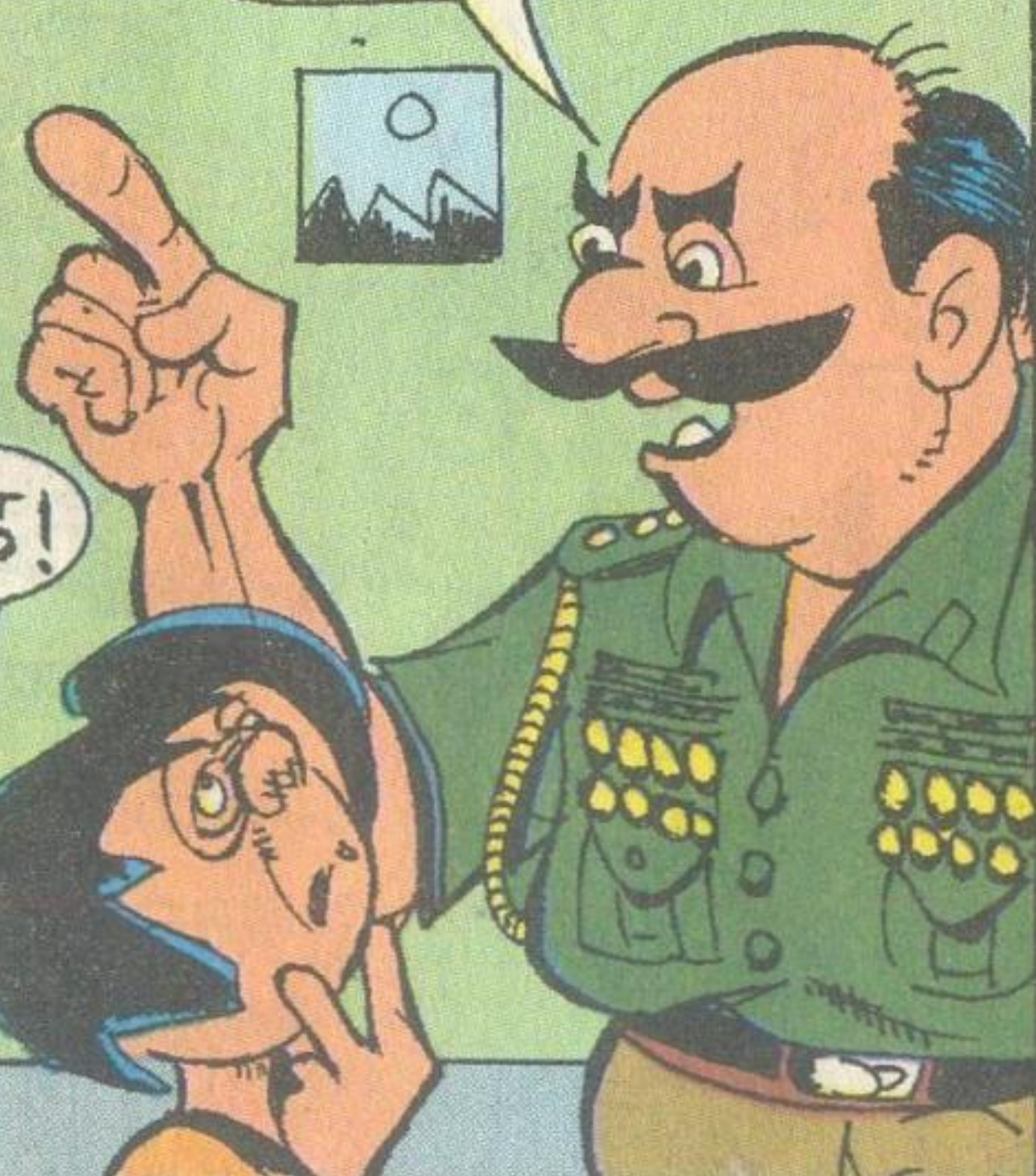
पींsss!



कर्नल मामा दौड़े आये -

अनाड़ी, याद रख। तेरे नानाजी दूसरी जंग में विक्टोरिया क्रॉस जीते थे। मैंने कश्मीर युद्ध में परमवीर चक्र पाया। तुझे हमारे फौजी खून की लाज रखनी है, भांजे!

ओह!



देख बेटे, देश के सारे बच्चे तेरी ही तरफ देख रहे हैं। इनके सामने बहादुरी की एक मिसाल कायम कर वरना इस देश का भविष्य अंध-कारमय हो जायेगा।

बक अप!

















# फैंग ऑफ द मंथ फकीर मोहम्मद घोसी मैम्बर शिप न.-1491

फकीर मोहम्मद ने आगे बढ़ने के लिए धन-दौलत का सहारा नहीं लिया। फकीर मोहम्मद ने आगे बढ़ने के लिए उच्च शिक्षा को अपनी वैशाखियां बनाया, जिनके सहारे आगे बढ़ते हुए उन्होंने बी.ए.द्वितीय वर्ष तक की मंजिल तय की।

फकीर मोहम्मद पढ़ने के साथ-साथ खेल-कूद, स्काउट, निबंध प्रतियोगिता व दूसरी गतिविधियों में भी रचनात्मक रूप में भाग लेते रहे और हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते रहे। महाविद्यालय योजना मंच के अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता में भाग लेकर उन्होंने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय छात्र-संघ द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में पुनः उन्होंने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा दशम में शिक्षा ग्रहण करते हुए उन्होंने विद्यालय स्तर पर स्काउट शिविर के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ स्काउट का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया। स्काउटिंग में प्रदेश के राज्यपाल श्री बलिराम भगत ने फकीर मोहम्मद को सम्मानित किया।

फकीर मोहम्मद को आगे बढ़ने और बचपन की कल्पनाओं को साकार करने में सबसे अधिक सहयोग राज कॉमिक्स से प्राप्त हुआ। समय-समय पर होने वाली राज कॉमिक्स की चित्र प्रतियोगिताओं में भाग लेकर उन्होंने अनेक बार सफलता प्राप्त की। इन प्रतियोगिताओं की सफलता से फकीर मोहम्मद को दूसरे क्षेत्रों में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। सच्ची लगन और मेहनत से आगे बढ़ते हुए वे सफलता की सीढ़ियां चढ़ते चले गए।

राज कॉमिक्स से प्रेरणा पाकर फकीर मोहम्मद पत्रकारिता की ओर भी अग्रसर हुए। स्थानीय पाक्षिक 'धरती और इंसान' से जुड़कर उन्होंने सामाजिक जागरण के लिए अनेक रचनाओं का सर्जन किया। अनेक कविताएं प्रकाशित हुईं। फकीर मोहम्मद ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की सफलताओं के लिए अपने विचारों की मशाल प्रज्वलित की है। जिसकी प्रेरणा की रोशनी में वह तेजी से संघर्ष पथ पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। उनके जीवन का उद्देश्य है:-

खिलाने से फूल खिला करते हैं, जलाने से चिराग जला करते हैं।

समय नहीं किस्मत के भरोसे जीने का, किस्मत के महल भी बनाने से बना करते हैं।

इस माह के फैंग ऑफ द मंथ फकीर मोहम्मद को हम 300/- का पुरस्कार भेज रहे हैं।

नाम: फकीर मोहम्मद घोसी

पिता का नाम: श्री उमरखां घोसी

माता का नाम: श्रीमती खातून बेगम

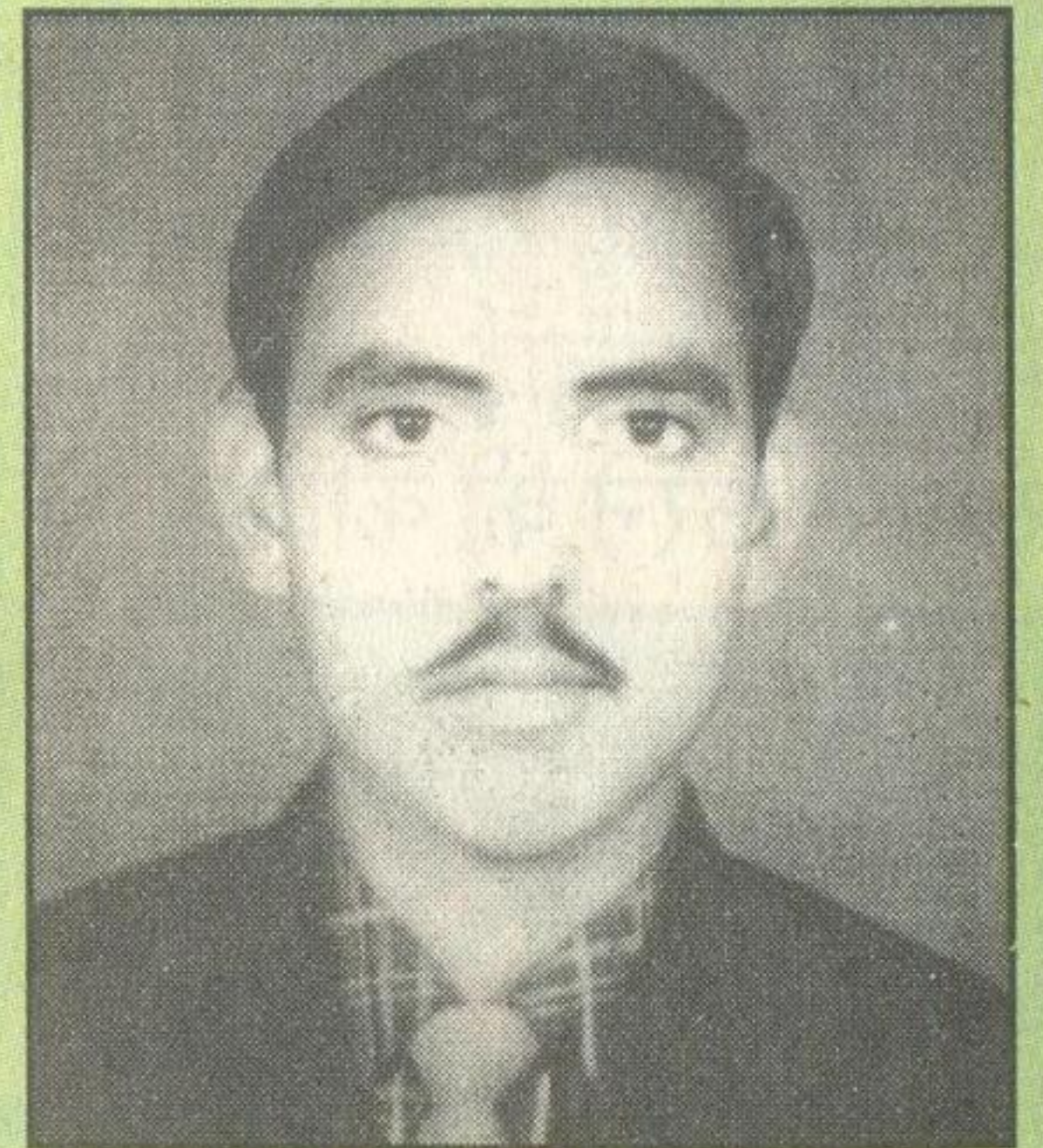
शिक्षा: बी.ए.द्वितीय वर्ष

कॉलेज: श्री पार्श्वनाथ उम्मेद महाविद्यालय, फालना(पाली)

पता: विजयनगर, फालना स्टेशन, जिला-पाली, राज-306116.

महत्वाकांक्षा: गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करवाना।

फैंग ऑफ द मंथ अवार्ड पाने के लिए नागराज फैन क्लब के सदस्य अपना पोस्टकार्ड साइज फोटो (क्लर), मैम्बरशिप नम्बर, अपनी उपलब्धियां व अपने बारे में जानकारीयां जैसे ऊपर दी गई हैं, अपने प्रमाणपत्रों की फोटो कॉपी के साथ हमें भेज सकते हैं। पत्रव्यवहार निम्नलिखित पते पर करें:- नागराज फैन क्लब, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084.



फकीर मोहम्मद घोसी





## मूर्खता की दाढ़ी

पांडूरंग को पढ़ने का बहुत शौक था परन्तु बचपन में वह स्कूल में न पढ़ पाया तो बड़े होने पर उसने एक प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र में जाकर पढ़ना सीखा। पढ़ना सीख कर उसने बहुत सी पुस्तकें पढ़ीं। बड़ा शौक था उसे पुस्तकें पढ़ने का। उसका विश्वास था कि पुस्तकों में लिखी बातें सच ही होती हैं। एक दिन उसने एक पुस्तक में पढ़ा कि दाढ़ी वाले लोग मूर्ख होते हैं। पांडूरंग सोच में पड़ गया। उसने भी दाढ़ी पाल रखी थी। उसे याद आया कि लोग उसे देखकर हंसते हैं। शायद वे मूर्खता की निशानी दाढ़ी देखकर ही हंसते होंगे। यह बात पांडूरंग के दिमाग में आयी। उसने दाढ़ी से छुटकारा पाने का निर्णय ले लिया।

उसके पास कैंची थी नहीं। इसलिए उसने मोमबत्ती जलाई और दाढ़ी को जला कर समाप्त करने की कोशिश करने लगा। मानव



फैंग, अगस्त-1999.16

बाल ज्वलनशील होते हैं। भभके से दाढ़ी में आग लग गई। लपट ने पांडूरंग की मूंछें, भवें और सिर के बालों को भी लपेटे में ले लिया। जब तक पांडूरंग सिर पर कपड़ा ओढ़ आग बुझा पाता उसके सारे बाल जल चुके थे। उसने झपट कर शीशा उठाया अपना ठूठ बना चेहरा देखा जो कार्टून सा लग रहा था। पांडूरंग धीरे से बुदबुदाया, “पुस्तक में ठीक ही लिखा है कि दाढ़ी वाले लोग मूर्ख होते हैं। कैसी मूर्खता कर डाली मैंने।” —भरत

## कान काट पहेली



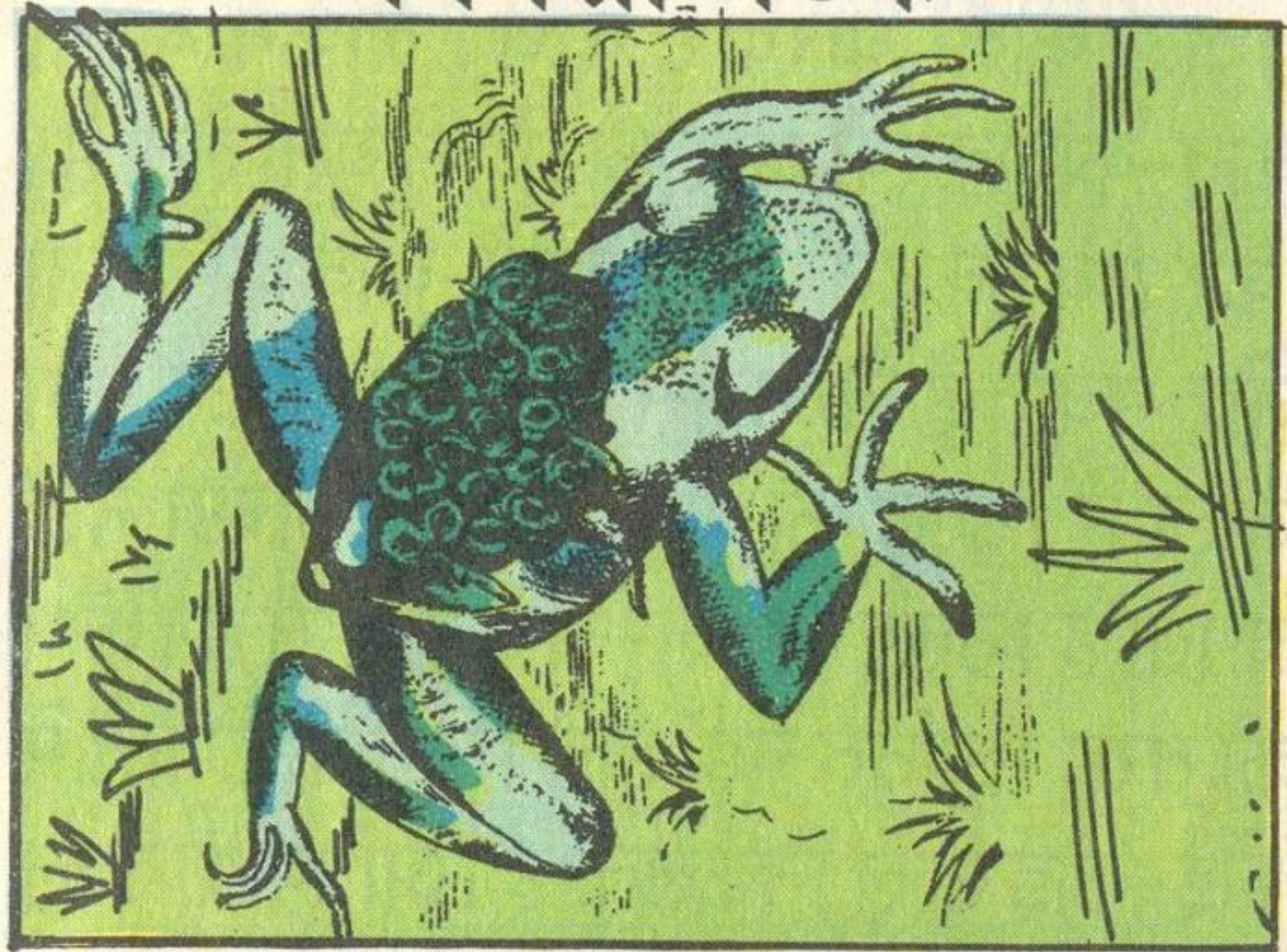
एक जंगल में डाकू कान काट का आतंक था। वह वहां से गुजरने वालों के कान काट लेता था। एक बार वह एक यात्री के कान काटने लगा तो यात्री गिड़गिड़ाया, “मेरे कान मत काटिये। मैं अंधा हो जाऊंगा।” फिर उसे अहसास हुआ कि वह आदमी सच कह रहा था। उसने उसे छोड़ दिया। बताओ कि कान काटने से कोई अंधा कैसे हो जायेगा?

उत्तर: वह अंधा हो जायेगा क्योंकि कान काटने से वह सुनने में असमर्थ हो जायेगा।





## विषैला मेढक



मेढकों को देखते ही बच्चे बहुत खुश होते हैं। कुछ बच्चे मेढकों को पकड़ने की कोशिश करते हैं तो कुछ पत्थर मारकर उन्हें उछलकर भागने को विवश कर देते हैं। अपने देश में पाए जाने वाले मेढक काट तो सकते हैं, लेकिन ये मेढक विषैले नहीं होते। दक्षिण अमेरिका के कोलंबिया में विषैले मेढक होते हैं जिनके काटने पर सांप के काटने की तरह विष के प्रभाव से मृत्यु हो जाती है।

विषैले मेढकों को 'ऐरो पायजन' कहा जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार एक मेढक के विष से 2000 लोग पलक झपकते मृत्यु का शिकार बन सकते हैं। मेढकों को खाने वाले पक्षी और दूसरे जीव भी इनके पास तक नहीं आते हैं। रेड इंडियन आदिवासी जंगली जानवरों से बचने के लिए इन मेढकों का विष अपने तीरों की नोक पर लगा कर शिकार करते हैं। तीर के लगते ही जंगली जानवर कुछ ही पलों में मृत्यु का शिकार बन जाता है।

## डोडो चिड़िया

कितने ही ऐसे जीव-जन्तु जो कभी पृथ्वी पर घूमते, आकाश में उड़ा करते थे। लेकिन समय परिवर्तन के साथ वे जीव-जन्तु लोगों के शिकार बन गए या प्राकृतिक रूप से नष्ट हो गए। अब वह जीव-जन्तु इतिहास बन कर रह गए हैं। पृथ्वी से लुप्त होने वाले पक्षियों में एक डोडो चिड़िया भी है।

डोडो चिड़िया सैकड़ों वर्षों पहले मारीशस द्वीप पर दिखाई देती थी। डोडो चिड़िया मुर्गी के बराबर आकार की होती थी, लेकिन इसकी चोंच बत्तख की तरह होती थी। मुर्गी के आकार की डोडो चिड़िया का वजन 20 कि.ग्रा. होता था। अपने नाम के अनुसार डोडो मूर्ख कही जाती थी। लेकिन डोडो सचमुच मूर्ख नहीं थी। अपने अधिक वजन के कारण डोडो तेजी से नहीं उड़ सकती थी और शत्रु जानवरों का शिकार बन जाती थी।

धीरे-धीरे लोगों ने भी डोडो का शिकार करना शुरू कर दिया और कुछ वर्षों के अंतराल में डोडो चिड़िया की पूरी जाति समाप्त हो गई।

—शशिभूषण शलभ







## उल्लू व कौए की दुश्मनी

उल्लू और कौए की दुश्मनी बहुत पुरानी है। वे एक दूसरे को देखते ही टूट पड़ते हैं। कोई यह नहीं जानता कि इन दोनों की घोर शत्रुता का कारण क्या है? रात को उल्लू पेड़ों पर बैठे कौए पर हमला करता है। दिन को कौए दुबके बैठे उल्लूओं का जीना हराम कर देते हैं।

स्पष्ट है कि रात को उल्लू का और दिन को कौए का पलड़ा भारी रहता है। वैसे उल्लू ताकतवर पक्षी है, बलिष्ठ पंजे व मांस-पेशियां

तथा नुकीली धारदार चोंच। लेकिन कौआ कांव-कांव करके और कौओं को बुला लेता है। फिर सब इकट्ठे होकर कांव-कांव का इतना शोर मचाते हैं कि उससे उल्लू घबरा कर भाग जाता है। उल्लू को शोर बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। उल्लू अकेले-अकेले रहते हैं। कौए की तरह संगठित नहीं होते। दिन के उजाले में कोई-कोई उल्लू निकलता है। अधिकांश उल्लू पेड़ों की कोटर व खण्डहरों में छिपे रहते हैं।

—भरत



## ही ही ही

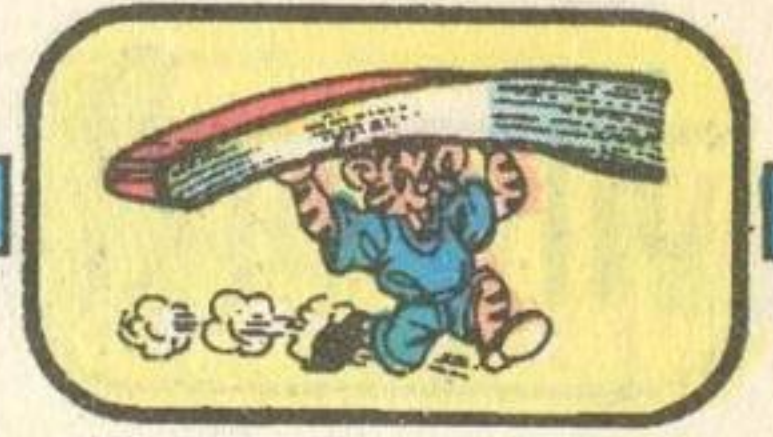
एक दुकानदार भिखारी से बोला: क्यों रोज रोज काम के समय आ जाते हो? भिखारी बोल: फिर महीना क्यों नहीं बांध देते?

एक व्यक्ति सड़क पर एक वाहन से टकरा गया। लोग इकट्ठे हो गए। वह चिल्लाया, “मुझे बचा लो, जल्दी से कोई एम्बुलेंस बुलाओ।” यह सुनकर एक राहगीर बोला: तुम एम्बुलेंस के ही नीचे पड़े हो।

प्रिंसिपल: महोदय आप भी कैसे अध्यापक हैं गंगा नदी पटियाला से नहीं गंगोत्री से निकलती है।

अध्यापक: प्रिंसिपल साहब, गंगा नदी पटियाला से निकलती है और तब तक निकलती रहेगी जब तक मुझे मेरी पिछले सात महीने की तनख्वाह नहीं मिल जाती।





## चोर की सीख

एक फकीर ने लोगों को उपदेश देते हुए कहा, “मैंने हर व्यक्ति से कुछ न कुछ सीखा है।”

एक व्यक्ति ने पूछ लिया, “आपने चोर से क्या सीखा है? क्या चोर से भी कुछ सीखा जा सकता है?”

फकीर बोला, “एक बार मैं चोर के घर ठहरा था। रात के समय चोर चोरी करने जाता था। जब वह वापस लौटता, तब मैं उससे पूछता, “कुछ मिला?” वह बोलता, “कुछ नहीं मिला, आज खाली हाथ लौटा हूँ। कल मिल जाएगा।”

मैंने दूसरे दिन भी पूछा, चोर ने वही जवाब दिया।

तीसरे दिन पूछने पर भी उसने कहा, “आज कुछ नहीं मिला, खाली हाथ लौटा हूँ। कल कुछ मिल जाएगा।”

इस प्रकार पूरा एक महीना बीत गया। एक महीने तक चोर को कुछ नहीं मिला। मैंने सोचा, “चोर रोज चोरी करने जाता है। सात-आठ घंटे बिताता है और अपनी नींद का मीठा समय खोता है। लेकिन चोरी में उसे कुछ नहीं मिलता।”

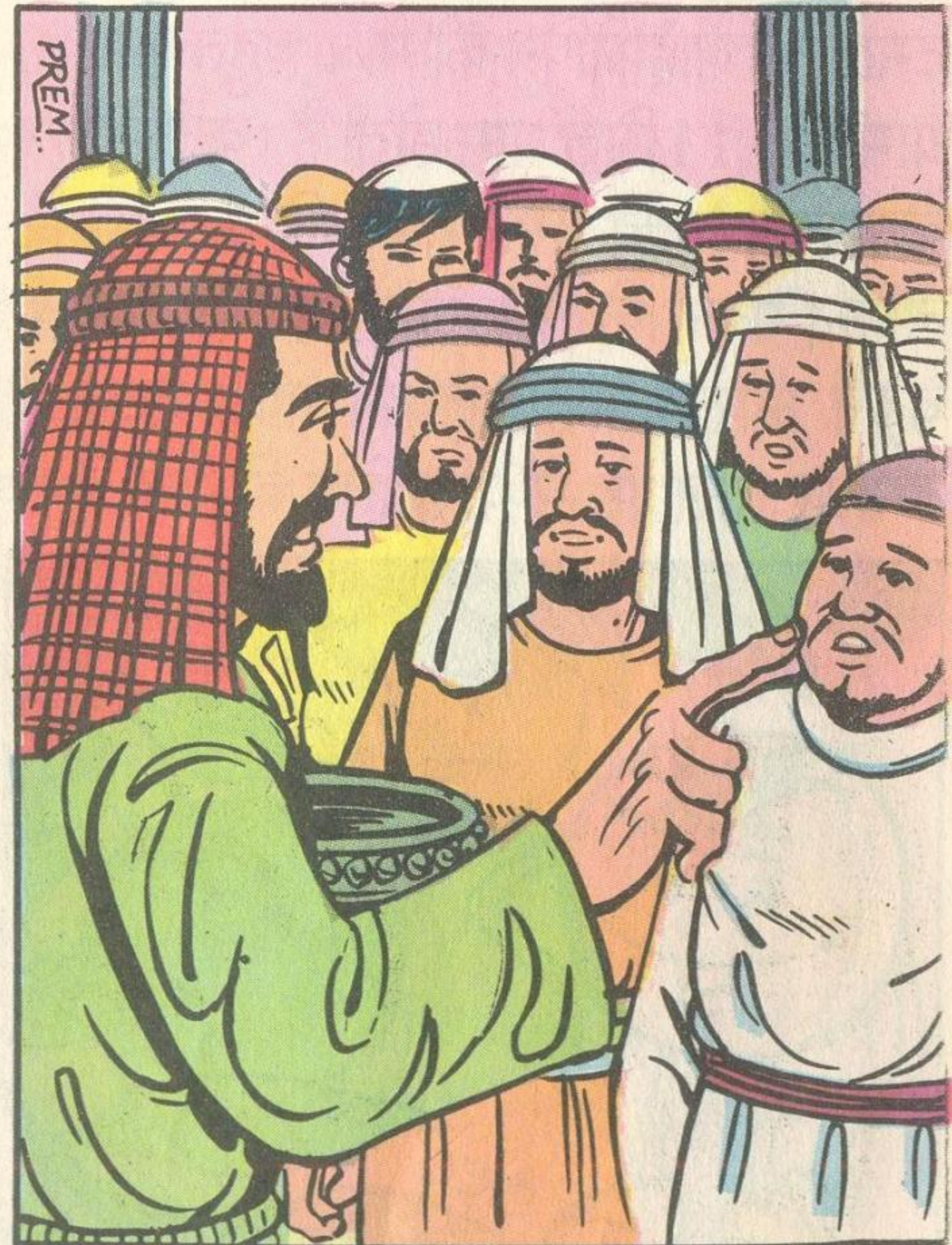
पूरा एक महीना होने पर भी उसमें निराशा का भाव नहीं आया। वह सदैव यही कहता

रहा, “आज नहीं तो कल अवश्य मिलेगा।”

मैंने सोचा चोर में इतना धैर्य है कि वह खाली हाथ लौटने पर भी निराश नहीं हुआ तब मैं ही भक्ति के मार्ग को कठिन समझ कर खाली हाथ क्यों लौटूँ? अच्छा काम करते हुए निराश क्यों हो जाऊँ।”

अतः चोर से मैंने यह सीखा कि जब वह बुरे काम में भी इतना धीरज रखकर लगा हुआ है तब भगवान की राह में चलते हुए मुझे भी धीरज रखना चाहिए।

—अनीता गौड़

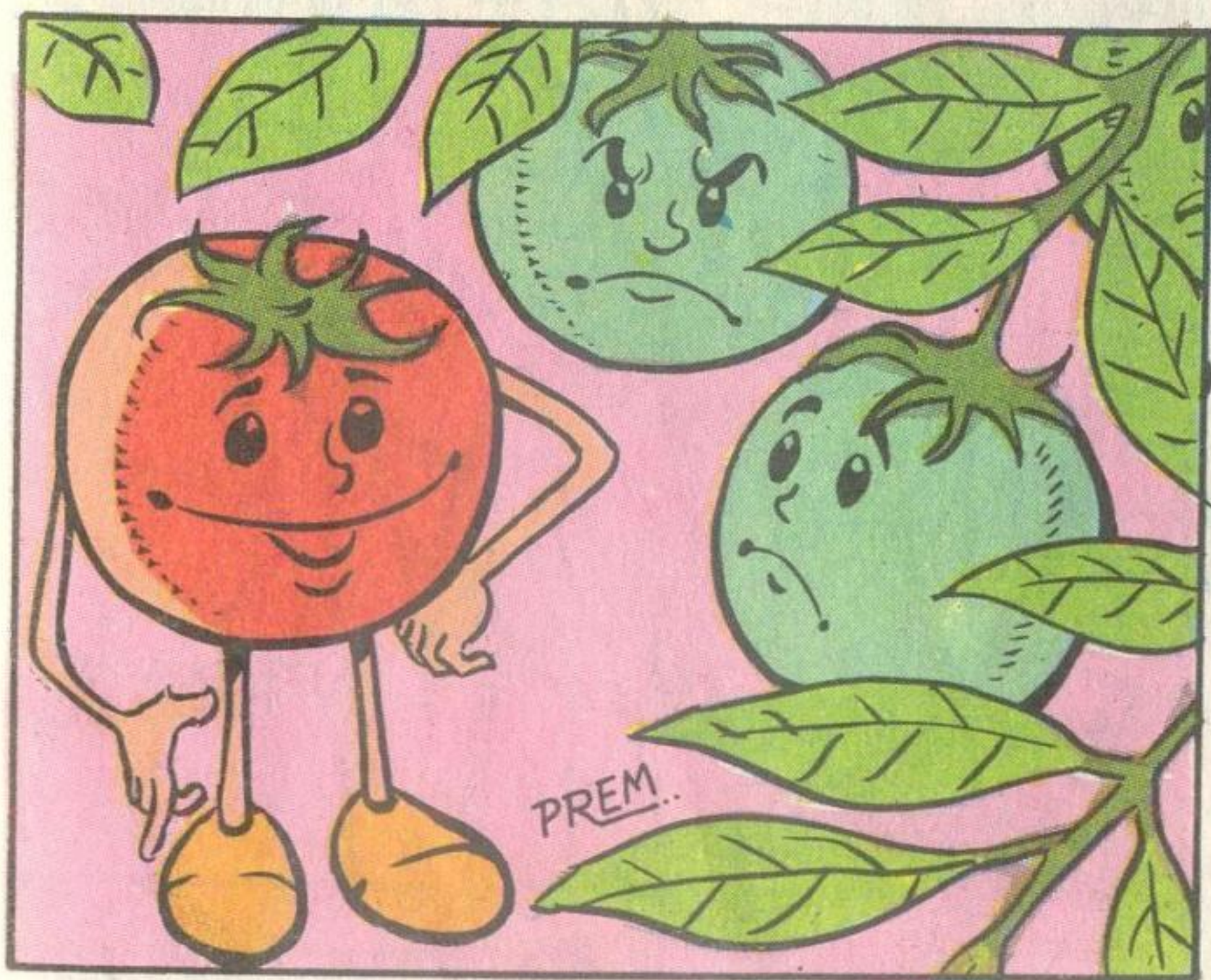






## हरा टमाटर पकने पर लाल क्यों हो जाता है?

बच्चो, तुमने खेत में उगे हुए टमाटरों को देखा होगा। उस समय हरे-हरे पत्तों के बीच लगे टमाटर का रंग भी हरा होता है, लेकिन जब टमाटर पकता है तो उसका रंग लाल हो जाता है। तुमने कभी सोचा है ऐसा क्यों होता है? टमाटर में क्लोरोफिल और लाइकोपिन नामक तत्व होते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार 100 ग्राम कच्चे टमाटर में लगभग 300 मिलीग्राम क्लोरोफिल होता है। उस समय टमाटर में लाइकोपिन की मात्रा बहुत कम 10 ग्राम में 0.11 मिलीग्राम होती है। क्लोरोफिल के कारण कच्चे टमाटर हरे दिखाई देते हैं, लेकिन पकने के साथ लाइकोपिन की मात्रा बढ़ने और क्लोरोफिल की मात्रा घटने से टमाटर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं।



## बुलैट प्रूफ जैकेट पर गोली का असर क्यों नहीं होता?

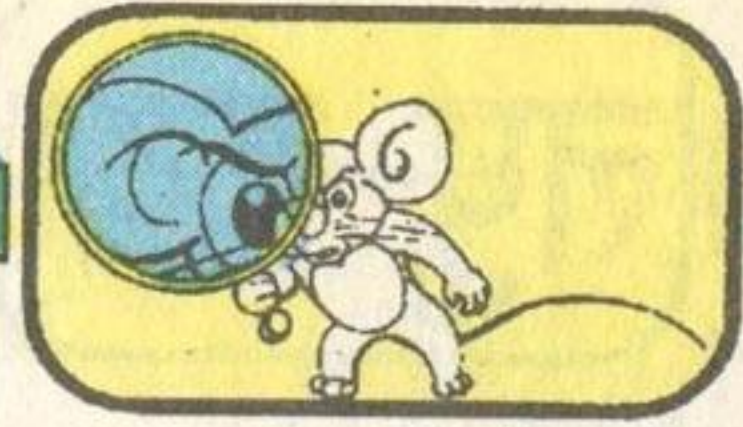
बुलैट प्रूफ जैकेट 'केवलार' प्लास्टिक तन्तुओं से बनाई जाती है। केवलार प्लास्टिक अपने क्रिस्टलीय गुणों के कारण स्टील धातु से पांच गुणा अधिक कठोर होता है। बुलैट प्रूफ जैकेट बनाने के लिए केवलार प्लास्टिक की बारीक परतें इस्तेमाल की जाती हैं। इन परतों की मोटाई एक मिलीमीटर से भी कम होती है। ऐसी आठ परतों से मिलकर बनी जैकेट 0.38 की रिवॉल्वर से चलाई गई गोली को रोक लेती है।

गोली की शक्ति के अनुसार बुलैट प्रूफ जैकेट अधिक परतों से बनाई जाती है। गोली जब जैकेट पर लगती है तो गोली की ऊर्जा (उष्णता) जैकेट की विभिन्न परतों में अवशोषित होकर फैल जाती है और ऐसी स्थिति में गोली जैकेट को भेद नहीं पाती। लेकिन जैकेट पहने व्यक्ति को हल्का सा झटका अवश्य लगता है।

★ केवलार: कठोर क्रिस्टलीय प्लास्टिक का व्यवसायिक नाम।

—शशिभूषण शलभ





## जनगणना क्यों की जाती है?

जनगणना की परिपाटी उतनी ही पुरानी है जितना सरकारों या राजाओं द्वारा लगान वसूल करना और सेनायें खड़ी करना। राजाओं का मुख्य उद्देश्य यही अनुमान लगाना होता था कि वह कितना लगान वसूल कर सकता है या युद्ध के लिए उसे कितने सैनिक मिल सकते हैं।

जनगणना में नाम, परिवार के सदस्यों की संख्या, उनकी आयु, उनका काम व आय आदि के बारे में पूछा जाता है। फिर पूरे आंकड़े इकट्ठे करने पर सरकार को पता लगता है कि देश में कितने लोग हैं, किस आयु के कितने हैं। कितने बेकार हैं, कितने गरीब व कितने अमीर हैं, कितनी स्त्री हैं और कितने पुरुष हैं, किस क्षेत्र में कितनी आबादी है? कहां कितने राशन की व्यवस्था करनी है आदि।

इसी से सरकार जान जाती है कि कहां क्या योजना बनानी है, क्या-क्या टैक्स लगाये जा सकते हैं, कितने चुनाव क्षेत्र होने चाहिये। कहां कितने स्कूल, कॉलिज व हॉस्पिटल होने चाहिये।

—भरत



## छिपकली नमक के बरतन में अंडे देती है

सभी जीव-जन्तु किसी सुरक्षित स्थान पर अपने बच्चों को जन्म देते हैं, ताकि उनके बच्चे शत्रुओं से सुरक्षित रहें। बया पक्षी अपना घोंसला उल्टा बनाता है। कई दिन बारिश होती रहे, लेकिन उसके घोंसले में एक बूंद भी पानी नहीं जाता। मादा मगरमच्छ नदी से निकल कर सुरक्षित स्थान पर जाकर गहरा गड्ढा खोदकर उसमें अंडे रखकर उसे मिट्टी से ढक देती है।

छिपकली अंडे देने के लिए घरों में नमक के बरतन को ढूंढ़ती है। जब उसे घर में किसी डिब्बे या बरतन में नमक मिल जाता है तो चुपके से उसमें अंडे दे देती है। छिपकली के अंडे काफी छोटे व सफेद रंग के होते हैं, इसलिए नमक में सरलता से उनका पता नहीं चलता। अंडे फूटने पर बच्चे छिपकली की तरह रेंग कर स्वयं नमक के बरतन से निकलकर दीवार पर पहुंच जाते हैं। अंधेरे में छिपे बच्चे नन्हे-नन्हे मच्छरों, मक्खियों का शिकार करने लगते हैं।

नमक के बरतन में छिपकली द्वारा अंडे देने से कभी दुर्घटना भी हो सकती है। इसलिए घरों में नमक के डिब्बे को अच्छी तरह बंद करके रखना आवश्यक है।

—शशिभूषण शलभ  
फैंग, अगस्त-1999.21





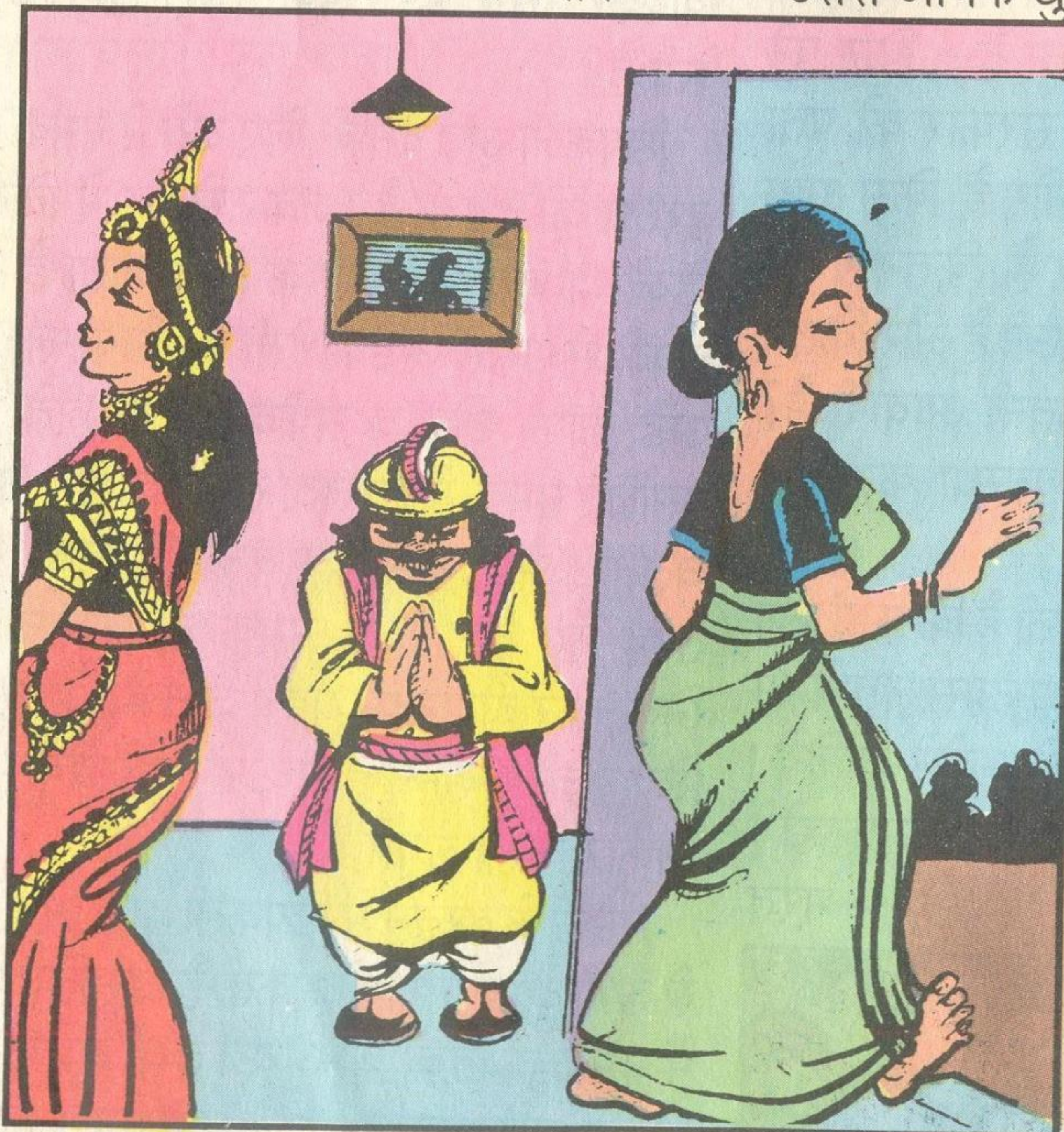
## कौन अधिक सुंदर

एक बार धन की देवी लक्ष्मी तथा निर्धनता की देवी ज्येष्ठा में बहस छिड़ गई कि दोनों में से कौन अधिक सुंदर है। बहस द्वारा वह किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रही थीं। दोनों कुबेर देवता के पास पहुंचीं और फैसला करने के लिए कहा। कुबेर दोनों में से किसी को भी नाराज नहीं करना चाहते थे। कुछ सोच कर वे बोले, “आप दोनों महल में से बाहर प्रस्थान कर कुछ दूर जाकर फिर लौट कर महल में प्रवेश करें तो मैं निर्णय कर पाऊंगा।”

दोनों ने ऐसा ही किया। कुबेर देवता मुस्करा कर बोले, “हे देवियो, जब आप दोनों महल से बाहर जा रही थीं, तो ज्येष्ठा देवी अधिक सुंदर लग रही थी। परन्तु जब आप दोनों लौटकर महल में प्रवेश कर रही थीं तो लक्ष्मी देवी की सुंदरता का मुकाबला नहीं था।”

दोनों संतुष्ट होकर चली गईं। सचमुच जब गरीबी किसी घर से जाती है तो कितना अच्छा लगता है और जब लक्ष्मी घर में आती है तो उससे अधिक खुशी की बात और क्या होगी?

—भरत



ॐ ज्ञानरश्मि ॐ

सफलता प्राप्त करने के लिए जबरदस्त सतत प्रयत्न और जबरदस्त इच्छा रखो। प्रयत्नशील व्यक्ति कहता है, “मैं समुद्र पी जाऊंगा, मेरी इच्छा से पर्वत के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।” इस प्रकार की शक्ति और इच्छा रखो। कड़ा परिश्रम करो, तुम अपने उद्देश्य को निश्चित पा जाओगे। यह एक बड़ी सच्चाई है। शक्ति ही जीवन और कमजोरी ही मृत्यु है। शक्ति परमसुख है। अजर, अमर जीवन है। कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है। कमजोरी ही मृत्यु है।

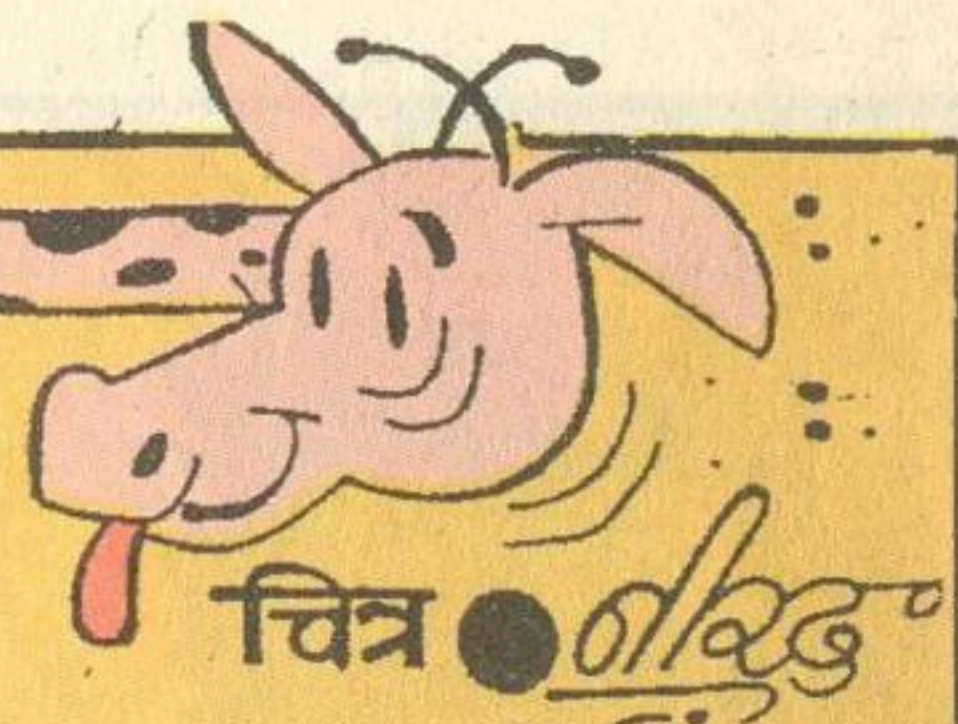
—स्वामी विवेकानंद





# जंबो

## 15 अगस्त

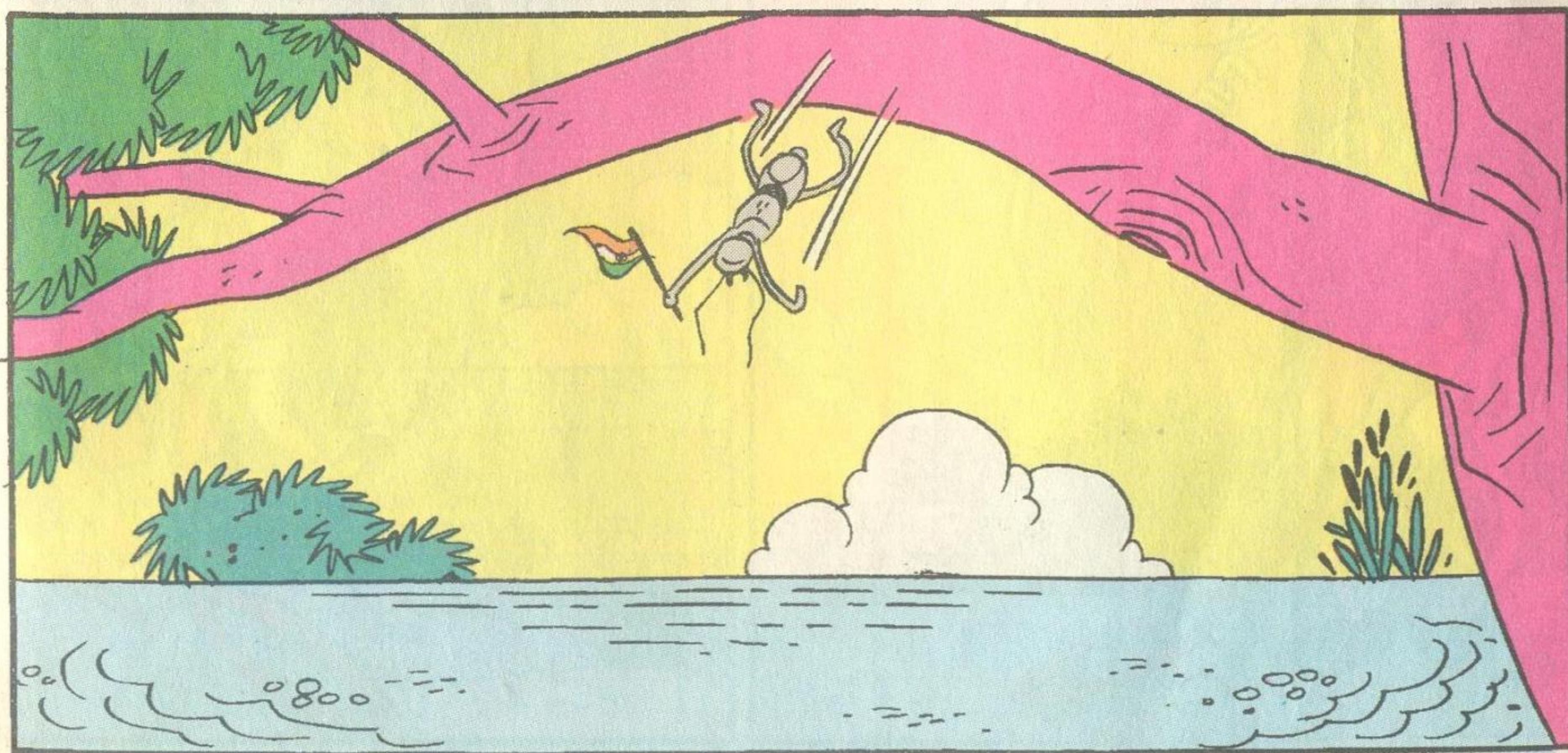
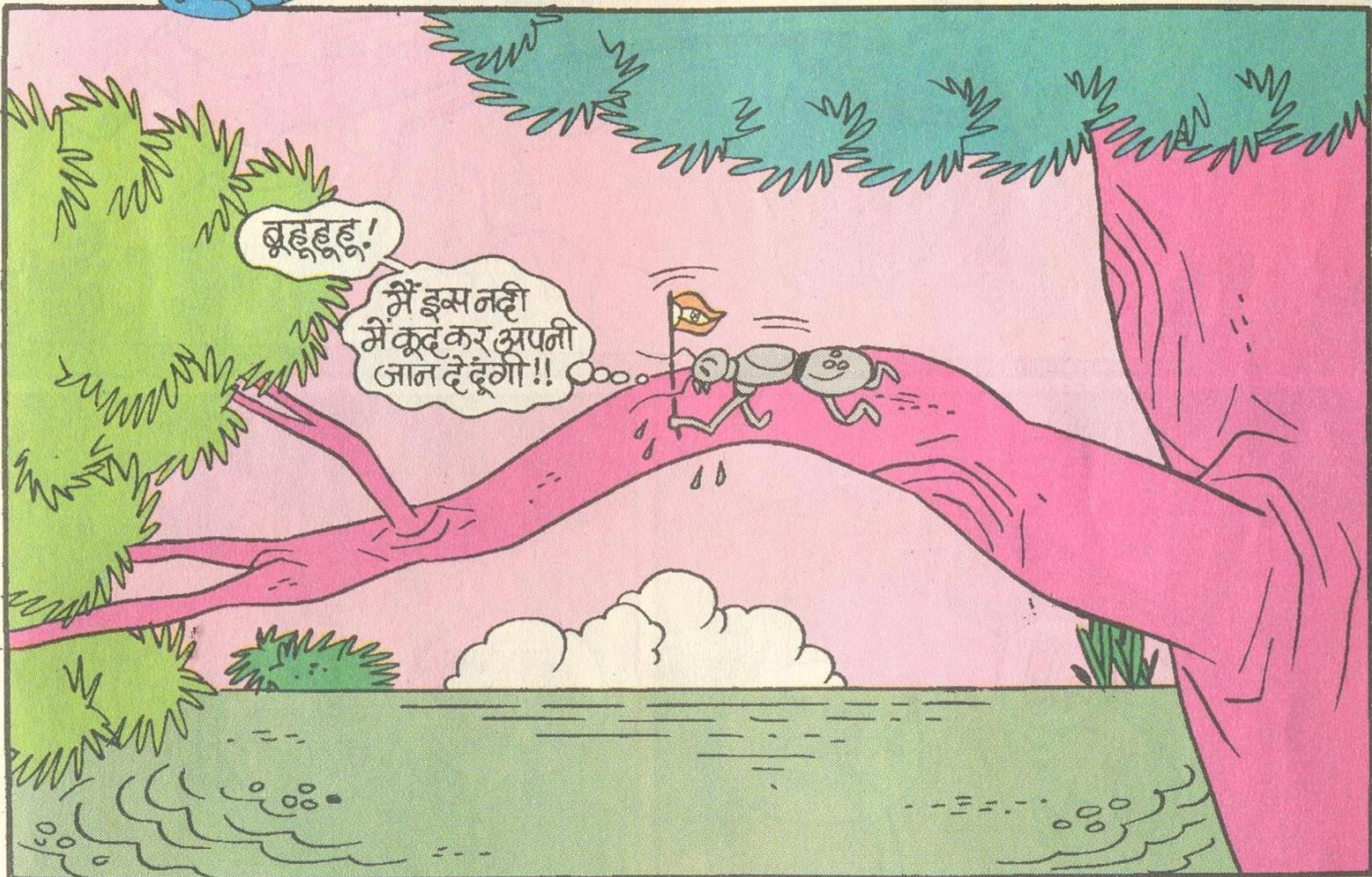


चित्र ● *गिरि*

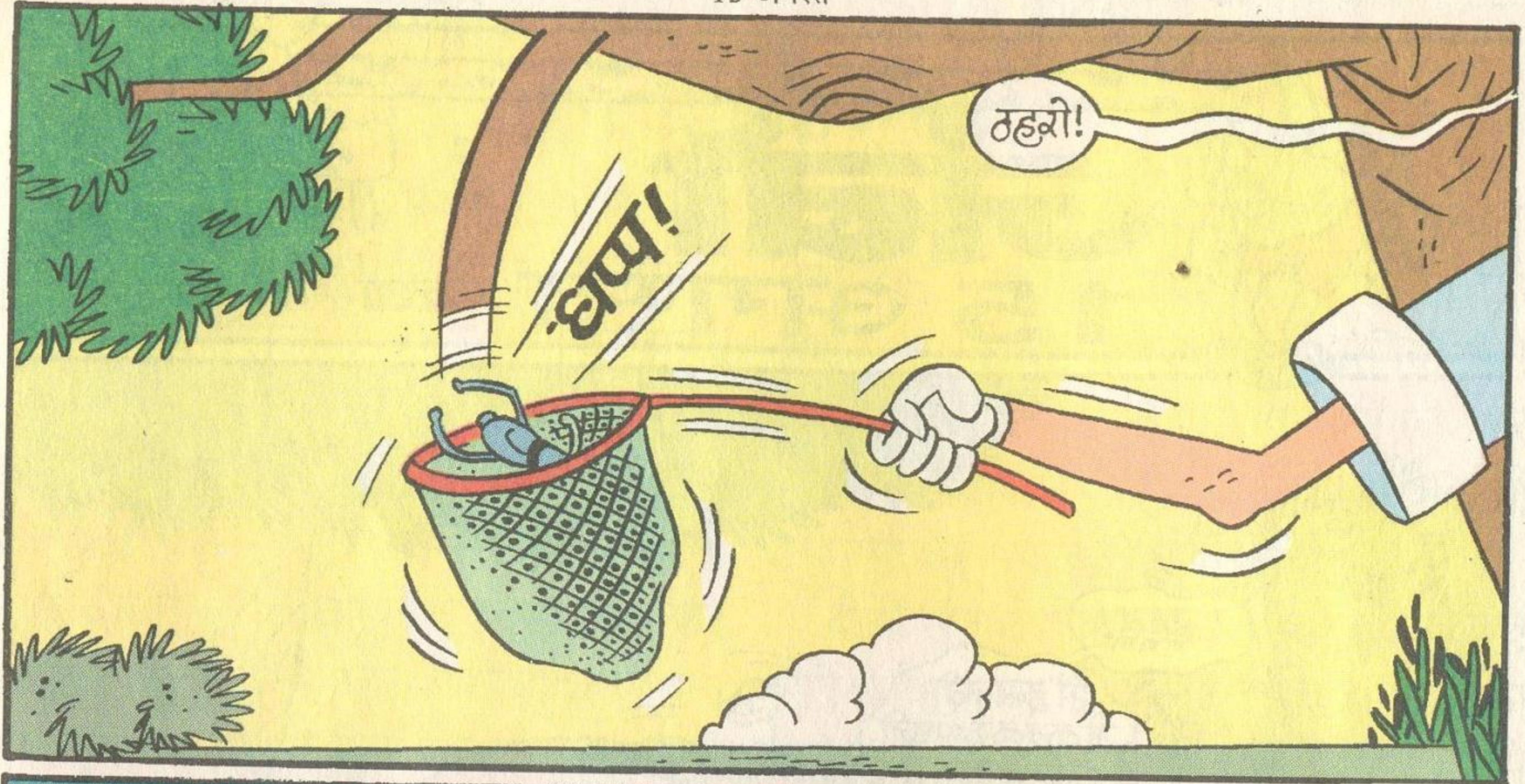
कथा • तरुण कुमार राही

बूढ़बूढ़!

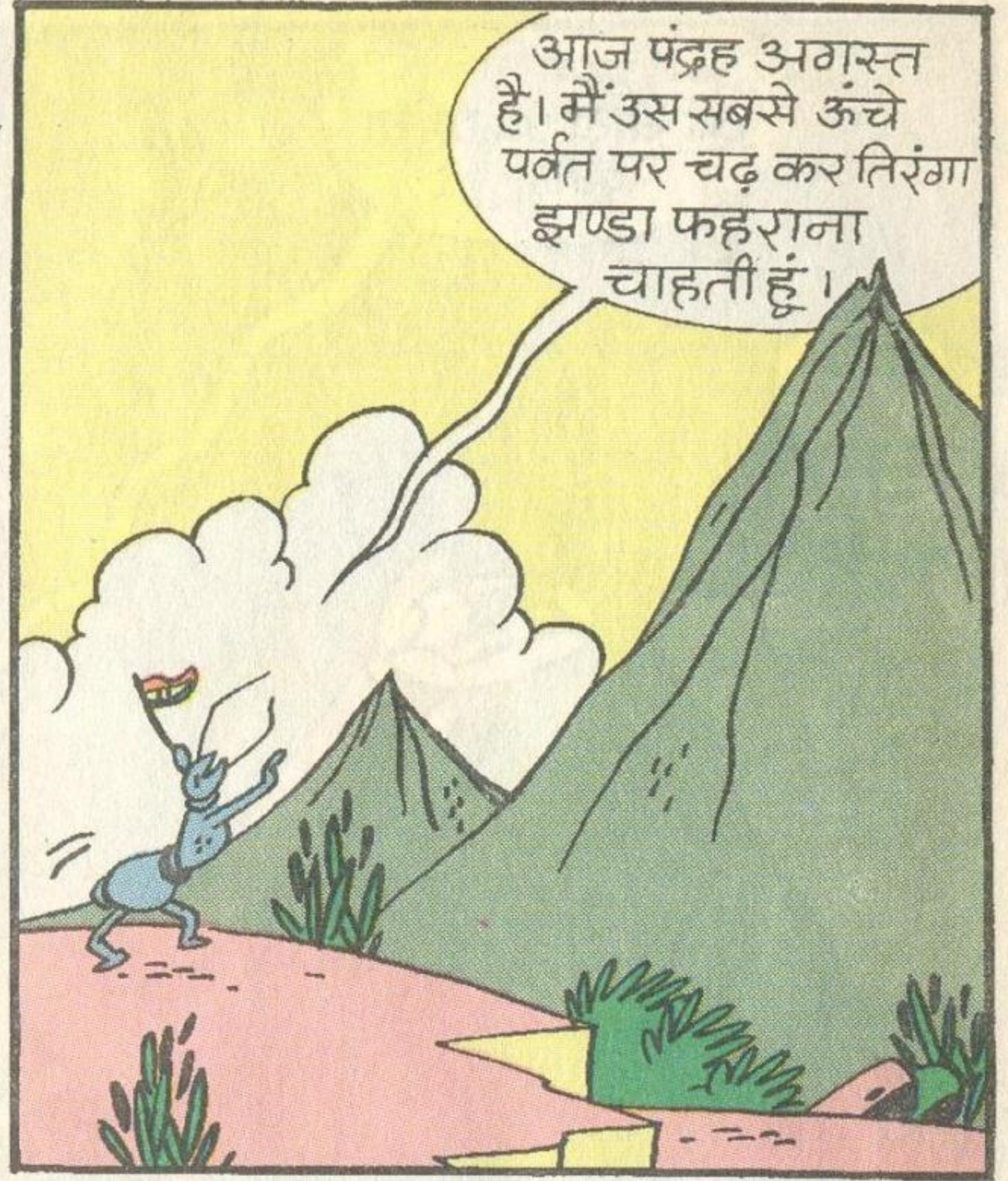
मैं इस नदी  
में कूद कर अपनी  
जान दे दूँगी!!



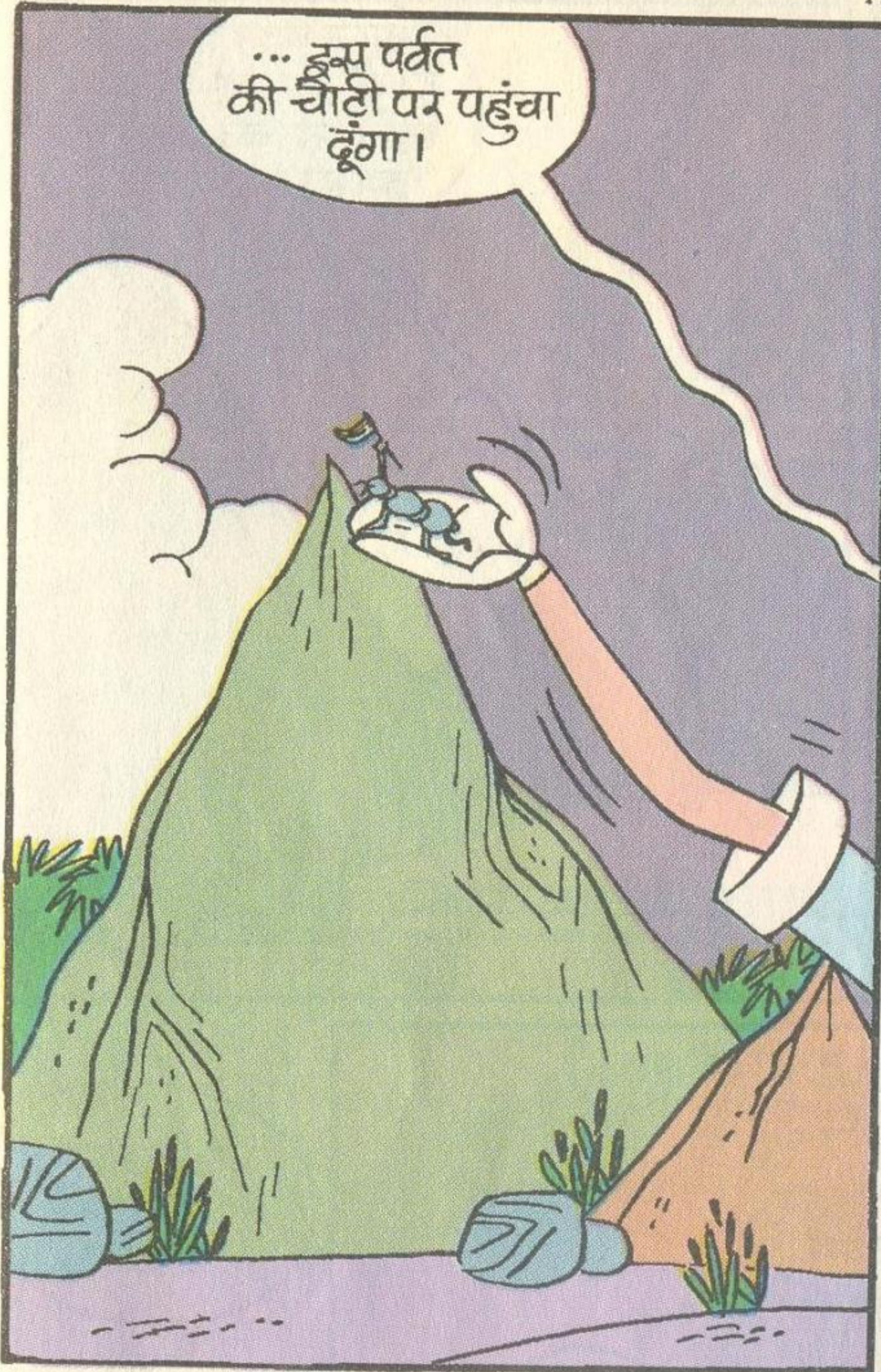
















प्रतियोगिता

# गा मेरे मन गा

बच्चो! आओ गाते हैं कोई गीत, लेकिन जब आपको पता ही नहीं कि वो गीत कौन सा है, जिसे आपको गाना है। चलो करते हैं थोड़ी देर के लिए दिमागी कसरत। निम्न चित्र एक फिल्मी गीत के मुखड़े के बोल पर आधारित है। चित्र को ध्यान से देखें और गाना बूझकर अपना हल एक कागज पर लिखकर हमें भेज दें।

## फैंग-17 की प्रतियोगिता के हल

### गा मेरे मन गा प्रतियोगिता

सही हल: किसी डिस्को में जाएं किसी होटल में खाएं...  
विजेताओं के नाम: देवेन्द्र कुमार, रांची। अनन्त चन्दोला, गढ़वाल। मानस निगम, रामपुर। इमरान खान, भोपाल। सौम्या सचदेव, नई दिल्ली।

### रंगीली प्रतियोगिता

सही हल: हरा, काला, पीला, नीला, गुलाबी, जामुनी, फिरोजी  
विजेताओं के नाम: भूपेन्द्र सिंह प्रजापति, विदिशा। नवीन कुमार, रेवाड़ी। आंधी दूबे, दयालचौक। अमित सिंह, आगरा। कंवलजीत सिंह, मेरठ।

### फैंग जीव वर्ग पहेली

सही हल: बीवर, शतुरमुर्ग, तुआतारा, ताकिना, कोबरा, बकरा, जिराफ।

विजेताओं के नाम: नीलम कुमार, कानपुर। राजीव कुमार रंजन, गिरीडीह। संदीप कुमार गुप्ता, फैजाबाद। सुधौ उपाध्याय, भोपाल। आकांक्षा सिंह, सोनभद्र।

### बैंग कू जैप फू प्रतियोगिता

सही हल: जैंग बौंग बो कां कू  
विजेताओं के नाम: मुंशीराम, कुरुक्षेत्र। श्वेता गुप्ता, हरिद्वार। तरनदीप सिंह, पटियाला। पंकज सिंघई, मण्डला। मीना, दिल्ली।

### नागराज प्रतियोगिता

सही हल: ट्यूब झूमर में है।  
विजेताओं के नाम: प्रशांत टोलीराम काबले, गोंदिया। सुनीत रंजन सिंह, इलाहाबाद। अमित मूंदड़ा, विदिशा। अमित थोलम्विया, कोटा। सुरेन्द्र सिंह, नई दिल्ली।



**नियम :** उपरोक्त चित्र देखकर मस्तिष्क में जो गीत उभरता है, वह हमें एक कागज पर लिखकर डाक द्वारा 20 सितम्बर 1999 तक भेज दें। पांच विजेताओं को भेजा जाएगा 100/- तक का एक गिफ्ट पैक। प्रतियोगिता का हल फैंग नं. 23 में छपा जाएगा।

**प्रतियोगिता का पता :** गा मेरे मन गा प्रतियोगिता, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

**विशेष :** आप फैंग-20 की सभी प्रतियोगिताओं के हल एक ही लिफाफे में भी भेज सकते हैं, लेकिन सभी प्रतियोगिताओं के हल अलग-अलग कागज पर लिखे होने चाहिए व सभी हलों के नीचे आपका नाम व पता साफ-साफ लिखा होना चाहिए। लिफाफे पर किसी भी एक प्रतियोगिता का पता लिख सकते हैं।

फैंग, अगस्त-1999.27

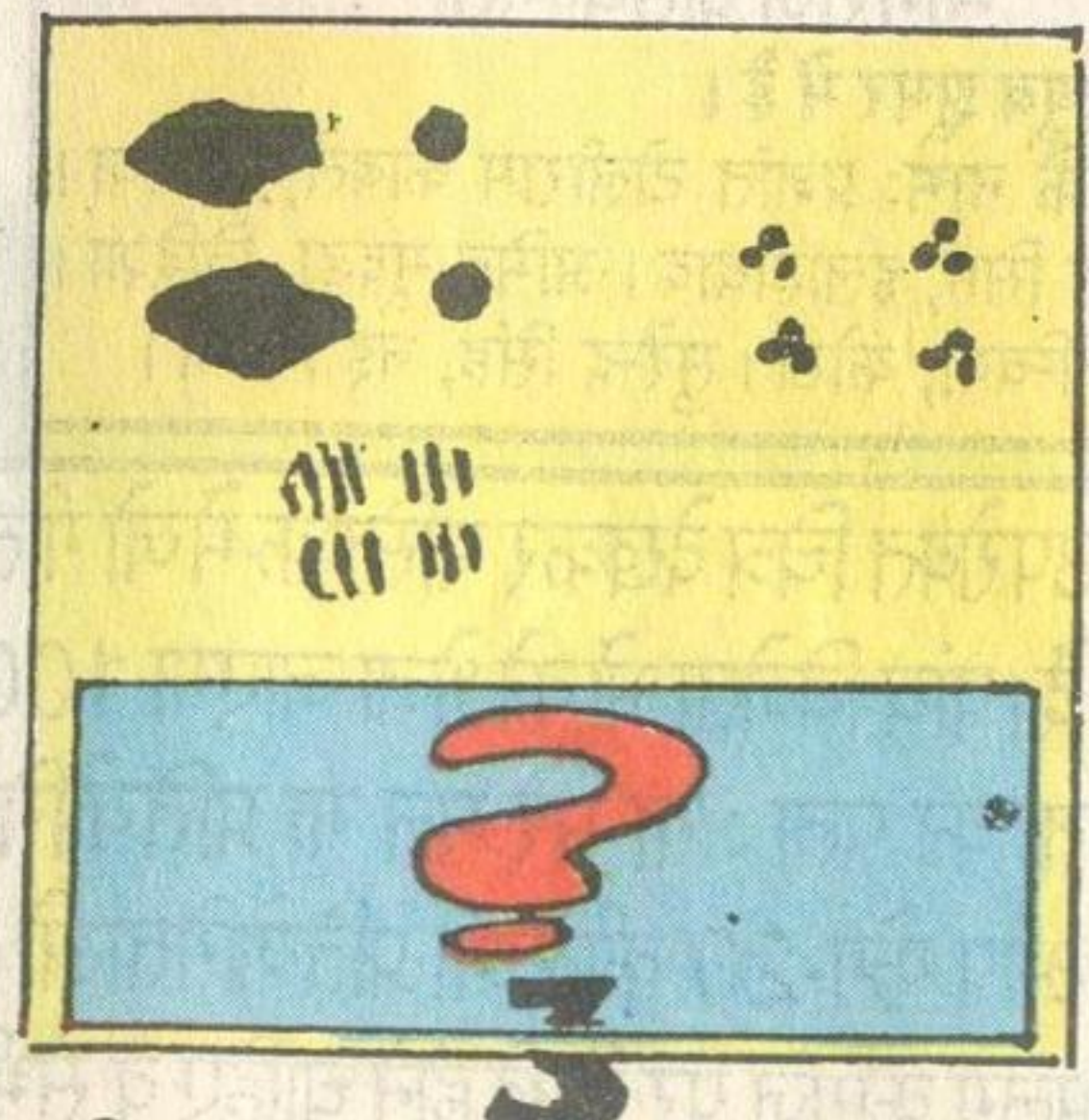
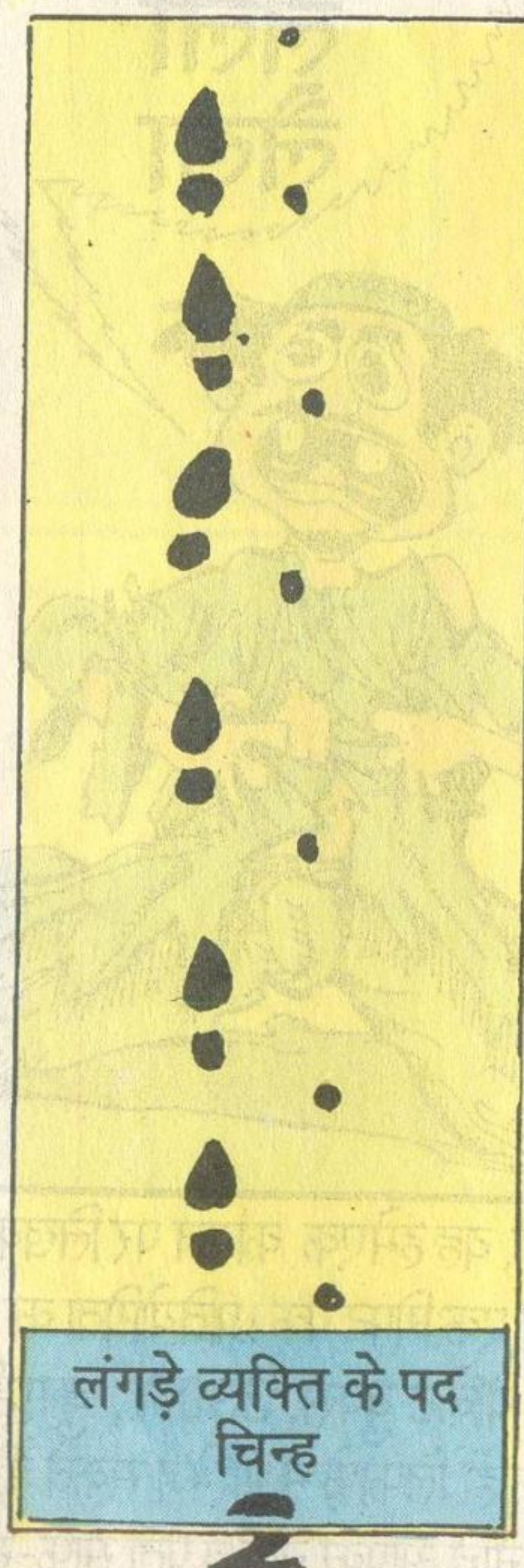
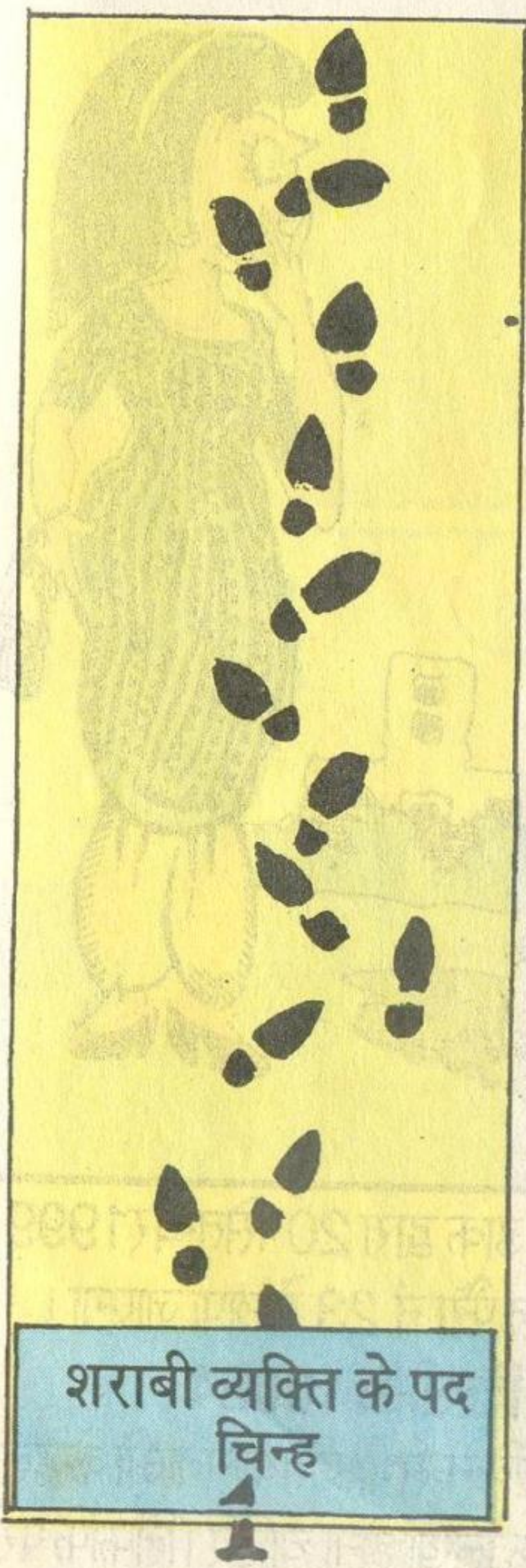




## पद चिन्ह सुराग

तीन स्थानों पर कुछ लोग आकर गए। उनके जाने के बाद हम बुद्धिमान जासूस उलूक को लेकर उन स्थानों पर गए। जासूस ने पद चिन्हों को देख कर बताया कि एक नम्बर स्थान पर से एक शराबी गया है। दो नम्बर स्थान पर से एक लंगड़ा व्यक्ति गया है। वह तीसरे स्थान के पद चिन्हों को देख बताने ही वाला था कि हमने उसे रोका और कहा, इस प्रश्न पर फैंग के पाठकों को ही दिमाग लगाने दो तो पाठकों थोड़ा दिमाग लगाकर सोचो कि तीन नम्बर स्थान से कौन गया है।

—भरत







## आधी रात की आजादी

14 अगस्त, 1947, पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ गई थी। देश की राजधानी दिल्ली में लोगों के कदम जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। हर कोई लालकिले की ओर दौड़ रहा था। देखते ही देखते लालकिले के सामने दूर-दूर तक लोगों की भीड़ दिखाई दे रही थी। घड़ी की सुइयां बारह बजाने जा रही थीं। सारा वातावरण रोशनी से चकाचौंध हो रहा था। लोगों की आंखों से नींद कोसों दूर जा चुकी थी।

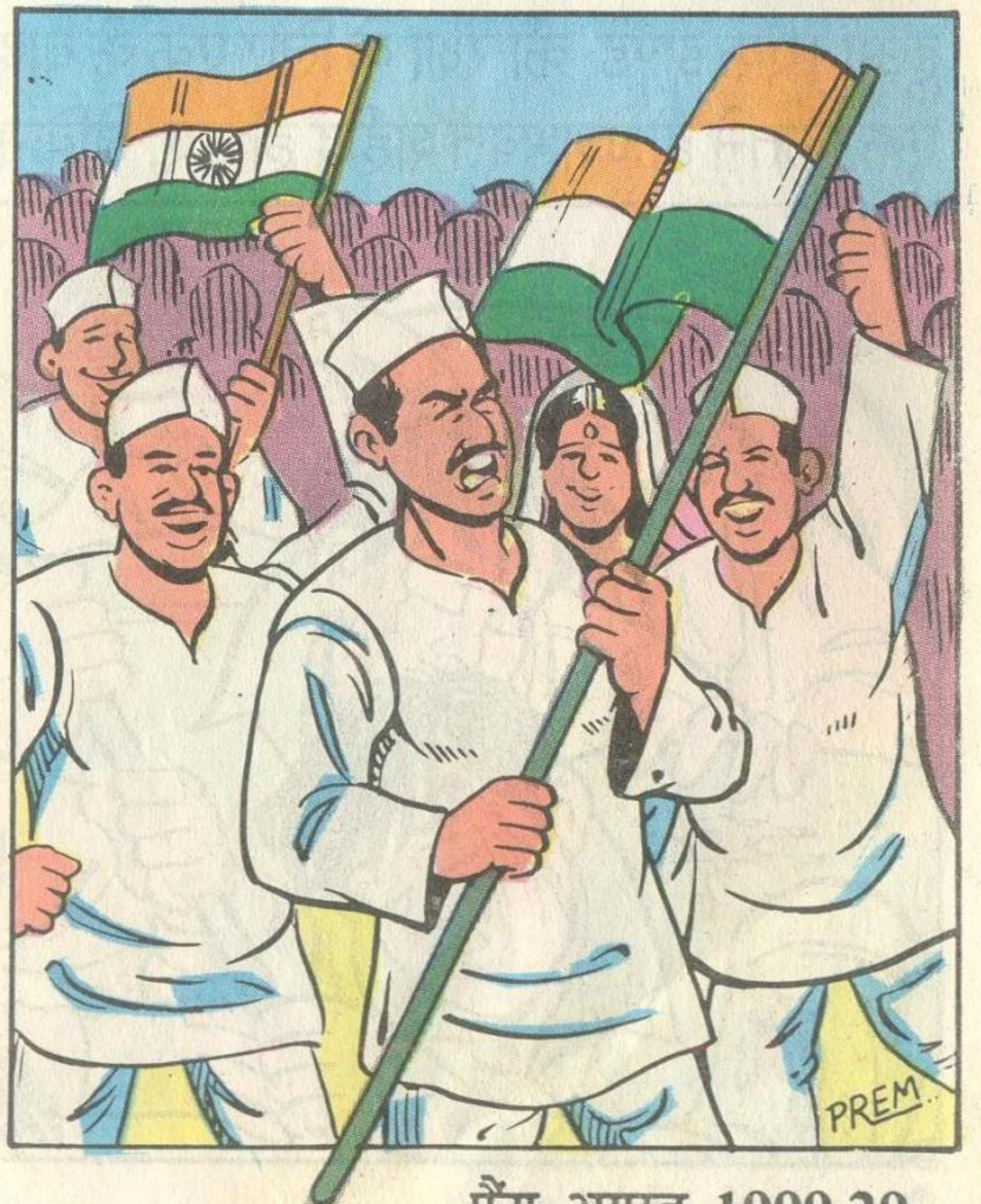
तभी लालकिले की प्राचीर पर पं. जवाहरलाल नेहरू ऊंचे खंबे पर बंधे एक झण्डे की ओर तेजी से बढ़े। इधर घड़ियों ने बारह बजाए और उधर ब्रिटिश साम्राज्य का यूनीयन जैक झण्डा नीचे उतरा और तिरंगा झण्डा ऊपर उठ कर स्वतंत्र वातावरण में लहरा उठा।

14 अगस्त, 1947 की आधी रात को इस तरह हमने स्वतंत्रता का पहला समारोह मनाया।

देश की स्वतंत्रता के लिए 200 वर्ष पहले 1857 में संग्राम शुरू किया गया। टीपू सुल्तान, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना फड़नवीस, तांत्या टोपे से चलता हुआ स्वतंत्रता संग्राम कुंवर सिंह, चन्द्रशेखर, बिस्मिल, अशफाक, राजेंद्र लाहिड़ी, सरदार भगतसिंह तक पहुंचा। स्वतंत्रता के लिए

संग्राम करते कितने ही देशभक्तों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों का बलिदान किया। उधर देश को गुलाम बनाने वाले अंग्रेजों ने भी स्वतंत्रता संग्राम को कुचलने में कोई कसर न रखी। लोगों को जेलों में ठूंसा गया, आंदोलनकारियों को गोलियों से भूना गया और देशभक्त क्रांतिकारियों को फांसी पर चढ़ाया गया। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम आग में पड़े घी की तरह और तेज होता गया।

दक्षिण अफ्रीका से लौटे श्री मोहनदास कर्मचंद गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में नई अग्नि प्रज्वलित की। देश के कोने-कोने से देश की स्वतंत्रता के लिए 'अंग्रेजों भारत





छोड़ो' का नारा गूंजने लगा। अंग्रेज प्रशासक बौखला गए थे, लेकिन क्रूर हिंसा से आंदोलन को दबाने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। महात्मा गांधी, सरदार बल्लभ भाई पटेल, पं. मदन मोहन मालवीय, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, डा. सरोजिनी नायडू, श्रीमती अरुणा आसफ अली, अब्दुल गफ्फार खां, अबुल कलाम, सभी हिन्दू-मुसलमान, सिख, ईसाई देशभक्तों को जेल में ठूस दिया गया और तभी महात्मा गांधी का नया नारा गूंजा—'करो या मरो।' इस नारे ने अंग्रेजों की रीढ़ की हड्डी पर आघात किया।

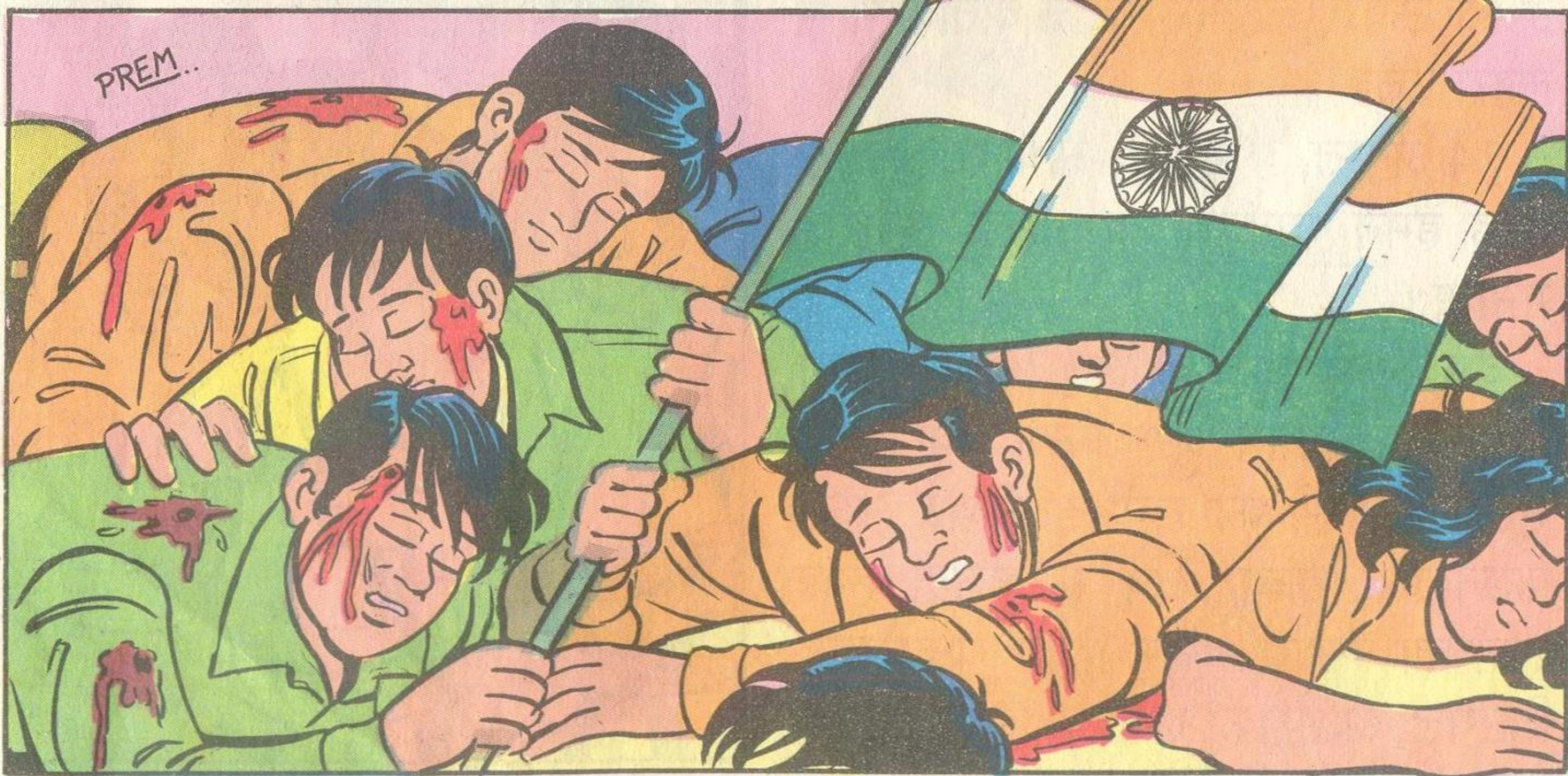
9 अगस्त, 1947 दिल्ली की गली-गली से 'करो या मरो' का नारा गूंजने लगा। अंग्रेजों ने गोलियों से देशभक्तों को भून डाला, लेकिन तिरंगा लेकर चलने वालों का उत्साह कम नहीं हुआ। एक झण्डे की रक्षा के लिए एक के बाद एक कितने ही देशभक्त शहीद हो गए, लेकिन

झण्डे को झुकने नहीं दिया।

दिल्ली की गलियों से निकला किशोर लड़के-लड़कियों का एक जुलूस लालकिले की ओर बढ़ा तो अंग्रेजों ने उन पर गोलियों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। जुलूस पीली कोठी पर पहुंचा। पीली कोठी नाम से प्रसिद्ध उत्तर रेल्वे के हैड आफिस को आंदोलनकारी किशोरों ने आग लगा दी। देखते ही देखते सरकारी इमारतों की होली जलने लगी।

आखिर हारकर उस समय के लार्ड माउंटबेटन ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। 14 अगस्त, 1947 को आधी रात के समय वाइसराय लार्ड माउंटबेटन ने पं. जवाहरलाल नेहरू को देश की बागडोर सौंप दी। विश्व इतिहास में हमारे देश की स्वतंत्रता का वर्णन युगों-युगों तक स्वर्णिम अक्षरों में लिखा रहेगा।

—शशिभूषण शलभ



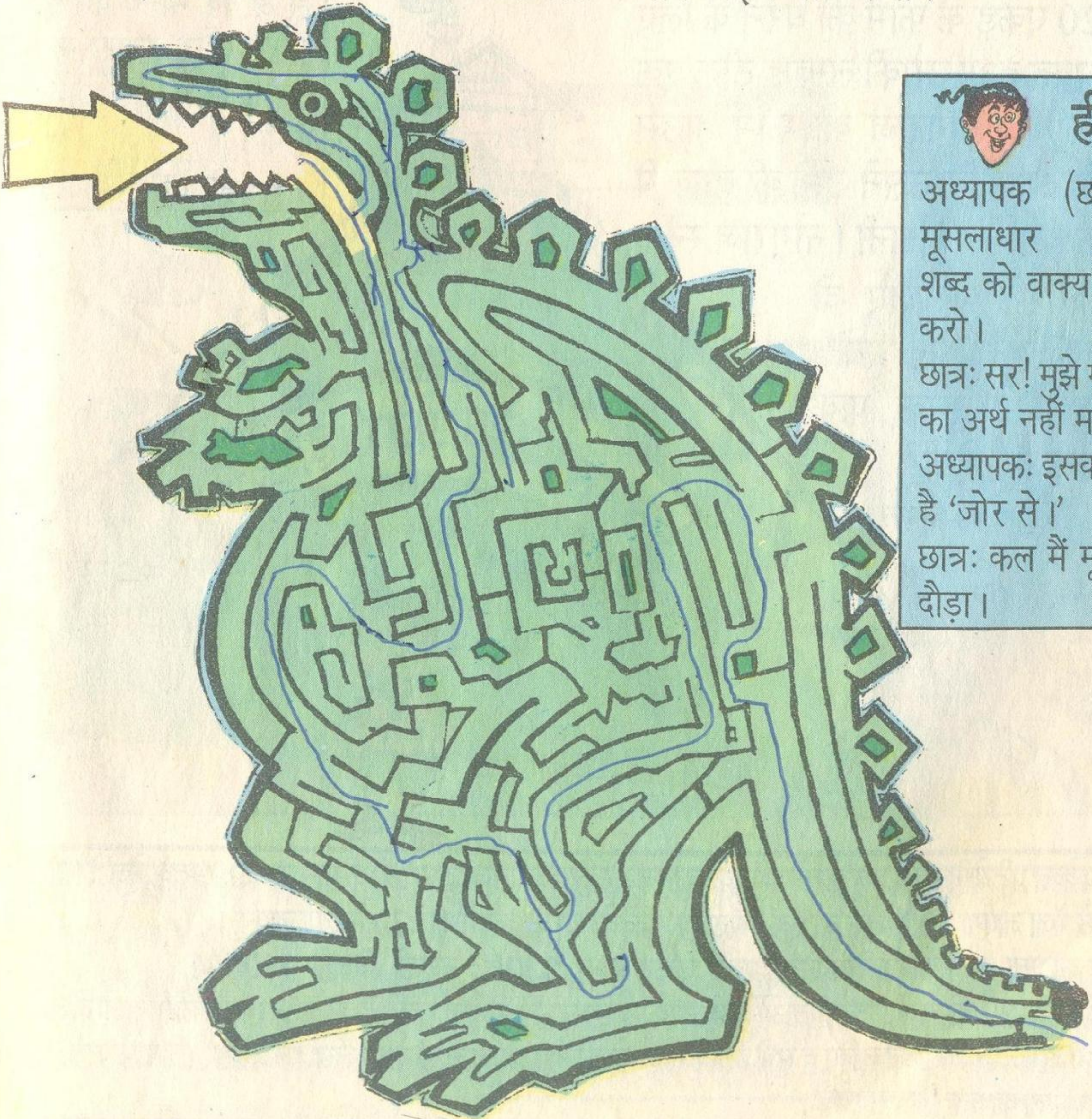




## डायनासोर क्रेज मेज

आज डायनासोर का क्रेज है। यहां डायनासोर का एक मेज है। इसके मुंह से घुसो और दो मिनट के भीतर पूंछ से बाहर निकलो। इससे अधिक समय लगा तो समझो कि तुम्हारी खटिया खड़ी हो जाएगी क्योंकि डायनासोर की पाचनक्रिया तुम्हें पचा कर छी:छी: में बदल डालेगी। है हिम्मत तो घुसो और टाइम नोट करो।

—भरत



ही ही ही

अध्यापक (छात्र से):

मूसलाधार

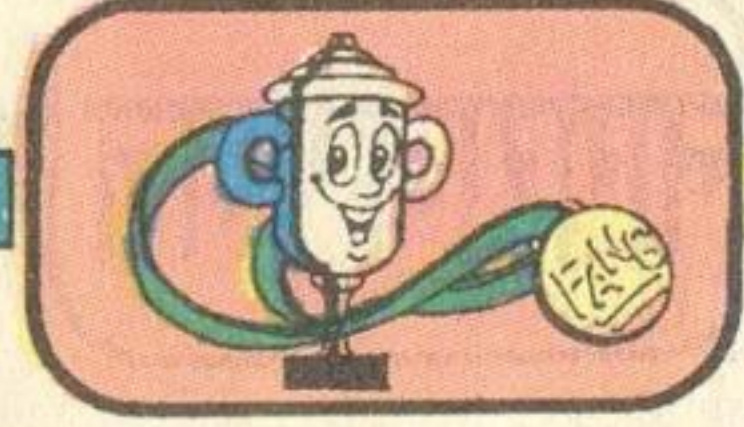
शब्द को वाक्य में प्रयोग करो।

छात्र: सर! मुझे मूसलाधार का अर्थ नहीं मालूम।

अध्यापक: इसका मतलब है 'जोर से'।

छात्र: कल मैं मूसलाधार दौड़ा।





## सर्पाकार प्रतियोगिता

नागराज ने एक फार्म हाउस खरीदा। फार्म हाउस की सीमाओं को अंकित करते खंभे गड़े थे। नागराज ने खंभों को अपने एक लम्बे नाग से घेर लिया था क्योंकि कंटीले तार अभी आये नहीं थे। 20 एकड़ के फार्म को घेरने के लिए जो सर्प प्रयुक्त हुआ उसकी लम्बाई ठीक एक किलोमीटर थी। नागराज को फार्म हाउस इतना पसंद आया कि उसने उसी की बगल में स्नेक पार्क बनाने की ठानी। नागराज स्नेक पार्क को घेरने के लिए दो किलोमीटर लम्बा सर्प प्रयोग करेगा। बताओ स्नेक पार्क कितने एकड़ का होगा?

—भरत



ॐ ज्ञानरश्मि ॐ

हम जितने शांत होंगे,  
हमारे स्नायु जितने ही कम  
उत्तेजित होंगे। हम उतना  
ही अधिक मानव प्रेम कर  
सकेंगे और हमारा कार्य  
उतना ही अधिक अच्छा  
होगा।

—स्वामी विवेकानंद

**नियम :** उपरोक्त प्रतियोगिता को हल करके हमें एक कागज पर लिखकर डाक द्वारा 20 सितम्बर, 1999 तक भेज दें। पांच विजेताओं को भेजा जाएगा 100/- तक का एक गिफ्ट पैक। प्रतियोगिता का हल फैंग नं. 23 में छपा जाएगा।

**प्रतियोगिता का पता :** सर्पाकार प्रतियोगिता, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

**विशेष :** आप फैंग-20 की सभी प्रतियोगिताओं के हल एक ही लिफाफे में भी भेज सकते हैं, लेकिन सभी प्रतियोगिताओं के हल अलग-अलग कागज पर लिखे होने चाहिए व सभी हलों के नीचे आपका नाम व पता साफ-साफ लिखा होना चाहिए। लिफाफे पर किसी भी एक प्रतियोगिता का पता लिख सकते हैं।





## ये कौन वर्ग पहेली

‘ये कौन’ वर्ग पहेली में कुछ लोगों के चित्र हैं। उनकी वेषभूषा देखकर पता लग जाता है कि ये कौन हैं। इन्हें पहचानों और वर्गों में

भरो। चित्रों के साथ बैलूनों में वर्ग नंबर हैं और तीर द्वारा संकेत दिया गया है कि इसे ऊपर से नीचे या बाएं से दाएं भरना है।



**नियम :** उपरोक्त वर्ग पहेली को भरकर वह हमें एक कागज पर लिखकर डाक द्वारा 20 सितम्बर, 1999 तक भेज दें। पांच विजेताओं को भेजा जाएगा 100/- तक का एक गिफ्ट पैक। प्रतियोगिता का हल फैंग नं. 23 में छापा जाएगा।

**प्रतियोगिता का पता :** ये कौन वर्ग पहेली प्रतियोगिता, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084.

**विशेष :** आप फैंग-20 की सभी प्रतियोगिताओं के हल एक ही लिफाफे में भी भेज सकते हैं, लेकिन सभी प्रतियोगिताओं के हल अलग-अलग कागज पर लिखे होने चाहिए व सभी हलों के नीचे आपका नाम व पता साफ-साफ लिखा होना चाहिए। लिफाफे पर किसी भी एक प्रतियोगिता का पता लिख सकते हैं।

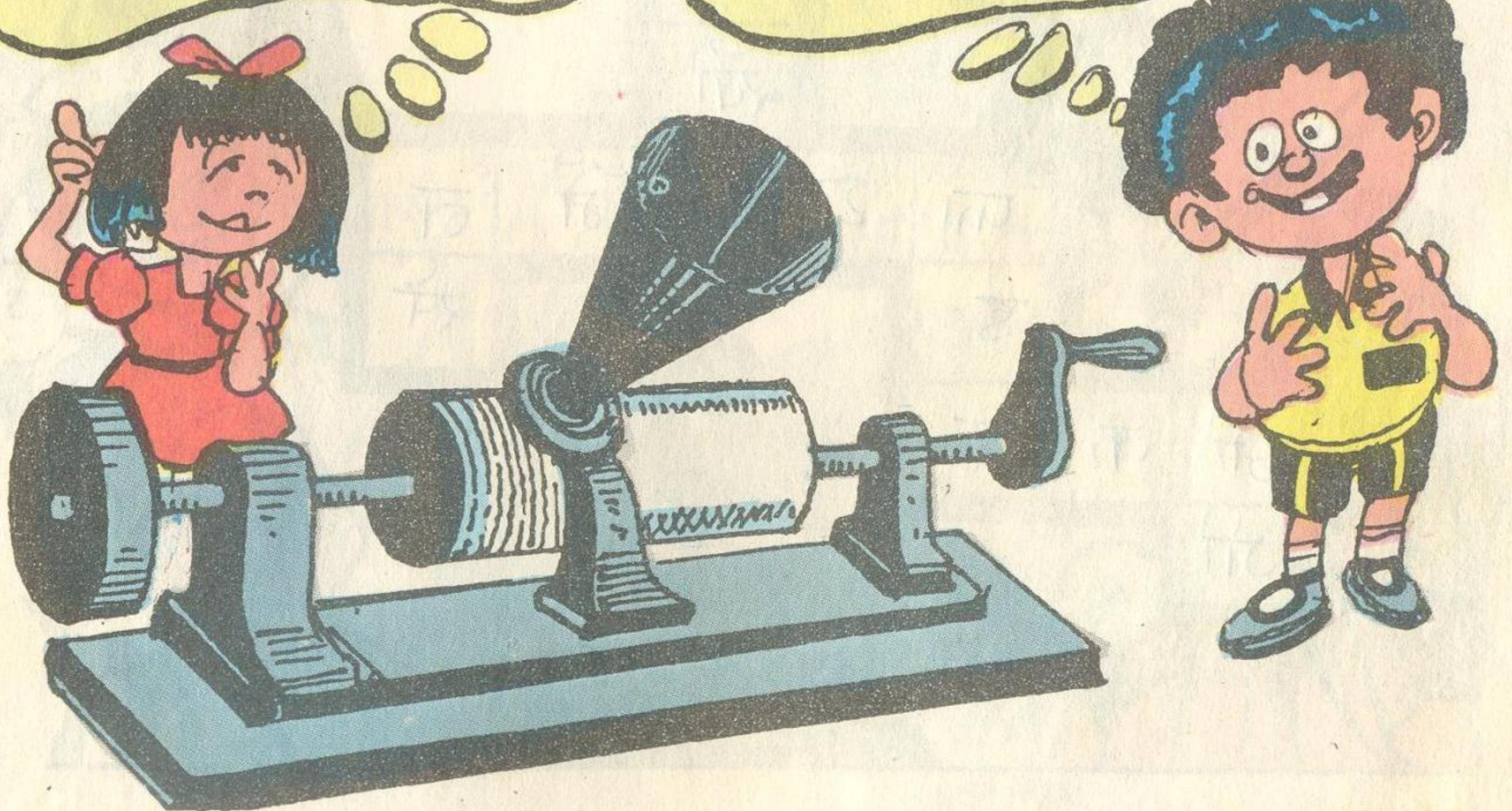


किन्नी और कुन्नू एक बार पुराने जमाने की मशीनों की ऐतिहासिक प्रदर्शनी देखने गए। वहां उन्होंने एक मशीन देखी जिसका चित्र नीचे दिखाया गया है। उस पर कोई लेबल या

परिचय पट्टी नहीं लगी थी। दोनों भाई-बहन  
लगे अटकलें लगाने। क्या तुम बता सकते हो  
कि यह कौन सी मशीन है?

यह नानी के जमाने की मिक्सी  
या आइसक्रीम मशीन है।

ना ना! यह दादाजी के जमाने का पोंपकार्न मेकर है।



उत्तर: यह आमोकोन का आरम्भिक रूप है। एडोमन ने पहला आमोकोन ऐसा ही बनाया था। इसे हाथ से घुमाना पड़ता था। और मैं बोलने पर रोने पर सिपटी एल्मोनिम फायल पर आगज रिकार्ड होती थी। और को पीछे ले जा कर दोबारा घुमाने पर वही आगज निकलती थी। और के लगे में एक पल्ला पतरा होता था जिसके नीचे सुई लगी होती थी। वही सुई एल्मोनिम फायल पर आगज का पैटर्न रिकार्ड करती थी।





## ढूढो-ढूढो प्रतियोगिता

दोस्तो, नागराज और सिल्विया को तो नहीं पता कि मिस किलर यहां से भागकर कहां गई पर आप इस दरवाजे पर गौर से निगाहें डालेंगे

तो जान जायेंगे कि मिस किलर यहां से भागकर कहां गई है? क्यों उलझ गए न? हमने कहा था न कि ढूढते रह जाओगे। ढूढो-ढूढो और नागराज की मदद करो।

नागराज! मिस किलर यहां से तो हमारे आने से पहले ही भाग गई है। पर वह गई कहां है, यह पता नहीं लग पा रहा।

वही तो मैं सोच रहा हूं। शायद उसे हमारे आगमन की खबर लग गई होगी। पर वह यहां से गई कहां है, यह जानना हमारे लिए बेहद जरूरी है।

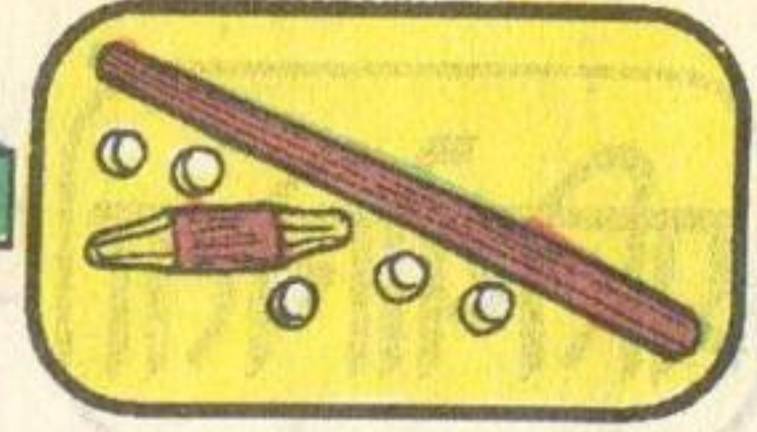


**नियम :** उपरोक्त प्रतियोगिता को हल करके हमें एक कागज पर लिखकर डाक द्वारा 20 सितम्बर, 1999 तक भेज दें। पांच विजेताओं को भेजा जाएगा 100/- तक का एक गिफ्ट पैक। प्रतियोगिता का हल फैंग नं. 23 में छपा जाएगा।

**प्रतियोगिता का पता :** ढूढो-ढूढो प्रतियोगिता, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084.

**विशेष :** आप फैंग-20 की सभी प्रतियोगिताओं के हल एक ही लिफाफे में भी भेज सकते हैं, लेकिन सभी प्रतियोगिताओं के हल अलग-अलग कागज पर लिखे होने चाहिए व सभी हलों के नीचे आपका नाम व पता साफ-साफ लिखा होना चाहिए। लिफाफे पर किसी भी एक प्रतियोगिता का पता लिख सकते हैं।





## अपना नाम लिखो

इस खेल से तुम अपना मनोरंजन कर सकते हो और अपने मित्रों को भी चुनौती देकर छका सकते हो।

एक मेज पर कागज रखो और पैर या पेंसिल लेकर कुर्सी पर बैठो। अब अपना दायां पैर आगे कर पैर के अंगूठे से फर्श पर गोल चक्कर बनाना शुरू करो। अंगूठे से चक्कर लगाते-लगाते ही हाथ से कागज पर अपना नाम लिखने का प्रयत्न करो। तुम नहीं लिख पाओगे, जब तक पैर के अंगूठे से फर्श पर गोल बनाने का काम न रोक दो। कागज पर केवल टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें या गोल ही बन

पाएंगे। तुम अपने मित्रों को भी चुनौती दे सकते हो। असफल होने पर जब वह खिसिया जायेंगे तो तुम सबको हंसी आ जायेगी।

इसका कारण सीधा है। हमारे दिमाग का जो भाग लिखाई का भार संभालता है वही पैर के अंगूठे से गोल बनाने की क्रिया का संचालन करता है। अतः एक ही बार में वह दोनों क्रियाओं को संचालित नहीं कर सकता। हमारे हाथ के केवल अंगूठे के संचालन में दिमाग का इतना बड़ा भाग लगा रहता है कि उसके सामने पूरे पेट को संचालित करने वाला विभाग छोटा पड़ जाता है।

—भरत

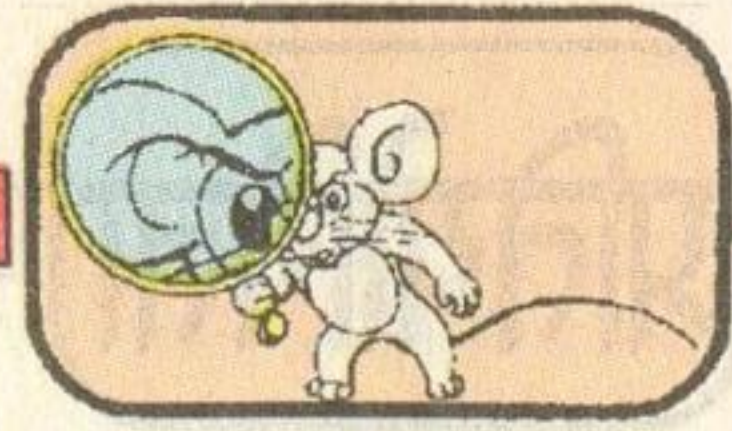


## ही ही ही

सुरेंद्र (ऊंची आवाज में) महेंद्र, सुना है तुम्हारे दोनों कानों की सुनने की शक्ति कम हो गई। तुम्हें दफ्तर के कार्य इत्यादि में तो बहुत मुश्किल आती होगी। लगता है...तुम्हारी नौकरी गई।

महेंद्र (झट से): अरे नहीं भई, उल्टे मेरे बॉस ने मुझे तरक्की देकर शिकायत विभाग का इंचार्ज बना दिया है।





## पद्म भूषण

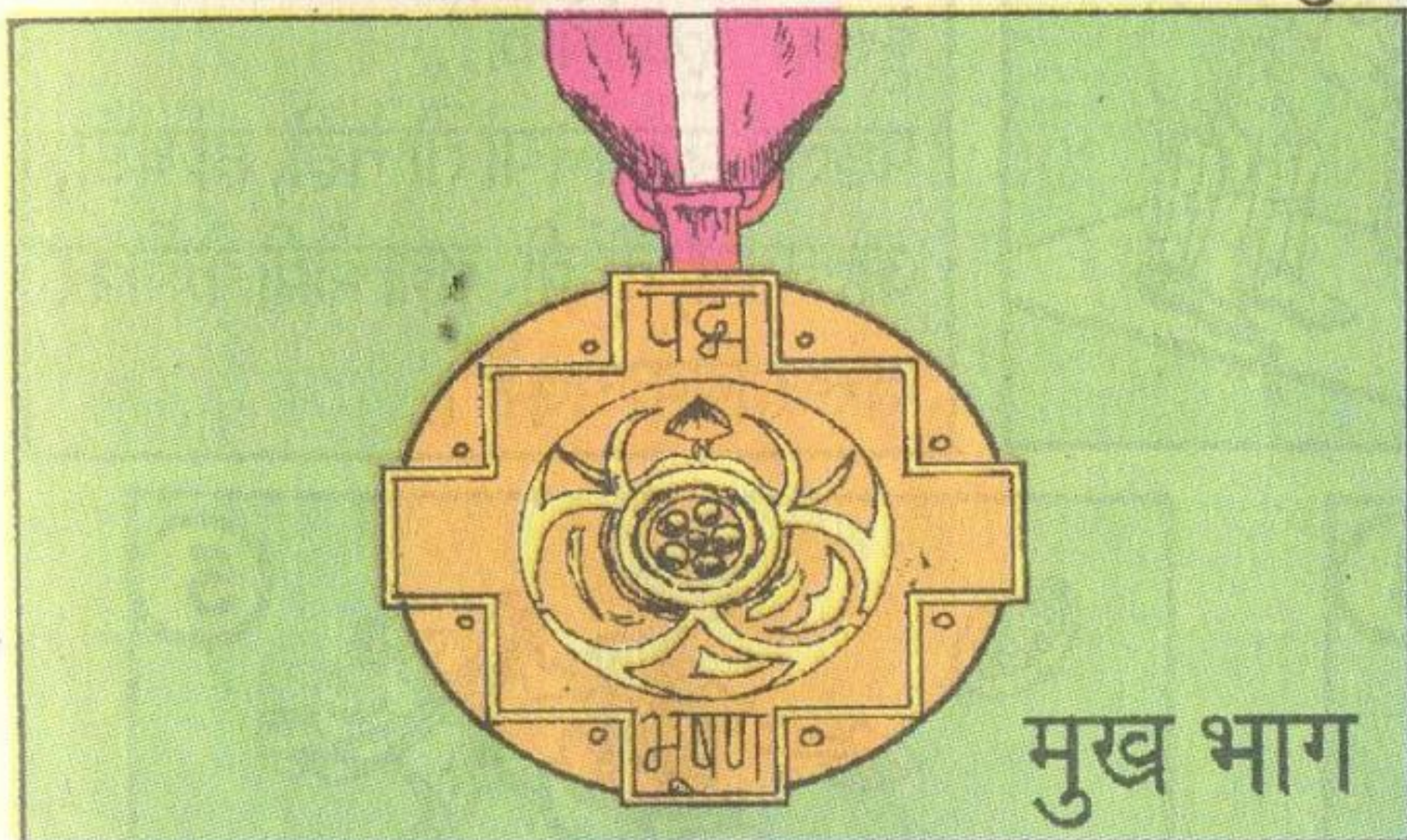
*Handwritten signature*

उभरे हुए भाग सोने के बने होते हैं।

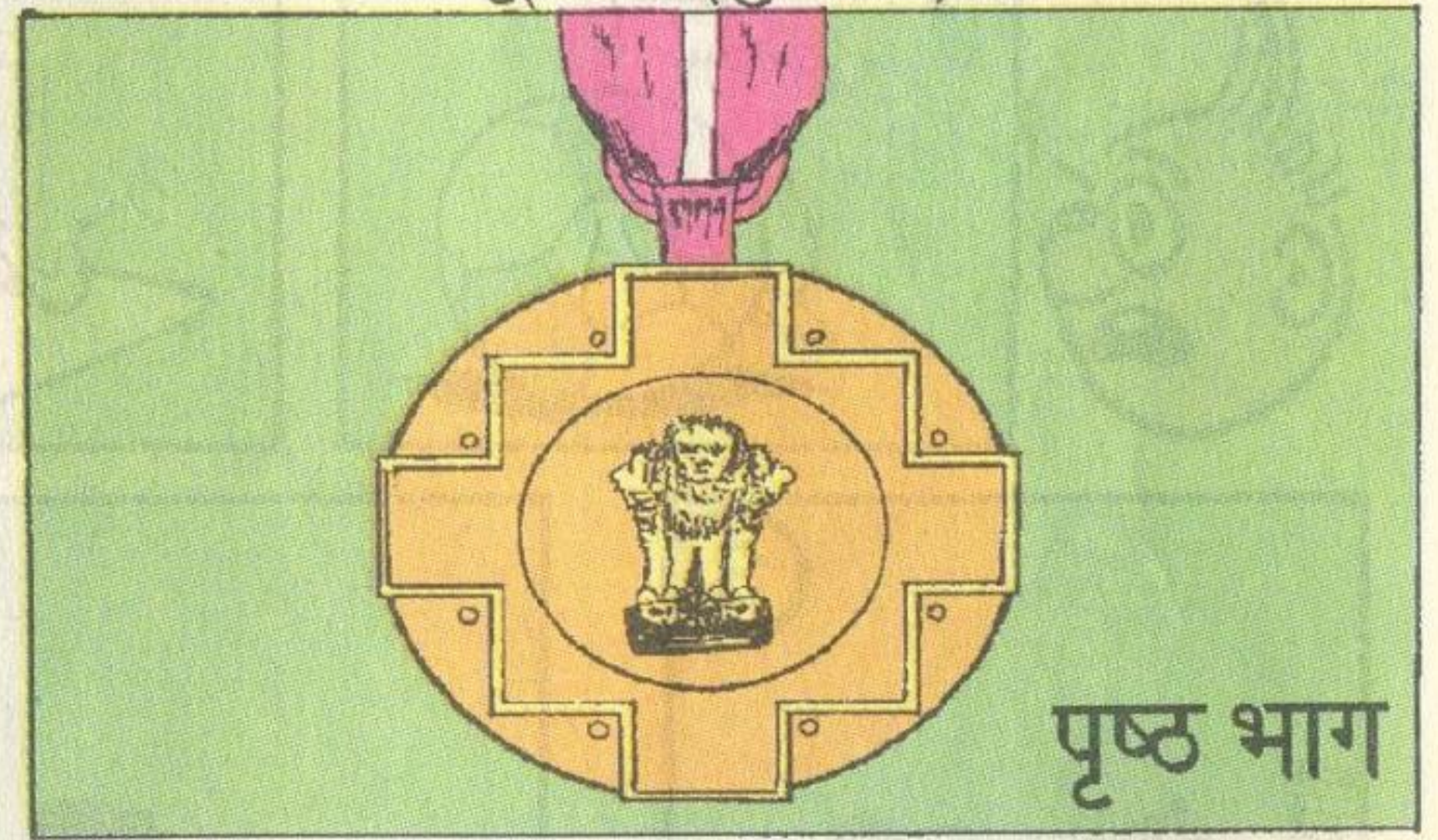
इस अलंकरण की संस्थापना राष्ट्रपति द्वारा 2 जनवरी, 1954 को पद्म विभूषण द्वितीय श्रेणी के नाम से की गई थी। 2 जनवरी, 1955 को एक संशोधन द्वारा इसका नाम बदलकर पद्म भूषण कर दिया गया। यह अलंकरण भारत के राष्ट्रपति द्वारा अपनी मुद्रा एवं हस्ताक्षर के साथ एक सनद द्वारा प्रदान किया जाता है।

पद्म भूषण का यह अलंकरण गोलाकार होता है और इस पर एक ज्यामितीय आकृति

अलंकरण के मुख भाग के बीच में 28 मिलीमीटर व्यास की उभरी हुई गोल आकृति होती है। इसके गोल भाग में कमल का फूल बना होता है। कमल के फूल के ऊपरी भाग में अलंकरण का नाम 'पद्म' और नीचे के भाग में 'भूषण' शब्द हिन्दी में लिखे रहते हैं। अलंकरण के पृष्ठ भाग में राष्ट्रचिन्ह के साथ 'सत्यमेव जयते' लिखा होता है। यह अलंकरण पुरस्कृत पुरुष के वक्षस्थल पर बाईं ओर 32 मिली मीटर चौड़े कमल के फूल के (गुलाबी) रंग के रिबन से



मुख भाग



पृष्ठ भाग

अंकित रहती है। अलंकरण के गोलाकार भाग का व्यास 45 मिली मीटर और मोटाई 3 मिली मीटर होती है। ज्यामितीय आकृति एक वर्ग की बाहरी रेखाओं से बनी होती है। इसके चारों तरफ केंद्र की ओर उन्मुख एक आयत होता है जो कि वृत्त के बाहर निकलकर अलंकरण के घेरे का अतिक्रमण करता दिखाई देता है। अलंकरण के हर बाहरी कोण में एक घुंड़ी उभरी होती है। यह अलंकरण कांस्य धातु का बना होता है, लेकिन बाहरी वृत्त के किनारे और दोनों ओर

लटका कर पहनाते हैं। रिबन के बीच में एक श्वेत चौड़ी धारी बनी होती है। पुरस्कृत महिला को यह अलंकरण उसी रंग के चौड़े, धनुषाकार रिबन के साथ बाएं कंधे से लटकाया जाता है।

पद्म भूषण का यह अलंकरण किसी भी क्षेत्र में उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए सरकारी कर्मचारियों सहित प्रदान किया जाता है। मरणोपरांत भी यह अलंकरण दिया जाता है।

प्रस्तुति: शशिभूषण शलभ





# अनाड़ी का खेलना

नीचे के पांच चित्रों में कुछ अनाड़ी खिलाड़ी कौन सा खेल किस चीज से खेला जाता है। विभिन्न खेल-खेल रहे हैं। खेल तो रहे हैं पर तुम्हें यही गलतियां पकड़नी हैं।  
गलत खेल रहे हैं। उन्हें पता ही नहीं है कि

—भरत



ही ही ही

एक व्यक्ति दूसरे से: मैंने साहित्य को ही अपना जीवन बना लिया है तथा अब किताबें ही लिखता हूं।

दूसरा: कुछ बिका?

पहला: कहानियां तो नहीं, हां घड़ी, अलमारी, टी.वी. तथा बीबी के जेवर जरूर बिक गए हैं।

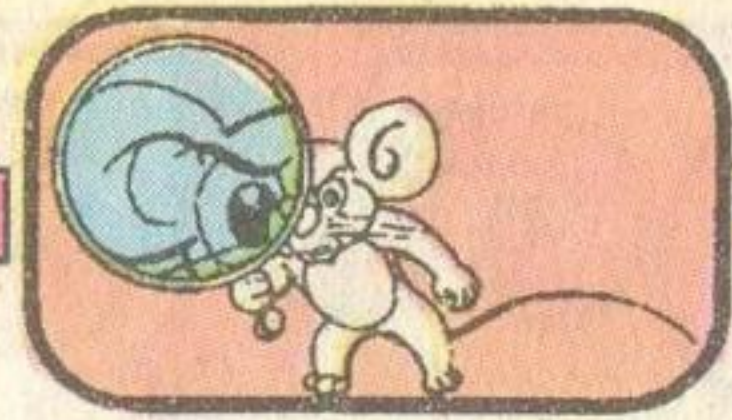


**नियम :** उपरोक्त प्रतियोगिता को हल करके हमें एक कागज पर लिखकर डाक द्वारा 20 सितम्बर, 1999 तक भेज दें। पांच विजेताओं को भेजा जाएगा 100/- तक का एक गिफ्ट पैक। प्रतियोगिता का हल पैग नं. 23 में छपा जाएगा।

**प्रतियोगिता का पता :** अनाड़ी का खेलना प्रतियोगिता, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084.

**विशेष :** आप पैग-20 की सभी प्रतियोगिताओं के हल एक ही लिफाफे में भी भेज सकते हैं, लेकिन सभी प्रतियोगिताओं के हल अलग-अलग कागज पर लिखे होने चाहिए व सभी हलों के नीचे आपका नाम व पता साफ-साफ लिखा होना चाहिए। लिफाफे पर किसी भी एक प्रतियोगिता का पता लिख सकते हैं।





## किस खेत की मूली हैं हम?

बच्चो, जानते हो हम जो आज भारत में हैं यहां के मूल निवासी नहीं हैं? हम सब विदेशों से आए हैं।

भारत में सबसे पहले भूमध्य सागर के आसपास के क्षेत्रों से लगभग 7000 वर्ष पूर्व द्रविड आए जो सिंधु नदी (जो अब पाकिस्तान में है) के दोनों ओर बस गए। यही बाद में दक्षिण भारत की ओर चले गए। द्रविडों से ही तमिल, तेलुगू, कन्नड व मलयाली भाषाएं उपजीं।

फिर लगभग 3500 वर्ष पूर्व रूस के दक्षिणी छोर पर स्थित कैस्पियन सागर क्षेत्र से आर्य भारत आये। वह अपने साथ संस्कृत भाषा लाए और उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में बस गए। संस्कृत से ही हिन्दी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, पूर्वी व मराठी भाषाओं की शाखें निकलीं। आर्य लम्बे-चौड़े, बलिष्ठ व गोरे थे। जबकि द्रविड पक्के रंग के व शारीरिक रूप से कम बलिष्ठ थे।

इस बीच लगातार चीन, तिब्बत से मंगोल जातियां आकर पहाड़ी क्षेत्रों में बसती रहीं। इनकी आंखें दरार वाली, नाक चपटी व जबड़े चौड़े थे। कद भी छोटा था।

इसके पश्चात अफगानिस्तान व अरब से

मुगल आए वह भी यहीं बस गए। कालांतर में इन सब जातियों की खिचड़ी सी पक गई और आज के भारतवासी बने जो हम हैं व तुम हैं।

सिंधु नदी का हमारे इतिहास पर गहरा प्रभाव है। सिन्धु नदी को देखकर ही सिकन्दर ने भारत को हिन्दुस्तान नाम दिया। यूनानी 'स' का उच्चारण 'ह' करते थे। सिन्धु नदी तिब्बत से निकलती है। चीनी इसे 'शिन्दो' कहते हैं इसलिए भारत के लोगों को वे 'शिन्दू' कहने लगे। अंग्रेज आये तो उन्होंने सिन्धु को 'इंडस रिवर' कहा और उसी से 'इंडिया' नाम बना दिया।

—भरत नेगी







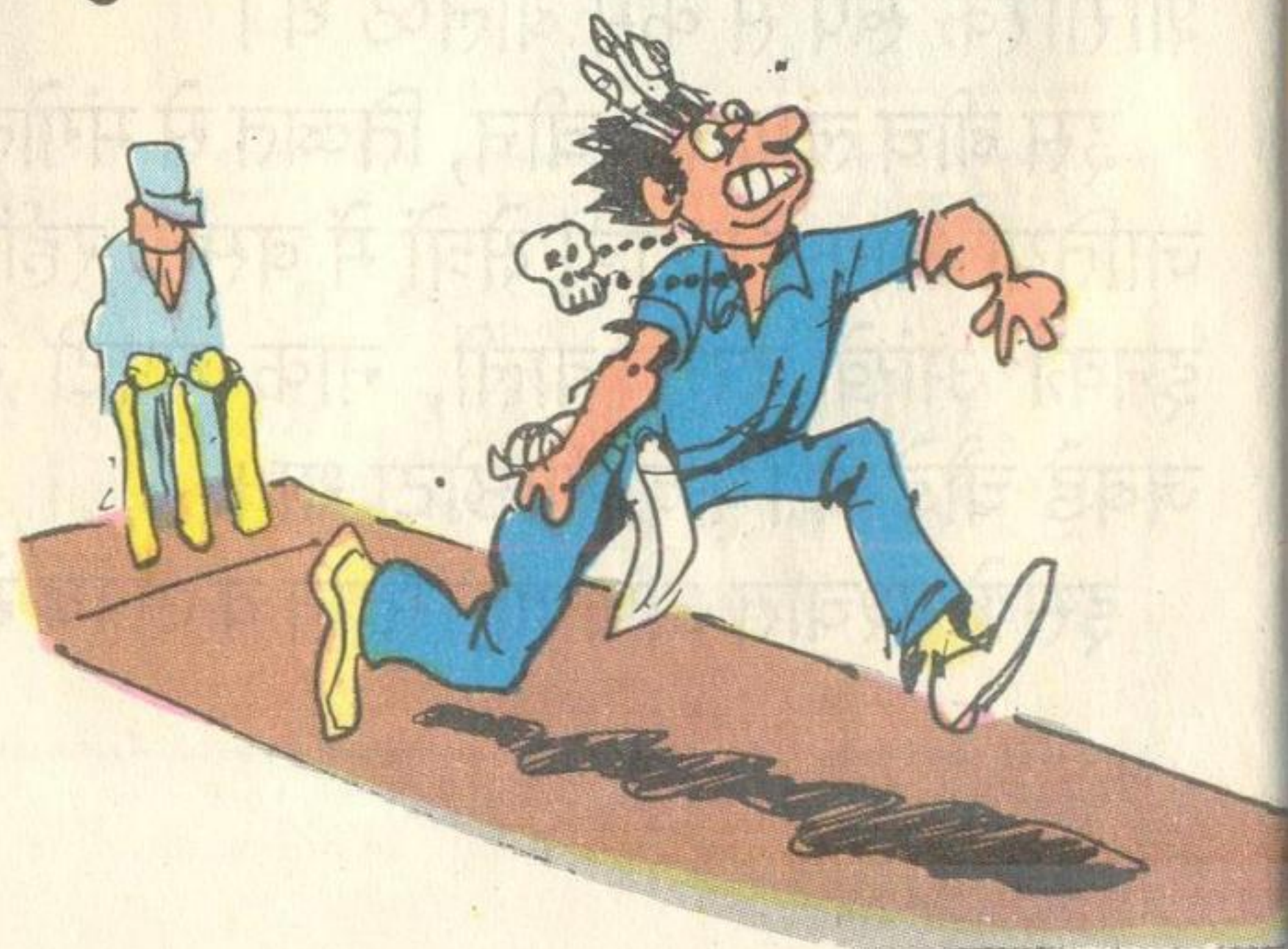
## क्रिकेट में तंत्र मंत्र यंत्र

मुख्य समाचार: भारत उपमहाद्वीपीय देशों में मई जून में क्रिकेट के पागलपन का भयंकर प्रकोप रहा। क्रिकेट के संदर्भ में क्रिकेटर्स से संबंधित बहुत दूर की कौड़ियां लाई गईं व गड़े मुर्दे उखाड़े गए। यह तथ्य भी सामने आया कि क्रिकेटर बहुत अंधविश्वासी होते हैं तंत्र-मंत्र के जाल में जकड़े हुए हैं। कोई क्रिकेटर खास गंडा पहनता है। कुछ लाल या पीले रंग के लकी रुमाल कमर में सदा खौंसे रहते हैं। कोई बल्लेबाज ग्राउंड में बैटिंग के लिये जाते समय थोबड़ा उठा कर सूरज की ओर जरूर देखता है, कोई बॉलर दो गेंदे फेंकने के बाद ही स्वेटर उतार कर अम्पायर को देता है वगैरह-वगैरह। लिस्ट शैतान की आंत जितनी लम्बी है। इस विश्वकप 1999 में तंत्र-मंत्र के स्थान पर यंत्र का बड़ा जोर रहा। रोशनी खेलने लायक है या नहीं बताने वाले यंत्र और बैट्समैन रन आउट हुआ या नहीं इस बात की खाल उतारने वाले कैमरे तो पहले ही थे।

नैट प्रैक्टिस के लिए अब बॉलिंग मशीनों का प्रयोग होने लगा है ताकि तेज गेंदबाजी का सामना करने की ट्रेनिंग बैट्समैन ले सके। यह बॉलिंग मशीन लीवर बटन दबाने पर गेंद को फेंकती है। यह मशीन 160 किलोमीटर फैंग, अगस्त-1999.40

प्रति घंटे तक की गति से गेंद फेंक सकती है। इसमें स्विंग गेंदबाजी का प्रावधान जोड़ने की कोशिश की जा रही है। यह इसलिये आवश्यक हो गया है कि एक तो फास्ट बॉलर हर समय नहीं मिलते। अगर मिलते भी हैं तो वे पूरी गति से नैट प्रैक्टिस के दौरान गेंदबाजी नहीं करते। आखिर क्यों वह नैट प्रैक्टिस में अपनी शक्ति व्यर्थ करें? उनका असली प्रतियोगिता में प्रयोग करने के लिए अपनी ऊर्जा शक्ति को बचाए रखना स्वाभाविक है।

इस बात में तो कोई दो राय नहीं हैं कि इस समय इस धरती पर पाकिस्तान के तेज गेंदबाज शोयब अख्तर से अधिक तेज गेंद फेंकने वाला कोई नहीं है। उन्होंने विश्वकप आरम्भ होने से पहले शेखी बघारी थी कि वह 160 किलोमीटर प्रति घंटे की गेंदबाजी कर इस विश्व कप में एक रिकार्ड बनायेंगे। अब तक की सबसे तेज गेंद आस्ट्रेलिया के जैफ थाम्पसन ने की है जो 160 किलोमीटर की गति से कुछ ही कम रह गई थी। —भरत.





सूर्यपुत्र कर्ण ब्रह्मास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिए परशुराम के आश्रम में पहुंचे किंतु एक दिन भूलवश एक ब्राह्मण को वे क्रोधित कर बैठे जिसने उन्हें शाप दे डाला। अब आगे पढ़ें:-

# सूर्यपुत्र कर्ण

(भाग-3)

लेखक: डॉ. महेन्द्र मित्तल! चित्रकार: राम वाइरकर!

ब्राह्मण के शाप से दुरवी होकर कर्ण आश्रम लौटा।

भाब्य बड़ा बलवान है। मैंने सोचा क्या था, क्या हो गया!



उस दिन के बाद कर्ण छाया की भांति गुरु परशुराम की सेवा में लग गया।

तू क्यों मेरी इतनी सेवा करता है पुत्र! जा, तू भी कुछ पल विश्राम कर ले।

नहीं गुरुदेव! आप विश्राम करें। मुझे अभी विश्राम नहीं करना।



कुछ ही पलों में भृगुवंशी परशुराम गहरी नींद सो गए। तभी... एक कीड़ा कर्ण की जंघा पर चढ़कर रेंगने लगा।

अरे दुष्ट! तू कहां चढ़ा चला आ रहा है? मेरे हिलने से यदि गुरुदेव की निद्रा में विघ्न पड़ गया तो मुझे बड़ा पाप लगेगा।



कीड़ा कर्ण को काटता रहा लेकिन वह दर्द सहकर शांत बैठा रहा। कुछ देर बाद परशुराम की नींद खुली--







धीरे-धीरे सभी बालक युवा हो गये और उनकी योद्धता परखने का समय नजदीक आ गया।

वत्स ! गुरु पूर्णिमा के दिन तुम सभी को रंगभूमि में समस्त हस्तिनापुर वासियों के समक्ष अपनी योद्धता का प्रदर्शन करना है। तुम लोग तैयार हो।

हम तैयार हैं गुरुदेव !

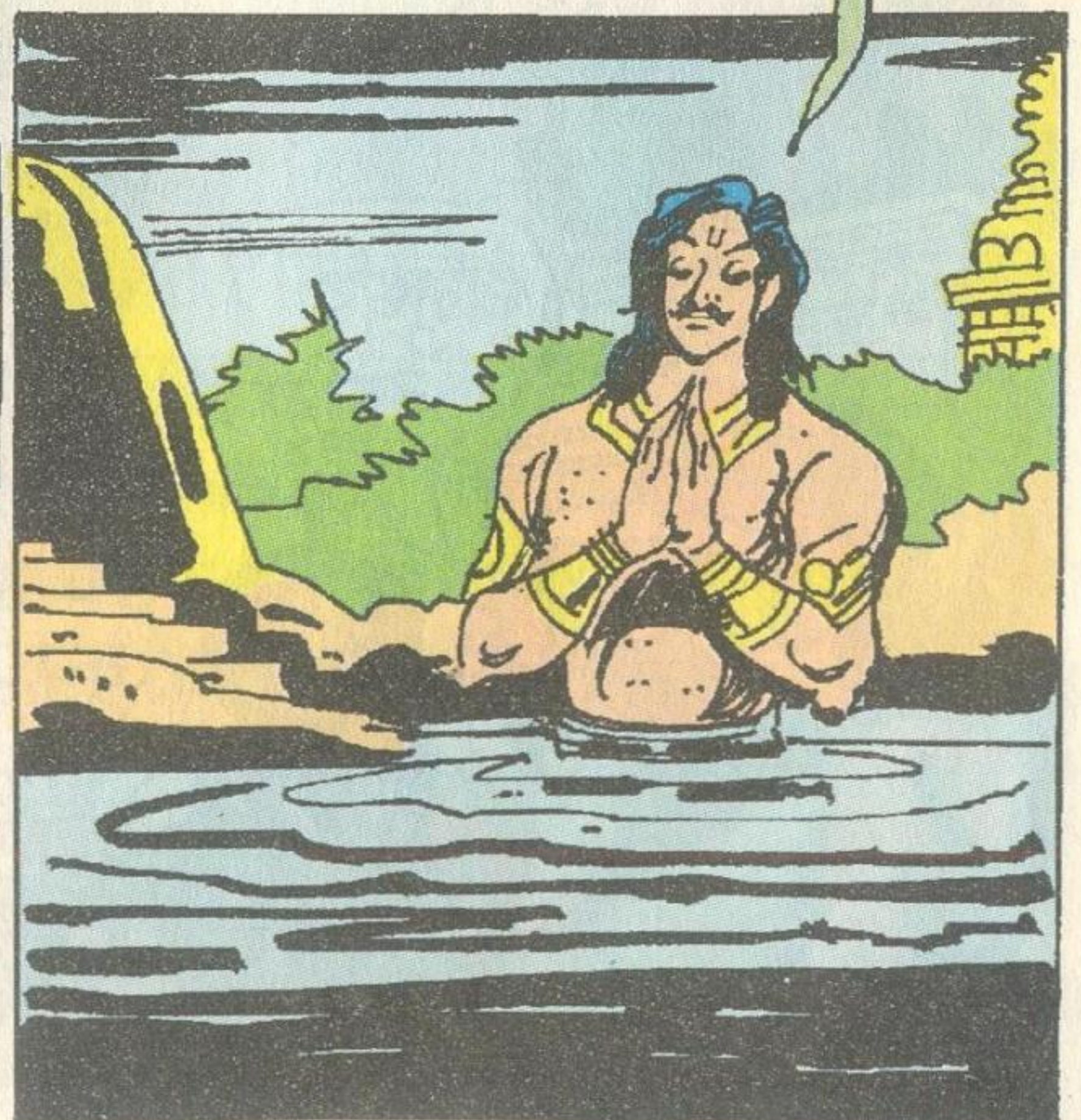
प्रतियोगिता से पहले-

अर्जुन ! रंगभूमि में तुम्हारा सबसे प्रबल विरोधी कर्ण हो सकता है।

वह मेरे सामने क्षण भर भी नहीं टिक पाएगा भ्राताश्री ! आप चिन्ता न करें।

उधर कर्ण ने सूर्योपासना की...

हे देव ! मुझे आशीर्वाद दो कि मैं रंगभूमि में अर्जुन के अहंकार को तोड़ सकूँ।











सोनिया अपने माता-पिता की इकलौती संतान व कक्षा सात की एक मेधावी छात्रा है। हाल ही में उसके पिता का स्वर्गवास हो गया। सोनिया की मां का रो-रोकर बुरा हाल था और अपनी मां के दुख को देखकर सोनिया का दुख दुगुना होता जा रहा था। न उसका घर में मन लगता था न स्कूल में।

नम्रता उसकी बहुत अच्छी सहेली थी जिसने इस दुख से उभरने में उसकी पूरी मदद की। समय के साथ-साथ सब सामान्य हो गया और सोनिया फिर से पढ़ाई में ध्यान देने लगी, लेकिन वो पहले की अपेक्षा बहुत कम बातें करती और गुमसुम रहती। एक दिन मौका पाकर नम्रता ने पूछा, “सोनिया, अब तुम मुझसे पहले की तरह बातें नहीं करती।”

“कोई बात ही नहीं होती तो करूं क्या?” सोनिया ने मायूसी से जवाब दिया।

“देख सोनिया, मैं तुझे अच्छी तरह जानती हूँ, तू मुझसे कुछ छुपा रही है।” नम्रता ने उसे झकझोर कर पूछा।

“देख नम्रता, तू मुझे ज्यादा परेशान मत कर।” यह कहते-कहते सोनिया की आंखों में आंसू भर आए।

नम्रता एक समझदार लड़की थी। उसने इसके बाद सोनिया से कोई प्रश्न नहीं पूछा, पर उसे इस बात का अंदाजा हो गया कि वो अंदर ही अंदर घुट रही है। कोई ऐसी बात है जो वो उसे भी नहीं बताना चाहती। नम्रता रविवार की सुबह ही सोनिया के घर पहुंची और सोनिया की मम्मी से मिली।

“नम्रता, कहो कैसी हो? बहुत दिनों बाद आई हो। कैसे आना हुआ?” सोनिया की मम्मी ने बड़े ही प्यार से पूछा।

“ठीक हूँ आंटी! सोनिया से मिलने आई हूँ।” नम्रता ने कहा।

कुछ देर इधर-उधर की बातें करने के बाद नम्रता ने पूछा, “आंटी! सोनिया कहीं दिखाई नहीं दे रही, कहीं बाहर गई है क्या?”

“यहीं कहीं होगी, मुझे बताकर कहां जाती है।” कुछ अनमने अंदाज में सोनिया की मम्मी ने कहा।

तभी सोनिया बाहर से आकर बिना नम्रता और मम्मी की ओर देखे ही अपने कमरे में चली गई। यह देखकर नम्रता को कुछ अजीब सा लगा। वो खुद ही सोनिया के कमरे की ओर चल दी। “अच्छा आंटी, सोनिया आ गई है मैं जरा उससे मिल लूँ।”

“ठीक है बेटा!” सोनिया की मां ने कहा।

“हाय सोनिया! क्या तुमने मुझे देखा नहीं था।” चहक कर नम्रता ने पूछा। “मेरे सिर में दर्द है शायद इसीलिए दिखाई नहीं दिया होगा।” टालते हुए सोनिया ने कहा।

“आखिर क्या बात है सोनिया, अगर तू मुझे अपनी सबसे अच्छी सहेली मानती है तो मुझे सब कुछ बता दे।” नम्रता ने सोनिया का सिर अपने कंधे पर झुकाते हुए कहा। सोनिया के आंसू छलक गए। वह बोली, “पता नहीं पापा की मृत्यु के बाद मम्मी को क्या हो गया है वो बात-बात पर मुझे डांटती हैं। हम दोनों में हर रोज किसी न किसी मामूली बात पर बहस शुरू हो जाती है। बहुत दिनों से हमने आपस में बात भी नहीं की। जब पापा को याद करके मुझे रोना आता है तो मम्मी मुझे चुप भी नहीं कराती। लगता है पापा के बाद मैंने मम्मी को भी खो दिया है।” यह कहकर सोनिया रो पड़ी। “तू रो मत सोनिया, तेरी परेशानी मैं समझ गई हूँ।” नम्रता ने कहा।

“एक बात सच-सच बताओ अगर मैं कहूँ कि तुम्हारी मम्मी बहुत खराब हैं तो क्या तुम इस बात को मानोगी?”



नम्रता ने कहा।

“नहीं नम्रता, मेरी मम्मी बहुत अच्छी हैं पता नहीं अब वो मुझसे ऐसा व्यवहार क्यों करने लगी हैं।” सोनिया ने उत्तर दिया।

“देख सोनिया, मैं तुम्हें और तुम्हारी मम्मी को बहुत दिनों से जानती हूँ। मुझे यह पहले से ही मालूम है कि तू अपनी मम्मी को बहुत प्यार करती है। तुम्हारे जवाब से मुझे इस बात का यकीन भी हो गया कि तुम आज भी अपनी मम्मी को बहुत प्यार करती हो लेकिन आजकल तुम उनके बदले हुए व्यवहार से परेशान भी हो। यह भी एक सच्चाई है।” नम्रता का कहा एक-एक शब्द सोनिया सिर झुकाए सुनती जा रही थी।

“तुम्हारी मम्मी के बदले हुए व्यवहार का कारण है तुम्हारे पिता की मृत्यु जिसकी वजह से तुम्हारे पालन पोषण की जिम्मेदारी उन पर आ गई है। तुम्हारे पिता की मृत्यु के बाद आर्थिक समस्याओं को लेकर वो बहुत चिंतित रहती हैं। तुमने कभी इस बात पर गौर ही नहीं किया होगा।”

“तुम सही कह रही हो मैंने कभी मम्मी की इस परेशानी के बारे में नहीं सोचा।” सोनिया ने गम्भीरता से कहा।

सोनिया के पश्चाताप भरे शब्दों को सुनकर नम्रता फिर बोली, “एक बात और बता, जब तुम्हारी मम्मी तुम पर अपनी झल्लाहट उतारती हैं तो तुम क्या करती हो?” थोड़ी देर चुप रहने के बाद सोनिया बोली, “मैं उनसे सहमत नहीं होती। देर तक हम दोनों में बहस चलती रहती है। बाद में वो अपने कमरे में जाकर खूब रोती हैं।”

“देखो सोनिया, अगर तुम अपनी मम्मी से सचमुच प्यार करती हो तो उनसे बहस करके उनकी परेशानियाँ और नहीं बढ़ाओगी।” नम्रता ने कहा।

“क्या मैं मम्मी से बहस न करूँ तो वे खुश रहेंगी।” सोनिया ने विस्मय से पूछा।

“हां बिल्कुल। बातचीत करने के कुछ तौर तरीके होते हैं, अगस्त-1999.46



निवेदिता

हैं। जिन्हें कम्युनिकेशन स्किल्स कहते हैं। जिसे हम अपने अनुभवों से सीखते हैं। बहस न करके चुप रहना भी एक कला है। तुम इसे अपना कर देखो।” नम्रता ने कहा। इस पर सोनिया बोली, “नम्रता, मुझे लग रहा है मैं ही गलती पर थी। मुझे अपनी माँ का ध्यान रखना चाहिए था। अब मैं इस बात का पूरा ध्यान रखूंगी।”

कुछ ही महीनों बाद जब सोनिया और उसकी मम्मी में काफी घनिष्टता हो गई तो सोनिया ने नम्रता का शुक्रिया अदा किया और कहा, “नम्रता, तेरी सलाह मानकर मैंने मम्मी से बहस करना बंद कर दिया है। अब मैं पहले से भी ज्यादा उनके नजदीक हूँ। वो भी मुझे बहुत प्यार करने लगी हैं। मुझसे कहती हैं कभी मैं क्रोध करूँ तो तुम बुरा मत माना करो। उन्हें मुझसे काफी आशाएं हैं। इसलिए अब मैं भी अपनी पढ़ाई के प्रति ज्यादा जागरूक हूँ। मैं उन्हें हमेशा खुश देखना चाहती हूँ।”

सोनिया के अंदर यह परिवर्तन देखकर नम्रता को बहुत अच्छा लगा। उसने कहा, “मुझे उम्मीद है यदि दूसरे बच्चे भी अपने माता-पिता की भावनाओं को समझें और उनका आदर करें तो उन्हें ईश्वर की कृपा अवश्य प्राप्त होगी। उनके माँ-बाप हमेशा उन्हें प्यार देते रहेंगे।”

आप भी बच्चों से संबंधित अपनी समस्याएं हमें भेज सकते हैं। निवेदिता (साइकोलॉजिस्ट) आपकी समस्याओं का समाधान करेंगी। पत्र लिखें: राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84. —संपादक





## जेवर दुगने

एक श्रद्धालू महिला कमला देवी साधु-संन्यासियों की खूब सेवा करती थी। उनके पति रामधन एक दुकान में मुनीमगिरी करते थे। घर में रुपयों-पैसों की तंगी बनी ही रहती थी।

एक दोपहर वह घर में अकेली थी। बम-बम करता एक साधु आया। श्रद्धा से लथपथ कमला ने उन्हें बिठाया। साधु ने बताया कि वर्षों हिमालय में तपस्या करने के बाद सिद्धि प्राप्त कर वह उस जैसी भक्तियों का उद्धार करने संसार में उतरा है। उसने मंत्र द्वारा सोना-चांदी दुगना करने की शक्ति प्राप्त कर ली है। उसने कहा कि तुम भी घर का सारा सोना-चांदी दुगना करवा कर अपने कष्ट दूर कर लो।

कमला को लगा कि उसकी वर्षों की सेवाओं का फल मिल गया। वह अपने सारे सोने-चांदी के जेवर ले आई। साधु ने मंत्र पढ़ते हुए जेवरों की एक पोटली बनाई। फिर उसने कमला को एक मंत्र बताया और आंखें बंद कर 108 बार उसका जाप करने के लिये कहा। जाप के दौरान आंखें न खोलने का आदेश दिया। कमला ने मंत्र का 108 बार जाप कर आंखें खोलीं तो देखा कि साधु पोटली समेत रफूचक्कर हो चुका था।

सोना-चांदी तो दुगना हुआ नहीं, हां कमला की मूर्खता के कारण रामधन के दुख जरूर दुगने हो गए। अगर मंत्रों द्वारा सोना दुगना करना संभव होता तो सरकार किसी साधु को पकड़ देश का सोने का भण्डार दुगना करवाती और देश का सारा विदेशी कर्ज एक ही बार में चुका देती।

—भरत







## घोड़ा आदमी का गुलाम

आदिकाल की बात है। जंगल में मनुष्य, जानवर और पक्षी स्वतंत्र रूप से रहते थे। एक दिन पशु-पक्षियों में किसी बात पर झगड़ा होने लगा। जंगल के कुछ बड़े जानवरों ने आगे आकर जानवरों को शांत किया। फिर जानवरों ने मिल कर निर्णय किया कि किसी एक जानवर को मुखिया बनाया जाए और सब उसका आदेश माना करें। ऐसा करने से फिर कोई किसी से झगड़ा नहीं करेगा।

लेकिन मुखिया किसे बनाया जाए? हर जानवर मुखिया बनने के लिए शोर मचाने लगा। तभी बाघ ने कहा, “देखो, हम सब जानवरों में मनुष्य सबसे बुद्धिमान है। इसलिए उसको बुलाकर मुखिया का चुनाव कराया जाए।”

अब प्रश्न उठा मनुष्य को जंगल के दूसरे किनारे से कौन बुलाकर लाए? सब ने एक दूसरे को जाने के लिए कहा, लेकिन कोई भी जानवर मनुष्य को बुलाकर लाने के लिए तैयार नहीं हुआ। तभी घोड़े ने मन ही मन कुछ सोचा। यदि मैं मनुष्य को लेने चला जाऊं तो रास्ते में उसे सिखा दूंगा। मनुष्य मुझे ही मुखिया बना देगा। यह सोचकर घोड़ा मनुष्य को बुलाने के लिए तेजी से चल पड़ा।

कुछ ही देर में घोड़ा मनुष्य के पास पहुंच गया और उसे मुखिया चुने जाने की सारी कहानी

सुनाई। मनुष्य ने कहा, “घोड़े भाई, मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूं, लेकिन इतनी दूर चल नहीं सकता।”

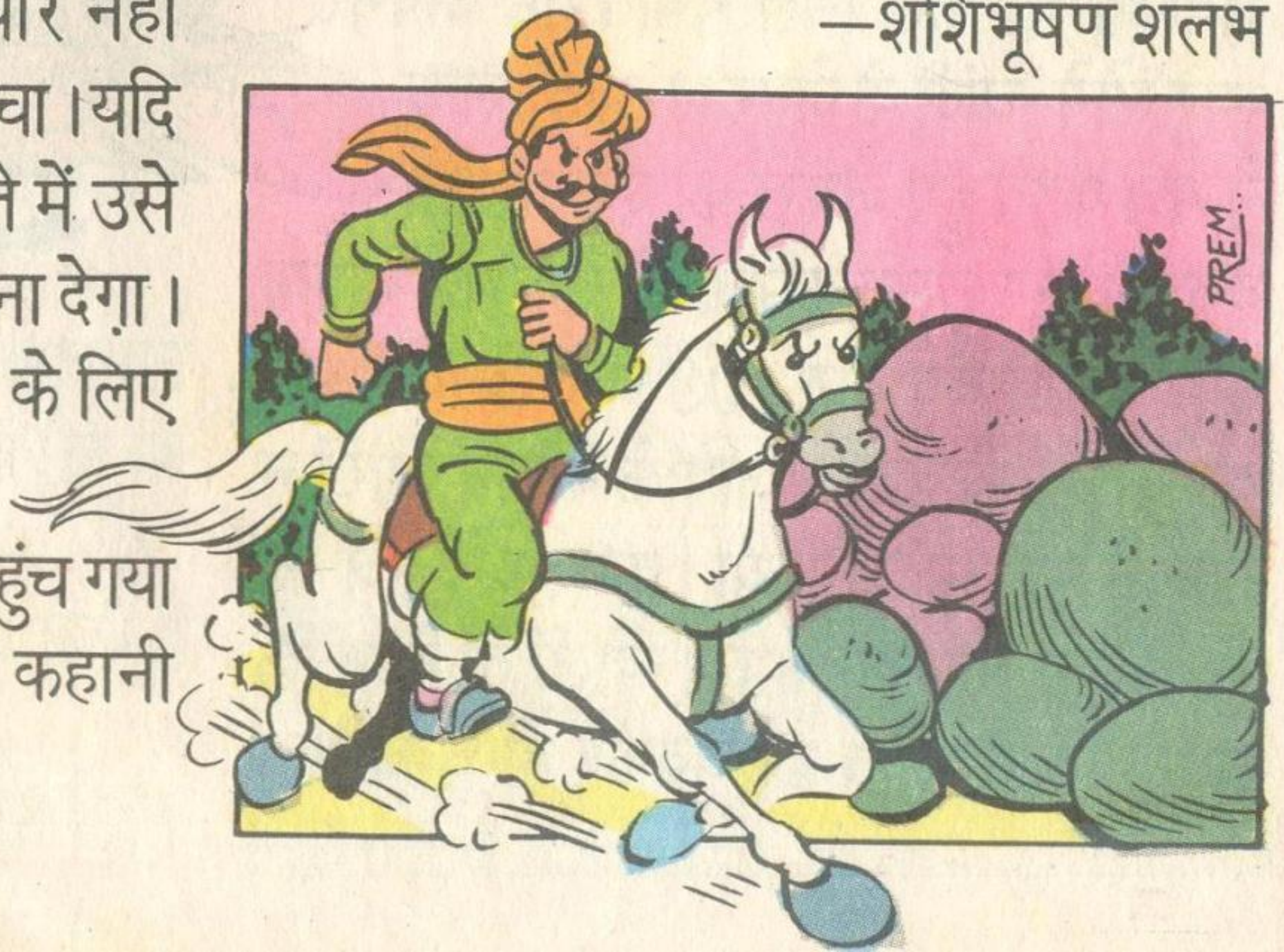
घोड़े ने कुछ सोच कर कहा, “आप उसकी चिंता न करें। मेरी पीठ पर सवार हो जाएं। मैं आपको थोड़ी देर में वहां पहुंचा दूंगा।”

“अरे भाई! तुम्हारे तेज दौड़ने से तो मैं गिर जाऊंगा। न...न...मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता।” मनुष्य ने कहा।

“डरो नहीं। आप मेरे गले में एक रस्सी बांध कर, उसे पकड़ कर आराम से पीठ पर बैठ जाओ। फिर आप नहीं गिरोगे।” घोड़े ने उत्तर दिया।

मनुष्य ने घोड़े के गले में रस्सी बांधी और उछल कर पीठ पर सवार हो गया। आदमी को लगा कि यह तो सवारी का उत्तम साधन है। उस दिन घोड़ा सब जानवरों का मुखिया तो नहीं बना लेकिन मनुष्य का गुलाम अवश्य बन गया। आज तक घोड़ा मनुष्य का गुलाम बना हुआ है।

—शशिभूषण शलभ





# बोनी



## कौन बड़ा बेवकूफ

लेखक: हनीफ अजहर

चित्र: आकाश

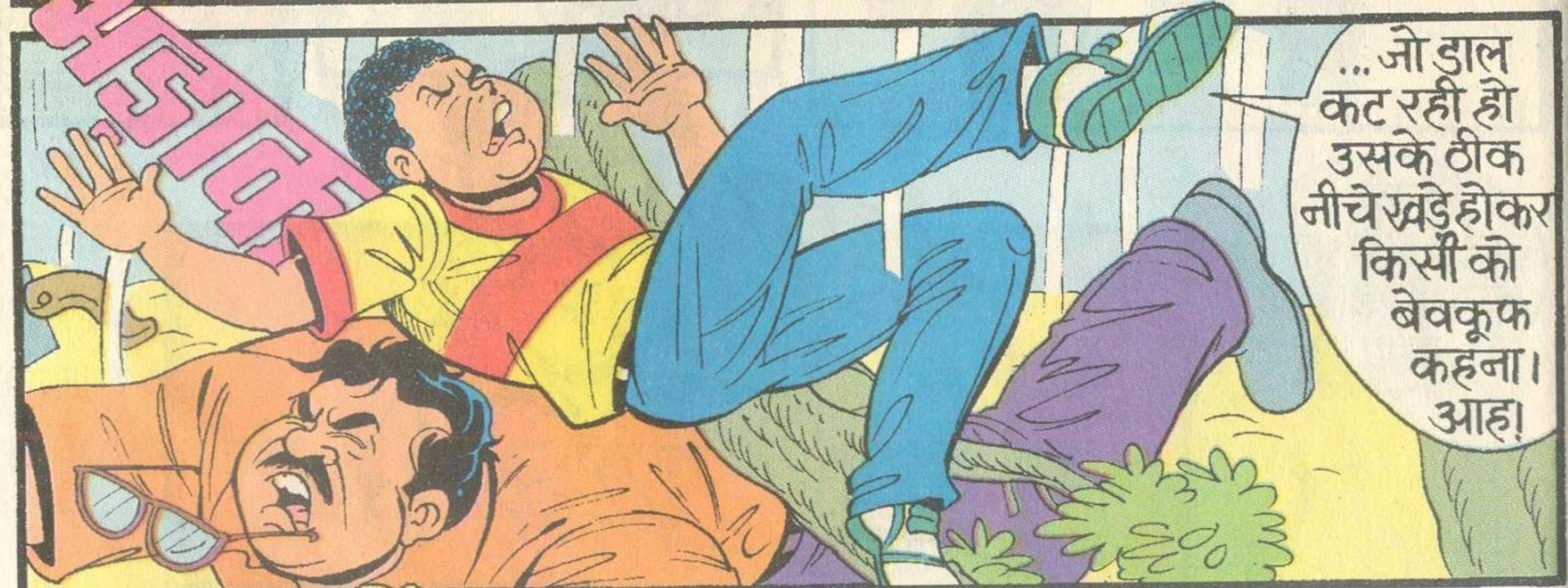
एक सुहाना दिन-



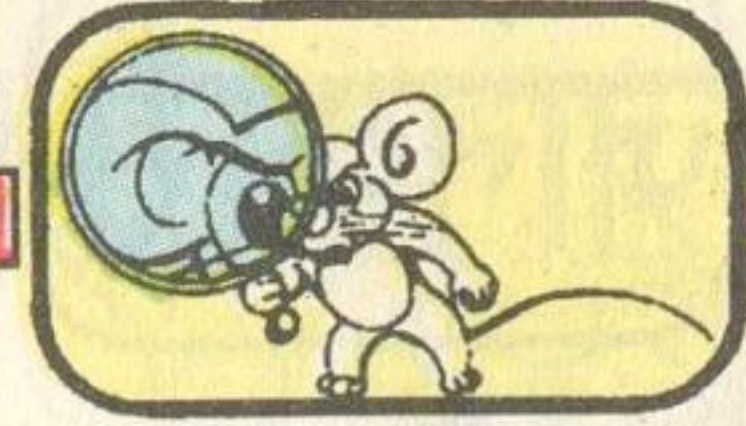
देखें!  
बोनी ढंग से काम  
कर भी रहा है या  
नहीं।











## सिगरेट से हानि

सिगरेट के धुएं में निकोटीन, कार्बन मोनोक्साइड, नाइट्रोजन, निकल, टार, हाइड्रोजन, क्लोराइड की तरह लगभग 24 विषैले तत्व पाए जाते हैं। इन विषैले तत्वों के कारण ब्रांकोइटिस, क्षयरोग, अस्थमा, स्नायविक दौर्बल्य, कैंसर, हृदय रोग, मोतियाबिंद, उच्च रक्तचाप, पक्षाघात (लकवा), आमाशय का अल्सर, मिर्गी इत्यादि रोग होते हैं।

एक सिगरेट में विद्यमान निकोटीन को इंजेक्शन द्वारा किसी व्यक्ति के शरीर में पहुंचा दिया जाए तो उस व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। एक सिगरेट प्रतिदिन पीने से मनुष्य की आयु पांच मिनट कम हो जाती है। प्रतिवर्ष भारत में सिगरेट पीने के कारण 9 लाख व्यक्ति मृत्यु का शिकार होते हैं जिनमें 90 प्रतिशत कैंसर, 75 प्रतिशत अस्थमा और 25 प्रतिशत हृदय रोगों के कारण मृत्यु का शिकार बनते हैं। धूम्रपान करने वाली स्त्रियों के शिशु अधिकतर विकलांग जन्म लेते हैं। ऐसे बच्चे श्वास रोगों से अधिक पीड़ित होते हैं।

सिगरेट पीने वालों की अपेक्षा उसके आसपास रहने वाले लोगों को अधिक हानि पहुंचने की संभावना रहती है। सिगरेट के छोड़े गए धुएं के सम्पर्क में आने से सभी घातक विषैले तत्व सिगरेट नहीं पीने वाले के शरीर में

पहुंचकर कैंसर और अस्थमा जैसे रोगों की उत्पत्ति करते हैं।

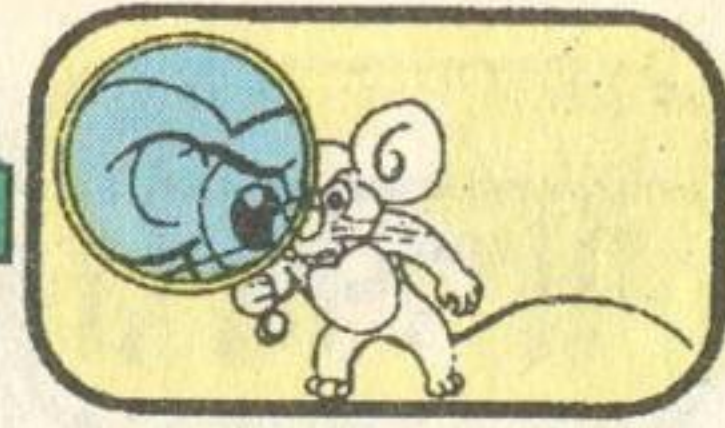
## चाकू से काटने पर अमरुद काला क्यों हो जाता है?

बच्चो! तुमने चाकू से बहुत से फल काट कर खाएंगे। तुमने अमरुद को भी चाकू से अनेक बार काट कर खाया होगा। कभी तुमने कटे हुए अमरुद को थोड़ी देर रखने पर देखा होगा कि उसमें कालापन आ गया है। तब तुमने सोचा होगा कि चाकू को साफ करके नहीं काटने के कारण अमरुद काला पड़ गया है। लेकिन अमरुद का कालापन चाकू को साफ नहीं करने के कारण नहीं हुआ। चाकू कितना ही साफ करके अमरुद काटा जाए, अमरुद कुछ देर में काला हो ही जाएगा। ऐसा क्यों होता है? अच्छा तो हम तुम्हें बताते हैं।

अमरुद में लौह तत्व 100 ग्राम में 1.4 मिलीग्राम की मात्रा में होता है। जब तुम अमरुद को चाकू से काटते हो तो उसकी कटी सतह वायु के सम्पर्क में आती है, तब अमरुद में उपस्थित लोहा आक्सीकृत होकर लोहे का आक्साइड बना देता है। इन प्राकृतिक रासायनिक क्रियाओं के कारण अमरुद का रंग कटने पर काला हो जाता है।

—शशिभूषण शलभ  
फैंग, अगस्त-1999.51





## कैसे हुआ जूतों का आविष्कार

जूते हमारे दैनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गए हैं। किसी को किसी तरह के जूते पसंद होते हैं तो किसी को किसी तरह के, लेकिन जानते हो जूतों की शुरुआत कब हुई थी या उनका आविष्कार कैसे हुआ था?

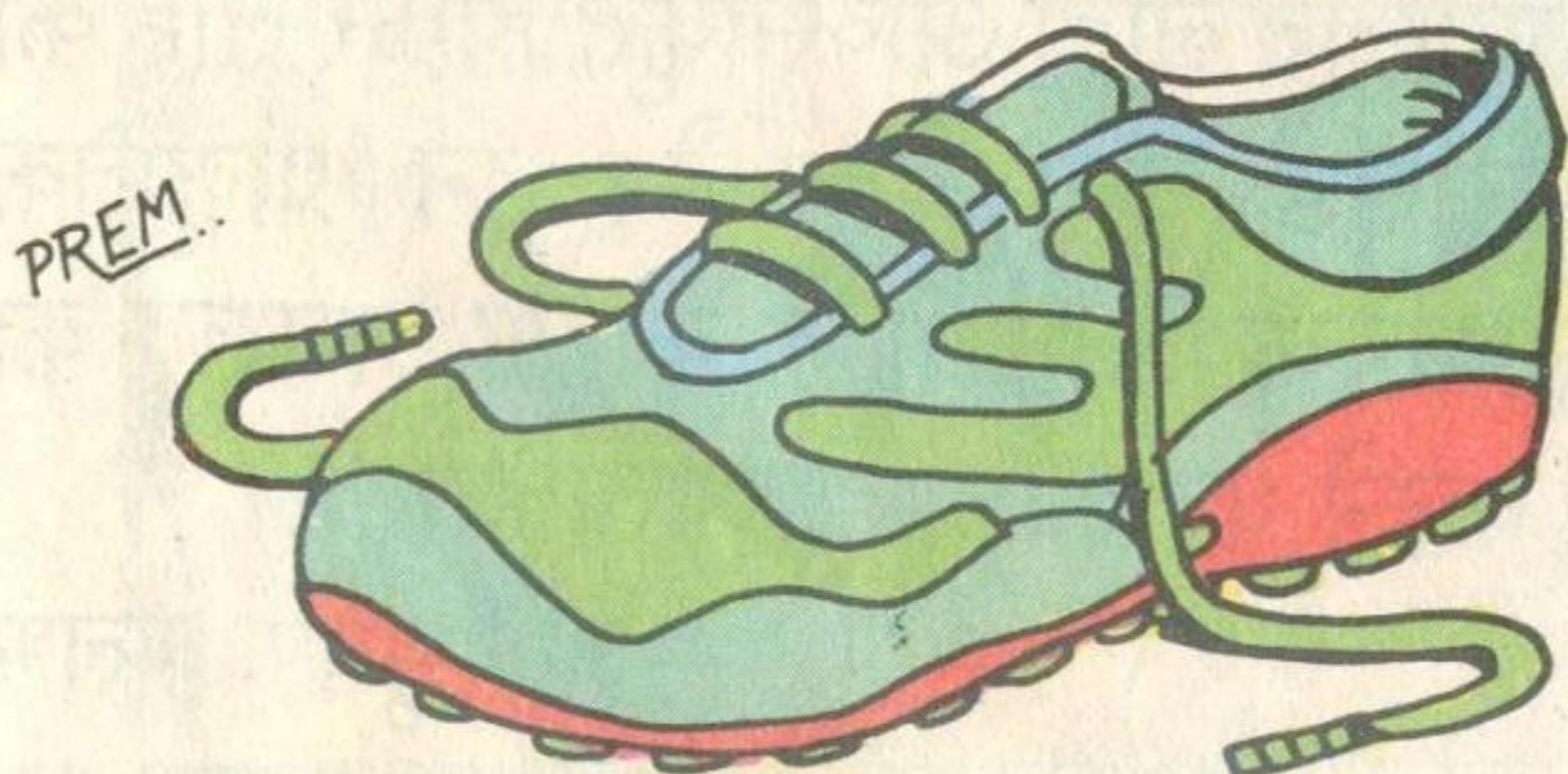
हमारे पूर्वज जब सभ्यता के आरंभिक चरण में, गुफाओं में रहते थे, उन्हें पथरीली चट्टानी राहों को नंगे पांव ही पार करना पड़ता था। जिससे जाहिर है कि पैर लहुलूहान हो जाते थे। इनसे बचने के लिए ही आदि मानव ने पैरों को घास की चटाई और जानवरों की

खाल से ढकना शुरू किया। परिणाम सामने था, पैर घायल होने से साफ बच जाते थे।

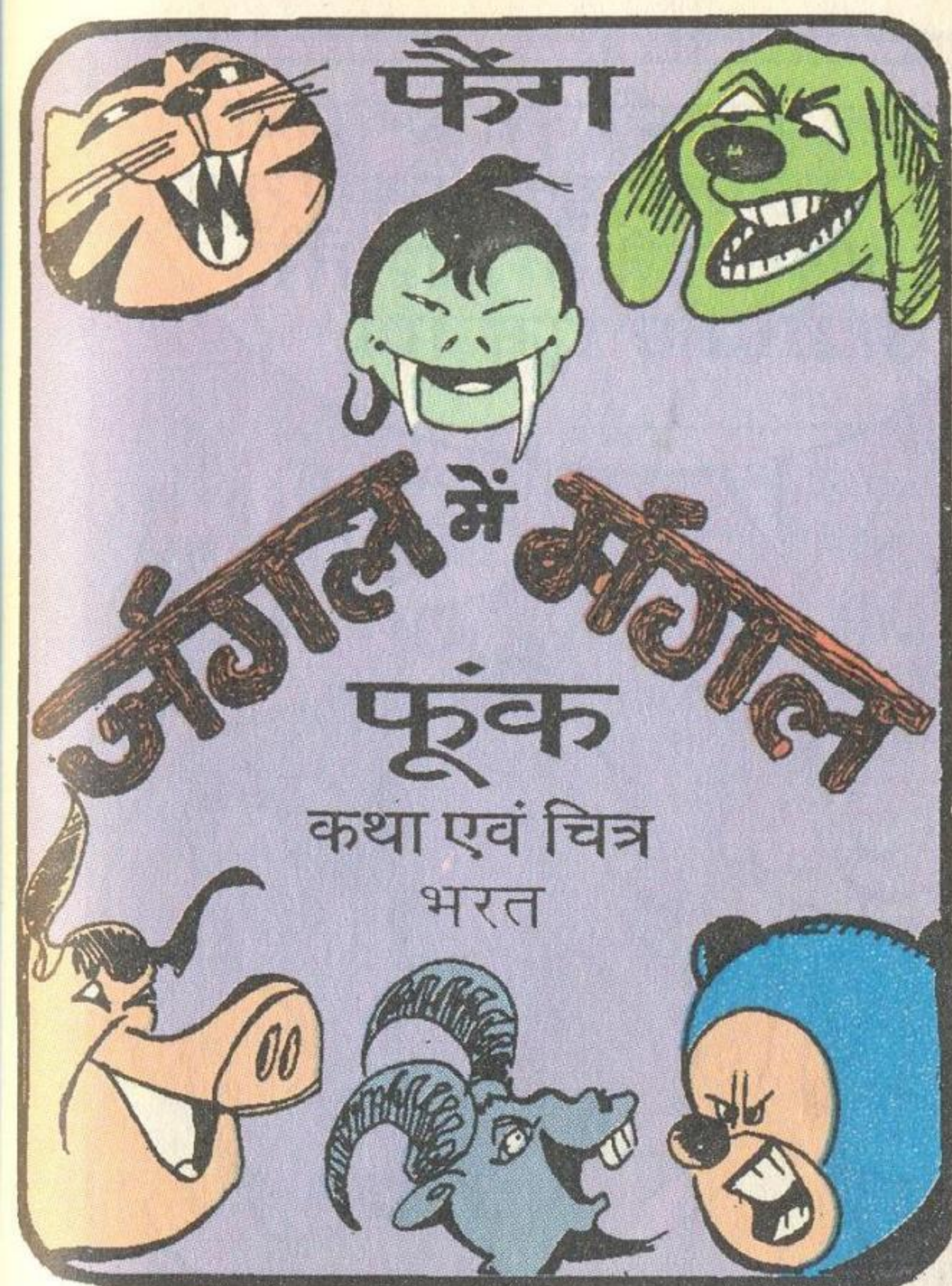
जूतों का निर्माण सर्वप्रथम मिस्री सभ्यता की देन है। यहां के लोगों ने ऐसे जूते बनाये जिनमें तला चमड़े या पानी में पैदा होने वाले एक पौधे का होता था। इस तले को चमड़े की दो पट्टियों से पांव में बांध लिया जाता था। पैर के अंगूठे और उंगलियों की सुरक्षा के लिए इस तले को आगे से मोड़ भी दिया जाता था। ऐसे जूते ईसा से करीब 2000 वर्ष पूर्व मिस्र देश से प्राप्त नमूनों में मिले हैं। जहां ठंड का प्रकोप ज्यादा था वहां जूते दूसरी तरह से बनाए जाते थे। यहां के लोग चमड़े के थैलों में घास के पैड लगाकर पैरों पर पहनते थे और इस थैले के भीतर पैर रखकर ऊपर से रस्सी से बांध लेते थे।

सभ्यता के साथ जूतों के डिजाइन परिवर्तित होते गए। इटली, फ्रांस और इंग्लैंड इत्यादि देशों में मुख्यतः आधुनिक डिजाइनों के जूतों का निर्माण प्रारंभ हुआ। सोलहवीं सदी में जूते आगे से चौड़े होते थे जबकि सत्रहवीं सदी में ऊंची एड़ी के जूतों का रिवाज था।

आजकल तो जूतों के आकार व डिजाइनों में ही अभूतपूर्व परिवर्तन देखने में आ रहा है। साथ ही साथ जूतों के भाव भी आसमान छूने लगे हैं।













# हिना

## कितनी गर्म चाय

चित्र व कथा: अजहर

मेरे पापा बहुत गर्म चाय पीते हैं! प्याला आते ही वे उसे झट से पी जाते हैं।

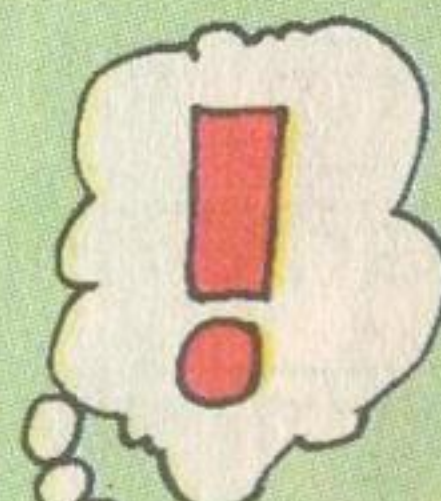
इससे ज्यादा गर्म चाय तो मेरे पापा पीते हैं। वह चाय पीने किचन में ही चले जाते हैं।

मेरे पापा तो इतनी गर्म चाय पीने के शौकीन हैं कि चाय को कप में डालते ही नहीं सीधा पतीले से मुंह लगाकर उबलती चाय पी जाते हैं।

हिना मना कहां चुप रहने वाली थी -

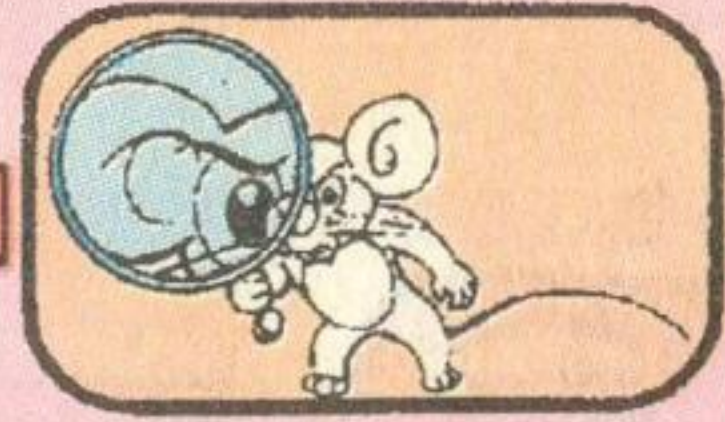
ये तो कुछ भी नहीं मेरे पापा तुम सबके पापा से गर्म चाय पीने के शौकीन हैं!

वे पहले चीनी खाते हैं फिर चाय की पत्ती खाकर दूध और पानी पी जाते हैं और फिर जलते हुए गैस चूल्हे पर बैठ जाते हैं।



समाप्त





## कारगिल की कहानी

भारत का उत्तरी छोर... कारगिल! संसार का सबसे बीहड़, दुर्गम, वीरान और बर्फीला इलाका, जिसका तापमान सर्दियों में  $-50^{\circ}\text{C}$  से भी नीचे पहुंच जाता है, जहां पेड़ पौधों के भी दर्शन नहीं होते, ऐसे बियाबान इलाके में इंसान की कल्पना तक नहीं की जा सकती, किन्तु 6 मई 1999 को कारगिल की वीरान पहाड़ियों पर कुछ अपरिचित मानवों को हरकत करते हुए देखा गया। सीमा पर चौकसी करते भारतीय फौज के जवान फौरन समझ गए कि ऐसा दुस्साहस दुश्मनों के अलावा कोई नहीं कर सकता और इन दुश्मनों का एकमात्र उद्देश्य दरास, कारगिल और बटालिक के तीन सौ वर्ग किलोमीटर में फैले दुर्गम दरों के रास्ते भारत में घुसपैठ करके आतंकवादी गतिविधियां जारी रखना है।

भारतीय थल सेना के जवानों ने 9 मई को इन घुसपैठियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। घुसपैठिए पहाड़ियों की चोटी पर और चट्टानों की ओट से भारतीय सेना की स्थिति और संख्या पर निगरानी रखते हुए गोलाबारी कर रहे थे, जबकि भारतीय सेना नीचे घाटी में थी। स्थिति अत्यंत विषम थी, किन्तु हमारे फौजियों ने हिम्मत न हारी और पूरे साहस एवं दृढ़ता के साथ मोर्चे पर डटे रहे। अन्ततः 26 मई को भारतीय वायु सेना ने पहली बार कारगिल में घुसपैठियों के ठिकानों पर लड़ाकू विमानों से बमवर्षा की।

कारगिल में 1990 से लेकर 1998 तक के फैंग, अगस्त-1999.56

अर्से में 961 सुरक्षा कर्मचारी और 3237 नागरिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी, जबकि 2878 सुरक्षा कर्मचारी और 6019 नागरिक घायल हुए। एक रिपोर्ट के अनुसार इन गतिविधियों में 2000 करोड़ रुपए की निजी प्रॉपर्टी का नुकसान हुआ और लगभग तीन लाख की आबादी दर-ब-दर हो गई।

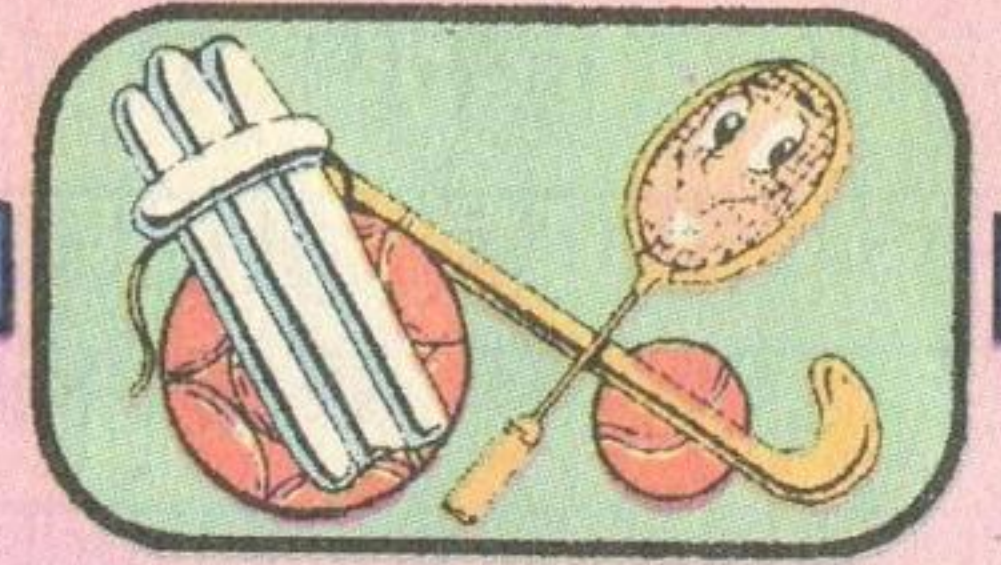
इस क्षेत्र की सैन्य संबंधी कार्यवाहियों पर मुल्क इतना जानोमाल गंवा रहा है, आखिर इस वीरान और बर्फीले क्षेत्र का महत्व क्या है? आर्थिक दृष्टि से संभवतः कुछ भी नहीं, किन्तु कारगिल सामरिक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण इलाका है। जिस पर पाकिस्तान 1947 से ही कब्जा जमाने का निरंतर प्रयास करता रहा है। भारतीय सेना ने बार-बार इसका मुंहतोड़ जवाब दिया है।

कारगिल हमारा था, हमारा है और हमारा ही रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भले ही उसका महत्व न हो, वह वीरान दुर्गम और बर्फीला हो, किन्तु हमारे लिए कारगिल सोना है, सुंदर है और सम्मानीय है।

पाक भले ही कारगिल को हड़पने की अपनी अनंत नापाक कोशिशें करे, हम अपने मुल्क की सुई की नोक के बराबर भी भूमि उसे नहीं देंगे। इस भूमि को हमारे वीर जवानों ने अपने लहू से सींचा है। हम उनका अपमान नहीं होने देंगे। यही हमारा धर्म भी है और कर्तव्य भी।

—एम आई. राजस्वी

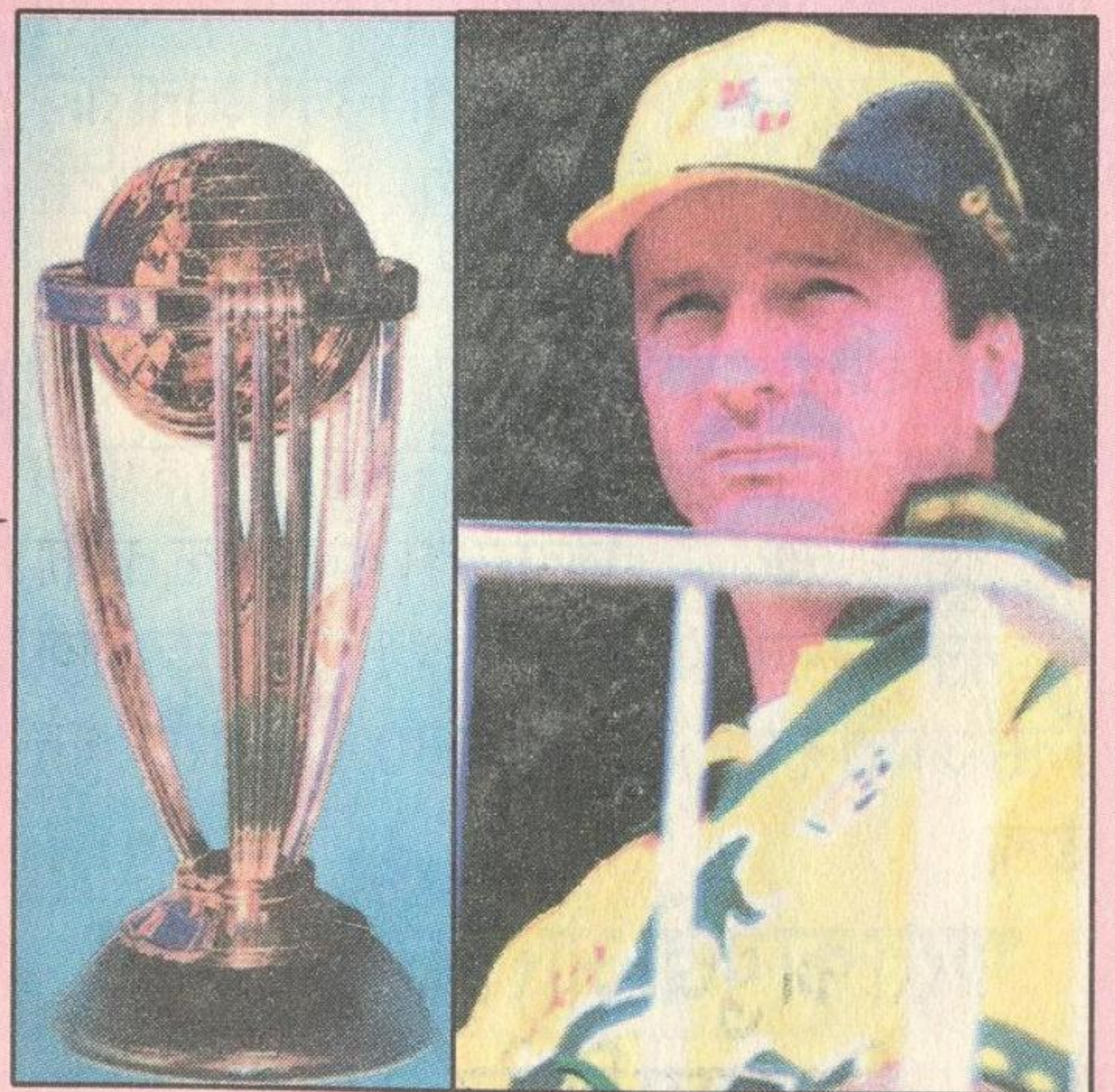




## क्रिकेट विश्व कप-1999 के यादगार मैच आस्ट्रेलिया विरुद्ध द.अफ्रीका

सुपर सिक्स और सेमीफाइनल में तीन दिनों के अंतराल से खेले गए दोनों मैच इतने संघर्षपूर्ण और रोमांचक रहे कि सारा क्रिकेट जगत आनन्दित हो उठा। ये मैच जुझारूपन की ऐसी मिसाल कायम कर गया कि फाइनल मैच का महत्व काफी कम हो गया। उपरोक्त टीमों के बीच खेले गए दोनों मैच आस्ट्रेलिया ने अपने अंतिम सांस की आखिरी दौर तक लड़ने की प्रवृत्ति के बल पर जीत लिये। वह भी अंतिम ओवरों की आखिरी बॉलों में। सुपर सिक्स में जब दोनों टीमों में भिड़ी तो द.अफ्रीका ने पहले बल्लेबाजी कर 271 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। जवाब में आस्ट्रेलिया के कप्तान स्टीव वॉ के इरादे कुछ और थे। उन्होंने पारी को संभाला। जब वे 56 रनों पर थे तो उन्होंने एक कैच दिया। जिसे हर्शल गिब्ज ने पकड़ा तो, पर खुशी में गेंद उछालने के क्रम में हाथ से गेंद छूट गई व कैच नकार दिया गया। आस्ट्रेलिया के खिलाड़ी विरोधी खिलाड़ियों पर फिकरे कस कर उनका मनोबल गिराने से कभी नहीं चूकते। स्टीव वॉ ने गिब्ज से कहा, “प्यारे, तूने अपने हाथ से विश्व कप गिरा दिया है।” और सचमुच उसके बाद वॉ ने मुड़ कर नहीं देखा और कप्तान की पारी खेलते हुए अविजित 120 रन बनाए आस्ट्रेलिया मैच 50 वें ओवर की चौथी बॉल पर विजयी रन बना कर जीता।

आस्ट्रेलिया केवल 213 रन ही जुटा पाया। जवाब में द.अफ्रीका ने बिना विकेट खोए 48 रन बनाए थे तो वार्न गेंदबाजी करने आए। शेनवार्न ने चमत्कारी गेंदबाजी कर आठ गेंदों में तीन विकेट चटका लिये। मैच का रुख पलटा। कॉलिस व जांटी रोड्स ने पारी संभाली। इन दोनों के आउट होने पर क्लूसनर ने स्कोर आगे बढ़ाया। अंतिम ओवर में द.अफ्रीका को जीतने के लिए 9 रन चाहिए थे। उनकी अंतिम जोड़ी मैदान में। आस्ट्रेलिया को एक विकेट चाहिए। फ्लेमिंग की पहली गेंद पर क्लूजनर



**क्रिकेट विश्व कप 1999 के विजेता  
आस्ट्रेलिया की टीम के कप्तान  
स्टीव वॉ**

तीन दिन पश्चात सेमीफाइनल भिड़ंत में द.अफ्रीका के पोलोको और डोनाल्ड की शानदार गेंदबाजी के सामने



ने चौका मारा। दूसरी गेंद पर भी चौका लगा। दोनों टीमों का स्कोर बराबर हो गया। अब द.अफ्रीका को चार गेंदों में केवल एक रन चाहिए था। फ्लेमिंग की तीसरी गेंद डॉट बॉल थी। कोई रन न बना। डोनाल्ड रन आउट होते होते बचे। फ्लेमिंग ने चौथी गेंद फेंकी। क्लूजनर सीधा आगे खेलकर दौड़ पड़े रन लेने। डोनाल्ड अपनी क्रीज पर खड़े रहे। बॉलर के पीछे से मार्क वॉ ने डाइव मार गेंद रोक कर फ्लेमिंग की ओर फेंका। बल्लेबाज एक ही छोर पर आ चुके थे। फ्लेमिंग ने बॉल विकेट कीपर की ओर सरकाया। डोनाल्ड हड़बड़ाकर रन लेने दौड़े तो, पर अभी मीलें दूर थे कि विकेटें बिखरा दी गईं। वे रन आउट हो गये। क्योंकि आस्ट्रेलिया पिछला मैच जीत चुका था। खेल के नियमों के अनुसार वही फाइनल में प्रवेश कर गया। इधर निराश व हताश क्लूजनर दौड़ते ही गए पवेलियन की ओर। उन्होंने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। उनमें इतना ताव नहीं रह गया था कि खुशी से एक-दूसरे से लिपटते आस्ट्रेलियाईयों को देख पाते।

इस जबरदस्त प्रदर्शन के बाद फाइनल में आस्ट्रेलिया का पाकिस्तान को हराना औपचारिकता मात्र रह गया। 20 जून के विश्वकप इतिहास का सबसे एक तरफा फाइनल खेला गया। पाकिस्तान मात्र 132 रन बना पाया जिसे आस्ट्रेलिया ने आसानी से 30.1 ओवरों में धुन डाला।

## भारत का दुखों और निराशाओं भरा विश्व कप क्रिकेट-1999

भारत के करोड़ों क्रिकेट प्रेमियों ने भारतीय टीम से क्रिकेट विश्व कप 1999 जीत कर लाने की जो निराधार आशाएं लगा रखी थीं वह टूट गईं भारत सेमीफाइनल तक में प्रवेश नहीं कर पाया। जिस टीम के पास कोई आलराउंडर नहीं था और जिसकी गेंदबाजी में कोई धार

नहीं उससे उम्मीद लगाना ऐसे ही था जैसे एक खच्चर से श्रेष्ठ घोड़ों की डर्बी रेस जीतने की आशा करना। अब दोष अंकों की पद्धति अथवा अजरुद्दीन की कप्तानी को दिया जा रहा है। वास्तव में वर्तमान विश्व कप में सेमीज में तीन तो वही टीम पहुंचीं जिनकी सबको आशा थी, पाकिस्तान, द.अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया। इसलिए दोष कहां साबित हुआ? साबित यही हुआ कि नाच न जाने आंगन टेढ़ा। इस सिस्टम में हर टीम को हर मैच फाइनल मान कर खेलना था। यहां तो हमारे खिलाड़ी जीती हुई बाजी हारने पर तुले थे। जैसे जिम्बाब्वे के विरुद्ध मैच में हुआ। जहां आरम्भिक बल्लेबाजों के असफल रहने पर बाकी देशों की टीमों के अन्तिम खिलाड़ियों ने बल्लेबाजी कर बहुत योगदान दिया वहीं भारत के अंतिम पांच खिलाड़ियों ने जैसे कसम खा रखी थी कि रन बनाने ही नहीं हैं। नयन मोंगिया ने तो बल्लेबाजी से नाता ही तोड़ लिया है। अजरुद्दीन की कप्तानी भी उखड़ी-उखड़ी रही। परन्तु वह न भी उखड़ा रहता तो मैच जीतने के लिए बॉलर वह क्या अपनी जेब से पैदा करता? सच्चाई तो यह है कि भारत की ओर से कोई टीम ही नहीं गई थी। केवल 11 खिलाड़ियों का एक जत्था गया था जिसमें से कुछ पेप्सी के लिए खेल रहे थे, कुछ कोका कोला के लिए। कुछ डैंडरफ हटाऊं शैम्पू के लिए खेल रहे थे, कुछ क्लोज अप टूथपेस्ट के लिए तो कुछ प्रिंस ऑफ कलकत्ता की छवि बनाए रखने के लिए जिनकी नजर केवल अपने शतक या अर्धशतक पर होती थी, जिसके लिए वह टिप-टिप करके बहुमूल्य ओवर नष्ट करके अपनी छवि बना रहे थे और टीम को हरा रहे थे। दूसरे देशों के खिलाड़ी अपने स्कोर की बजाए टीम का स्कोर देखते थे, कितने ओवर रहते हैं और टीम के लिए कितने और रन बनाए जा सकते हैं, केवल यह देखते थे। तो भैया, रोते क्यों हो? इस मैच में भारत की कोई टीम गई ही नहीं थी।



# फ्रेंडी

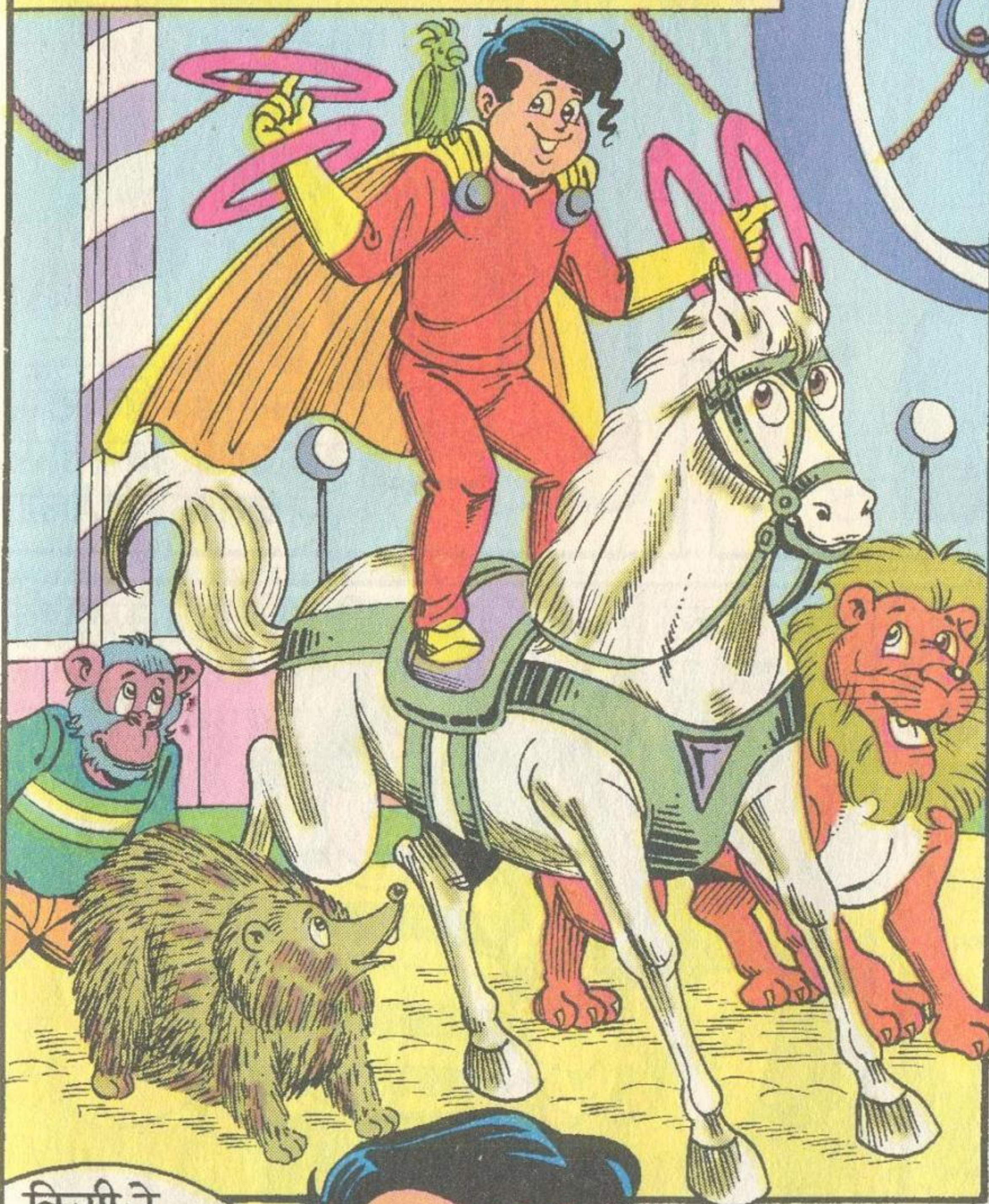


## हाय! कांटा चुभ गया

लेखक: हनीफ अजहर

चित्र: आकाश

फ्रेंडी सर्कस में अपने जानवर दोस्तों के साथ -



तभी वहां पहुंचा  
घबराया हुआ  
सर्कस का मालिक -

फ्रेंडी,  
फ्रेंडी!

क्या  
बात है सर! आप  
इतना घबराए  
हुए क्यों हैं?



किसी ने  
मेरे बेटे रासू  
का अपहरण कर  
लिया है  
और...

पचास हजार रुपए  
लेकर जंगल में  
आने को कहा  
है। ये देखो  
पत्र...





हाय, कांटा चुभ गया

ओह! आपको  
तुरंत पुलिस को  
संबर करनी  
चाहिए।

नहीं! मैं  
पुलिस के  
पास गया  
तो वे रासू  
को मार  
देंगे।

हम्म! इस विषय में  
मुझे अपने खास दोस्त  
से बात करनी होगी।

जल्दी ही-

पत्र में इसी  
जगह के  
बारे में  
लिखा था  
अपहरणकर्ता  
यहीं कहीं  
होंगे।

अपहरणकर्ता  
वहीं थे।

लगता है सर्कस के मालिक ने उस लड़के  
को फिरोती की रकम देकर भेजा है।







हाय, कांटा चुभ गया



Uploaded By: Bijay Mishra

फैंग, अगस्त-1999, 62

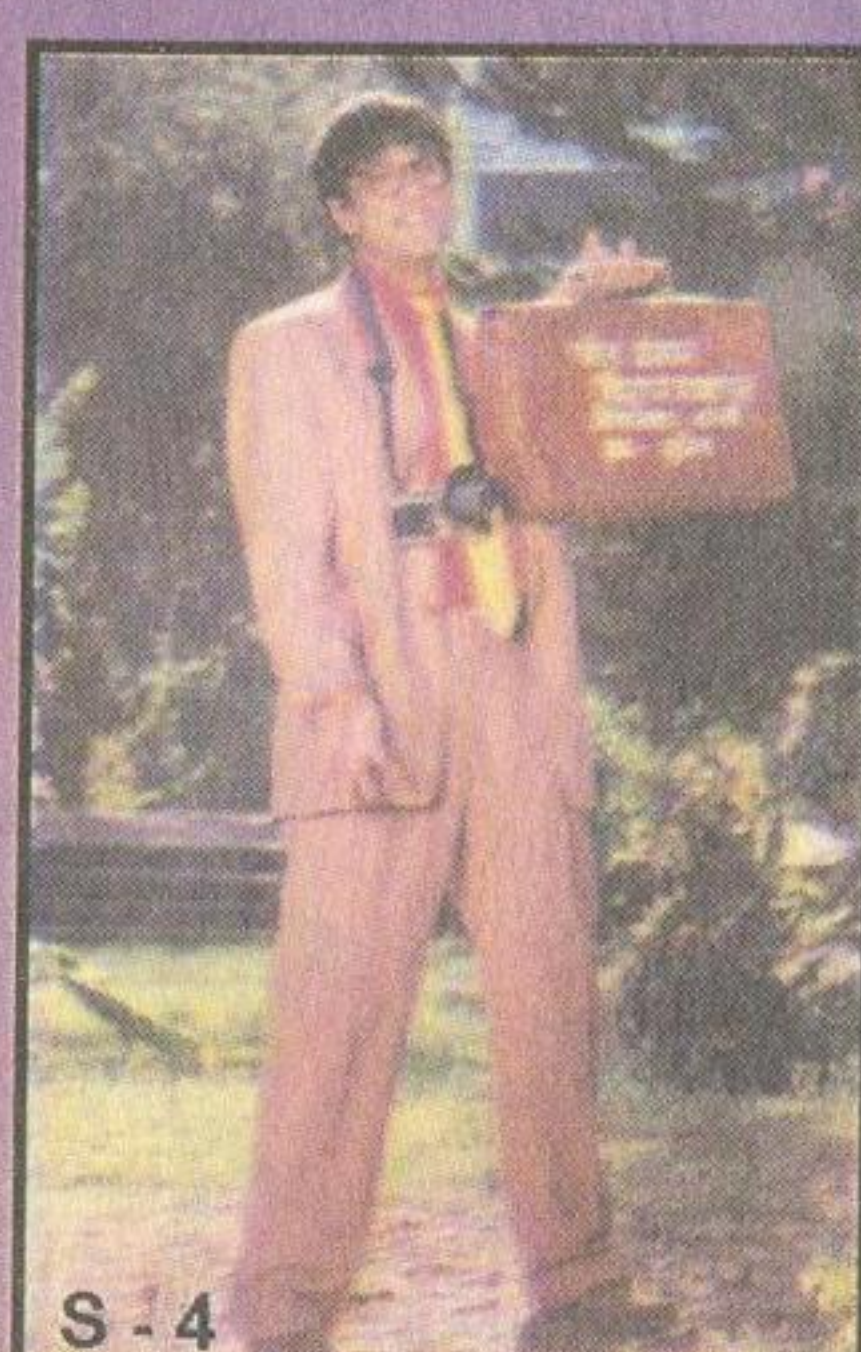
समाप्त •



राज कॉमिक्स पेश करते हैं

# शक्तिमान

व पंडित गंगाधर विद्याधर मायाधर ओंकारनाथ  
शास्त्री और विलेन्स के शानदार आठ पोस्टर



प्रत्येक  
पोस्टर  
11 इंच X  
17.25 इंच  
में

प्रत्येक का मूल्य 5/-

योजना:-आठों पोस्टर डाक द्वारा मंगाने के लिए 40 रुपये का मनीआर्डर भेजें। आठों पोस्टर मंगाने पर नागराज का एक पोस्टर मुफ्त। मनीआर्डर के निचले हिस्से में अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें व लिखें 'मुझे शक्तिमान के आठों पोस्टर भेजे जाएं।'।

पता: नागराज नावल्टीज, 330/2 बुराड़ी, दिल्ली-110084.



वाह! क्या नागराज नोट बुक है  
मन करता है बस लिखता ही रहूं



आज ही अपने शहर के  
कॉमिक विक्रेता स्टेशनरी  
शाप से खरीदें। न मिलने पर  
हमसे सम्पर्क करें।

**नागराज नावल्टीज**

330/1 बुराड़ी दिल्ली-84.

फोन नं. 7221410

313, दरीबा कलां, दिल्ली-6

फोन नं. 3278397

#### फैंग के स्वत्वाधिकार सम्बन्धी घोषणा

##### फार्म IV (नियम 8 देखें)

1. प्रकाशन स्थान: 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
2. प्रकाशन अवधि: मासिक
3. मुद्रक का नाम: मनोज गुप्ता,  
नागरिकता: भारतीय,  
पता: बी.एम-32, पश्चिमी शालीमार  
बाग, दिल्ली-110052
4. प्रकाशक: उपरोक्त
5. सम्पादक: उपरोक्त
6. स्वत्वाधिकारी: मनोज गुप्ता

मैं मनोज गुप्ता घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी  
जानकारी के अनुसार सही है।

हस्ताक्षर  
मनोज गुप्ता  
(प्रकाशक)

31 जुलाई 1999

Edited, Printed and Published by Manoj Gupta on  
behalf of M/s Raja Pocket Books, 330/1, Burari, Delhi-84,  
Printed at City Press, 11-A, Narayana Industrial Area  
New Delhi-110028.

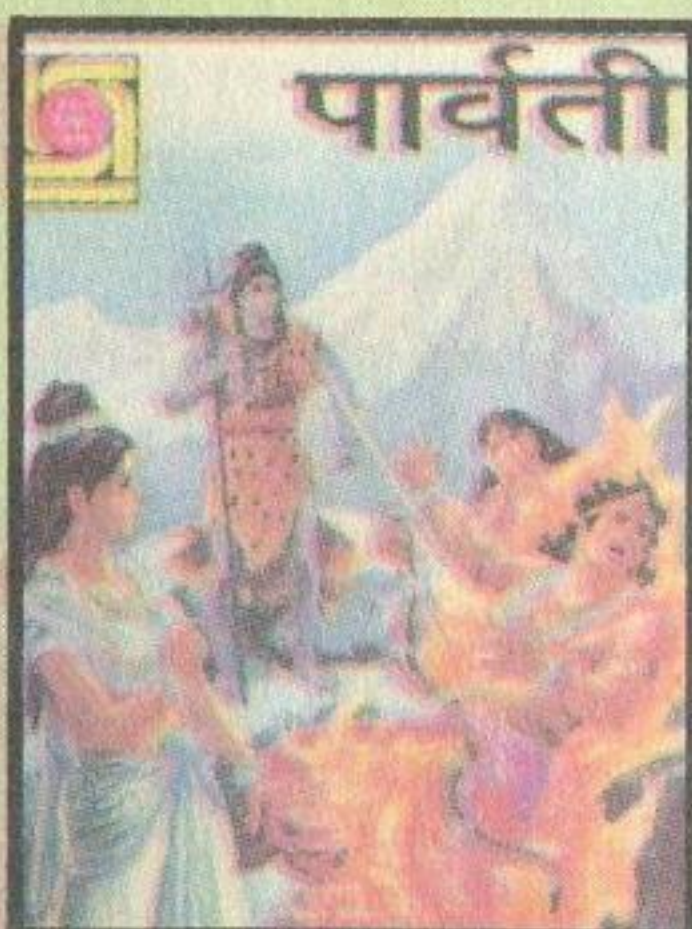
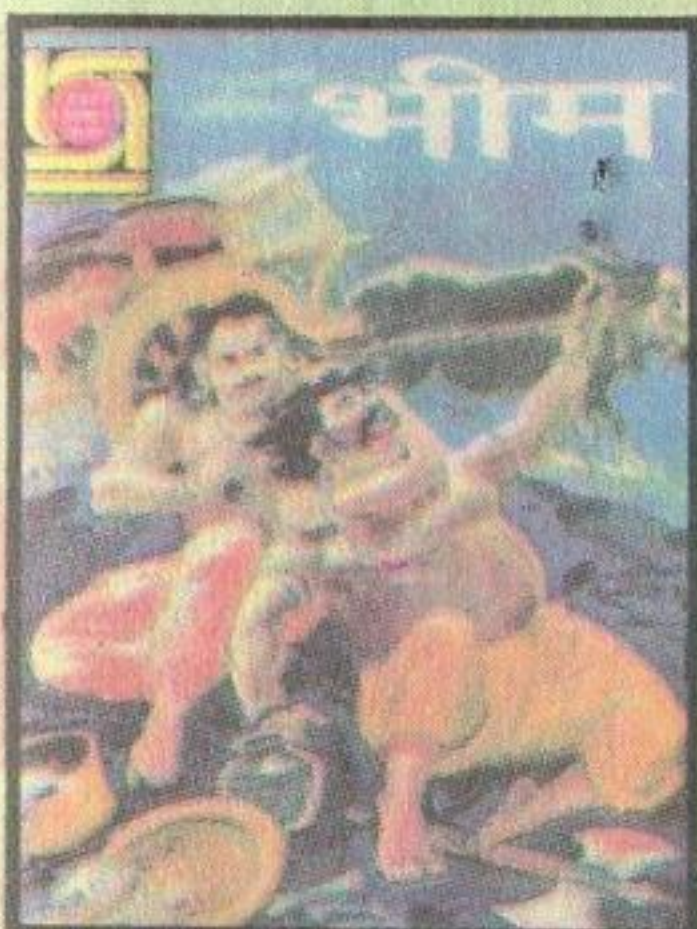
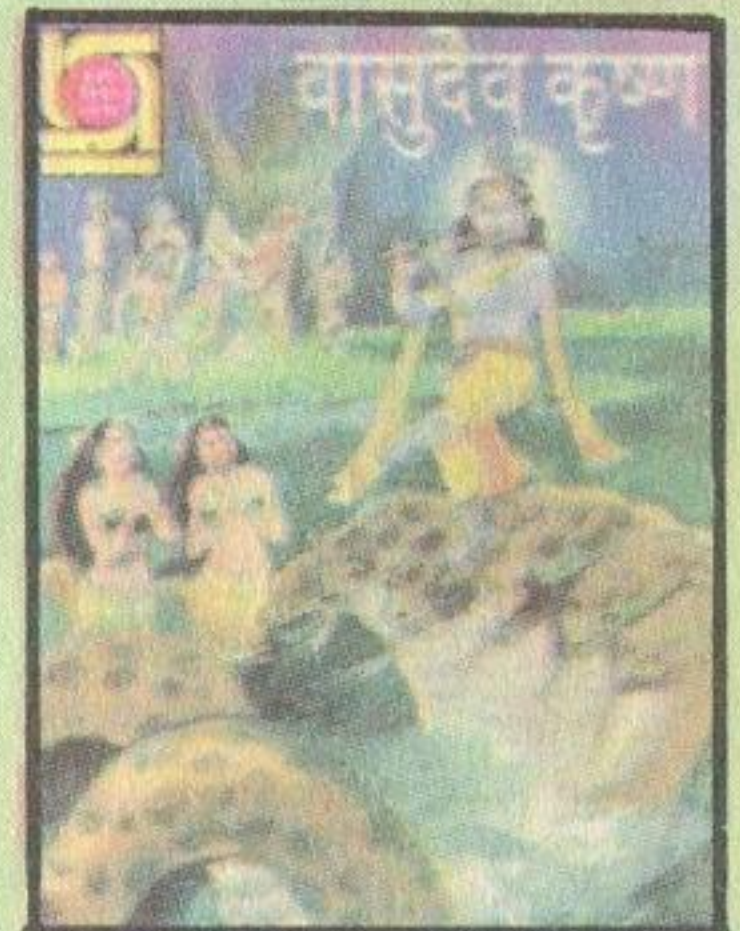
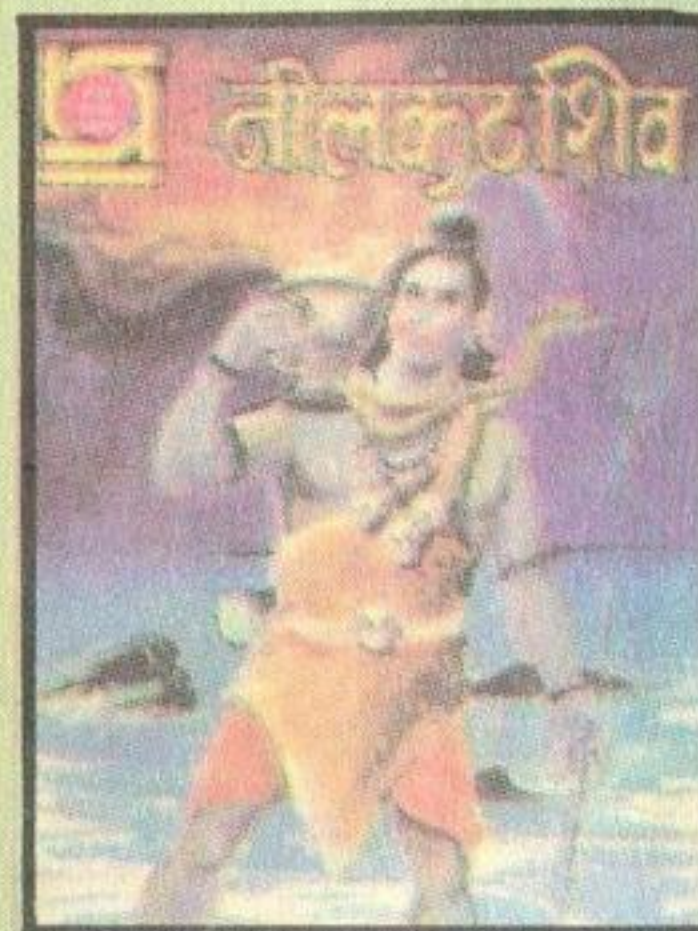
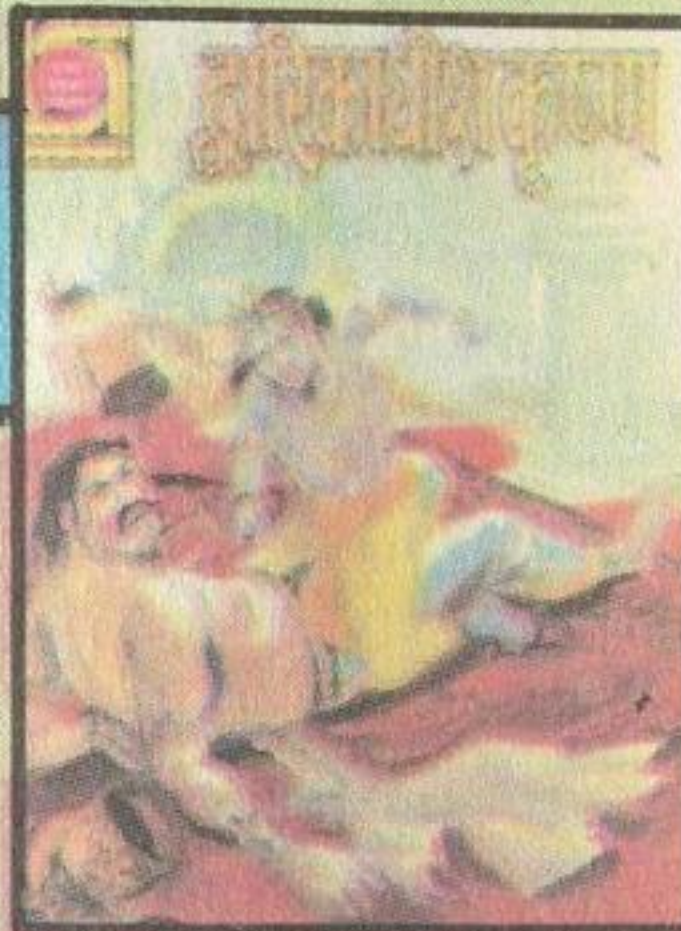
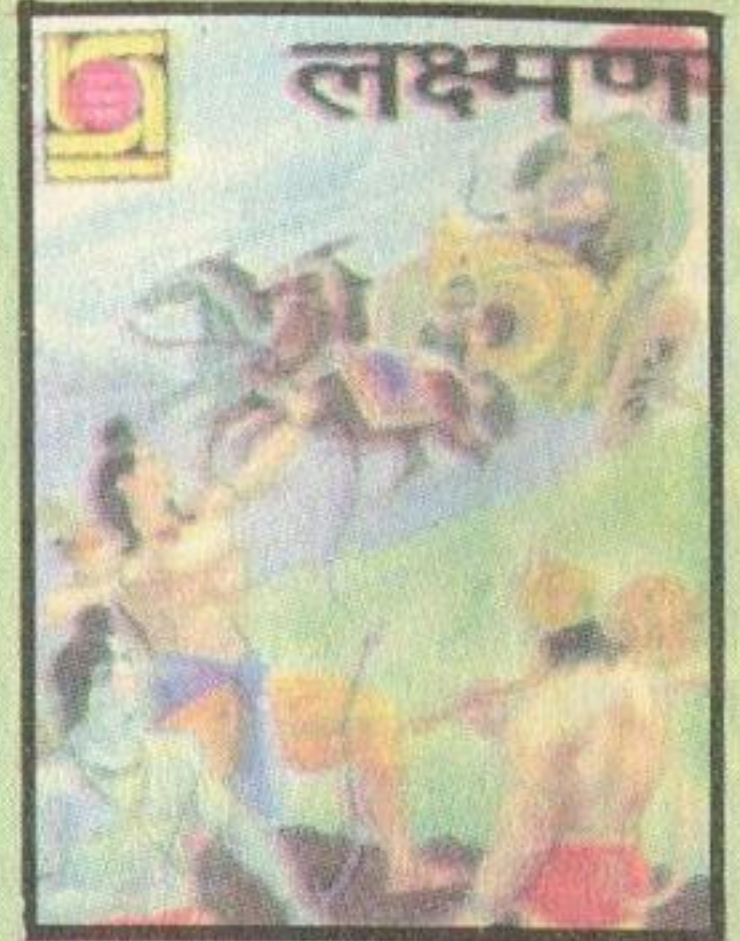
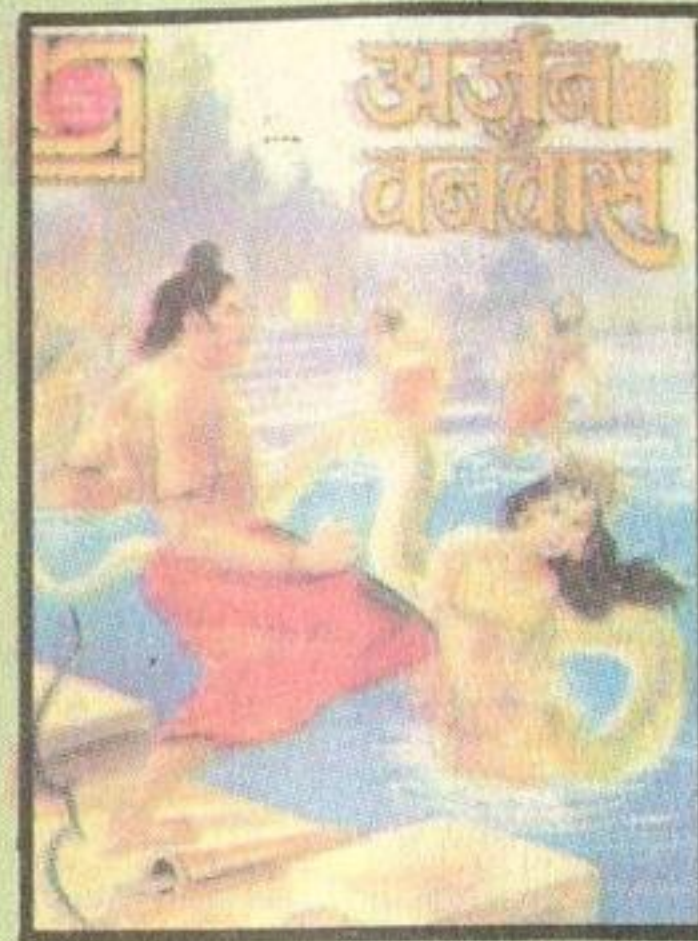
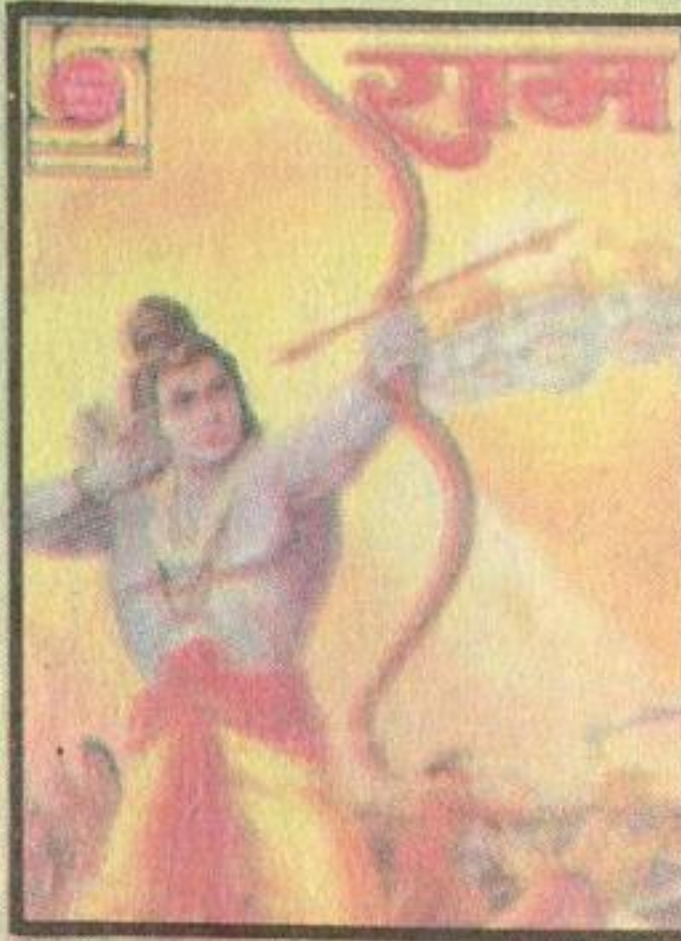


- भारतीय संस्कृति की ज्ञान गंगा में नहाएं
- पौराणिक सम्पदा को अपने घर में सजाएं
- नई पीढ़ी के स्वर्णिम निर्माण के लिए पढ़ें और पढ़ाएं

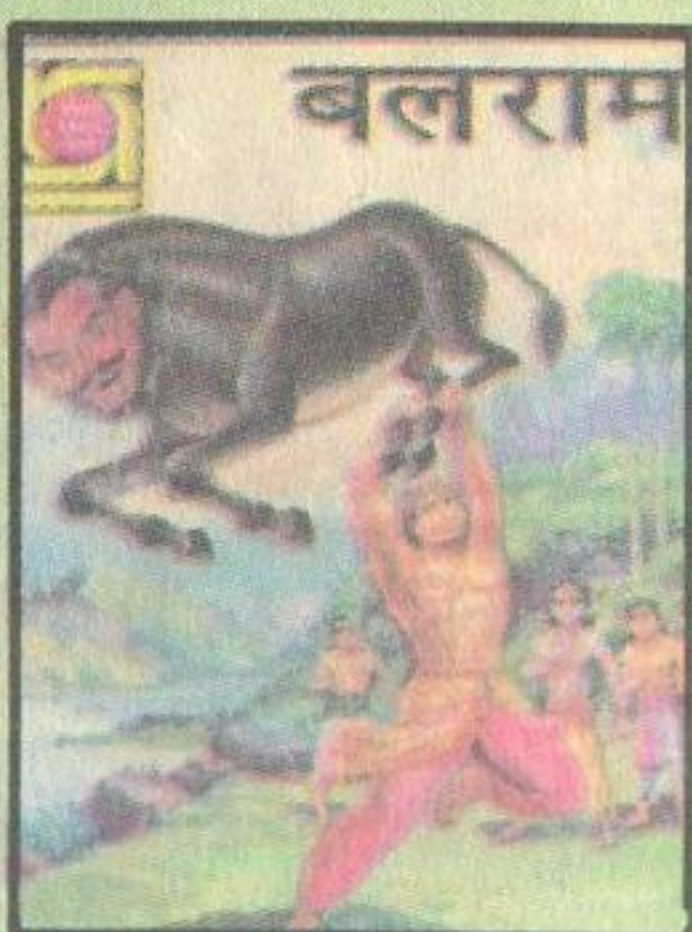
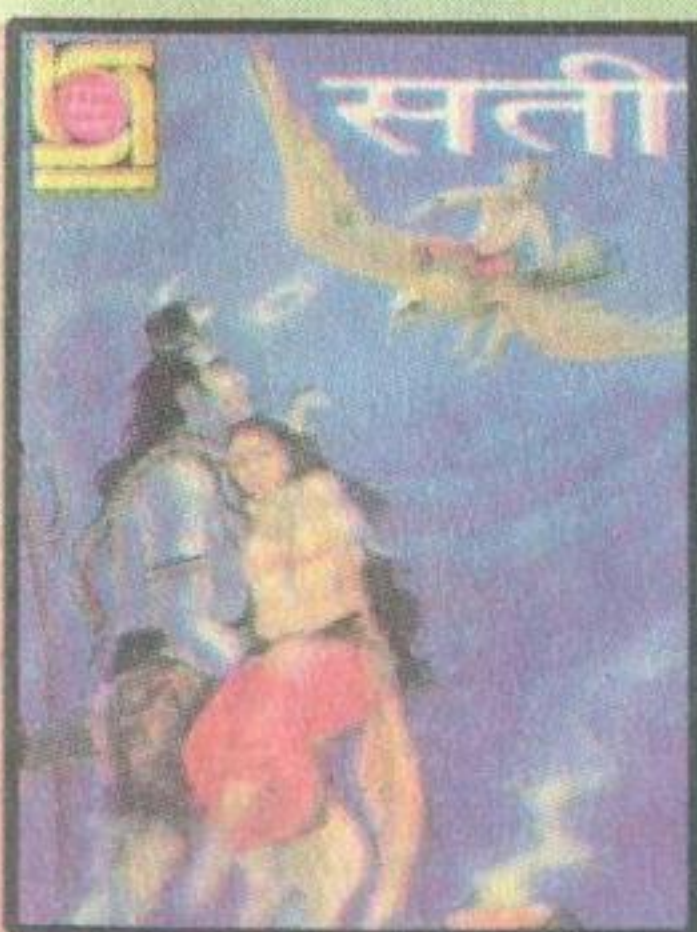


# राज चित्रकथा

की गौरवशाली  
बारह नई चित्रकथाएं



- |                   |                     |
|-------------------|---------------------|
| ■ राम             | ■ द्वारिकाधीश कृष्ण |
| ■ अर्जुन का बनवास | ■ नीलकण्ठ शिव       |
| ■ लक्ष्मण         | ■ वासुदेव कृष्ण     |
| ■ भीम             | ■ सती               |
| ■ पार्वती         | ■ बलराम             |
| ■ सूर्यपुत्र कर्ण | ■ पवनपुत्र हनुमान   |



**प्रत्येक का  
मूल्य 15/-**

सभी चित्रकथाएं आपके शहर के समस्त बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। न मिलने पर कोई भी चार चित्रकथाएं मंगाने के लिए 60/- का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। चारों चित्रकथाएं आपको रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेज दी जाएंगी। मनीआर्डर के निचले हिस्से पर कॉमिकों के नाम लिखकर भेजें।



आ रहा है शीघ्र...

आपके  
टी.वी.  
स्क्रीन पर

DHEERAJ  
VERMA

# नागराज

## मेगा टी.वी. सीरियल

नागराज, दोस्तो, भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय कॉमिक हीरो नागराज कॉमिक के पृष्ठों से निकल एक मेगा टी.वी. सीरियल द्वारा सजीव हो चुका है। रोमांचक घटनाओं से सजा और चमत्कारिक स्पेशल इफैक्ट्स तथा कम्प्यूटर की जादूगरी से भरपूर, एलीप सेन-समीर सेन की धुनों पर झूमता यह सीरियल वर्ष 1999 को आपके सामने एक यादगार टी.वी. दर्शन वर्ष बनायेगा।

तिथियों, समय और चैनलों की घोषणा की प्रतीक्षा करें।

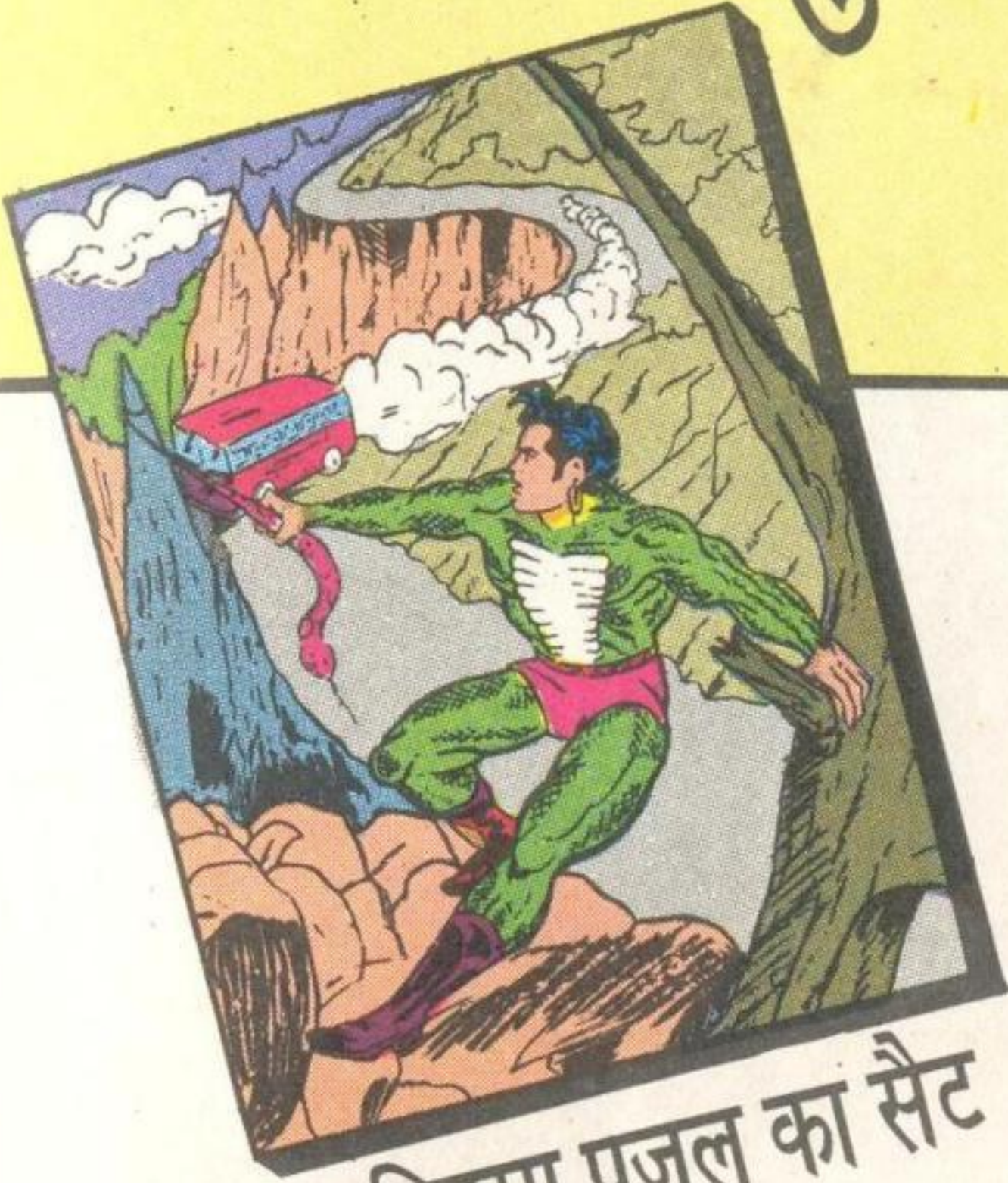




# नागराज नावल्लीज पेश करते हैं



## नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव के 24 जिग्सा पजल



60/-

सैट नं 1 छः जिग्सा पजल का सैट



120/-

सैट नं 2 छः जिग्सा पजल का सैट



120/-

सैट नं 4 छः जिग्सा पजल का सैट



120/-

सैट नं 5 छः जिग्सा पजल का सैट

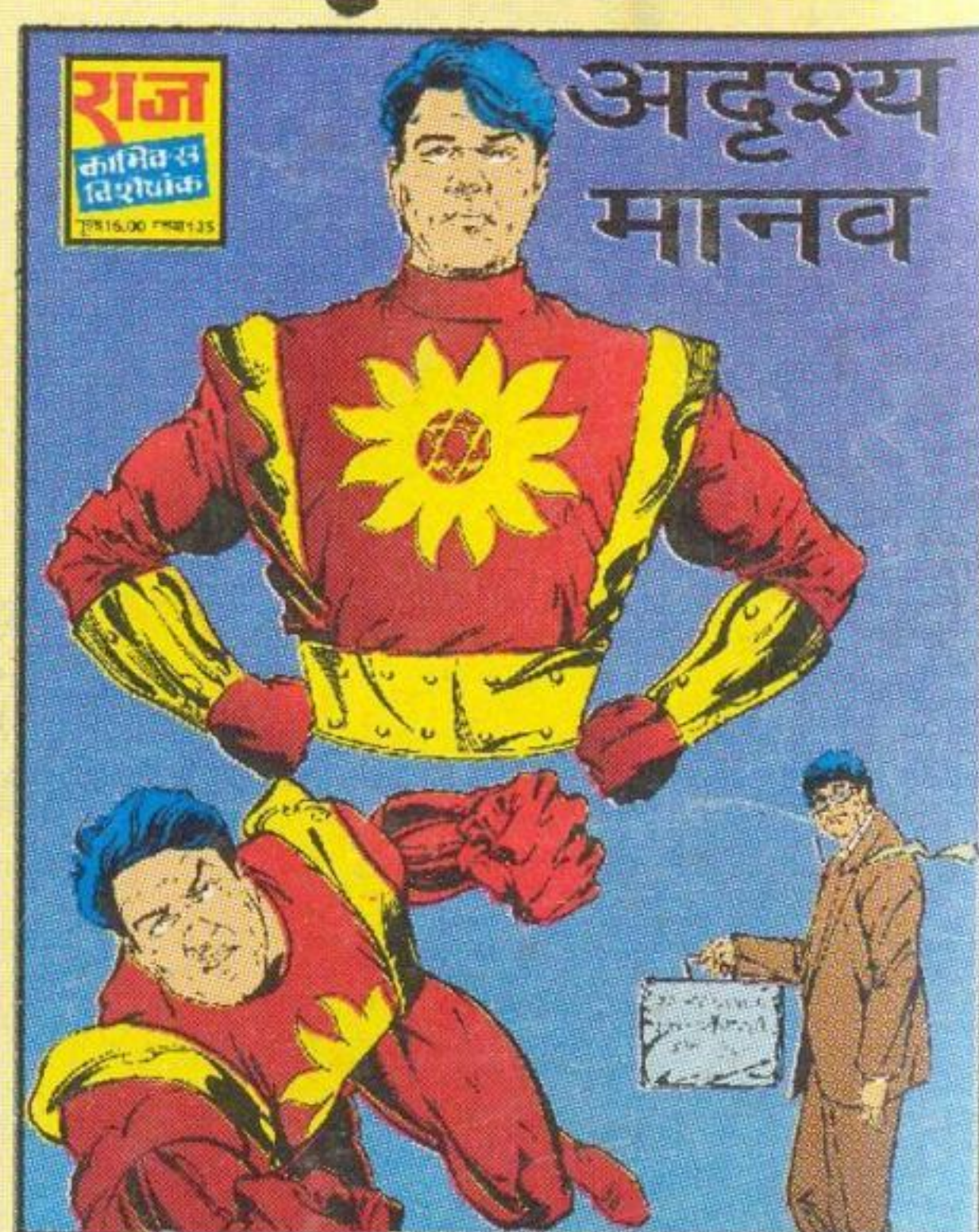
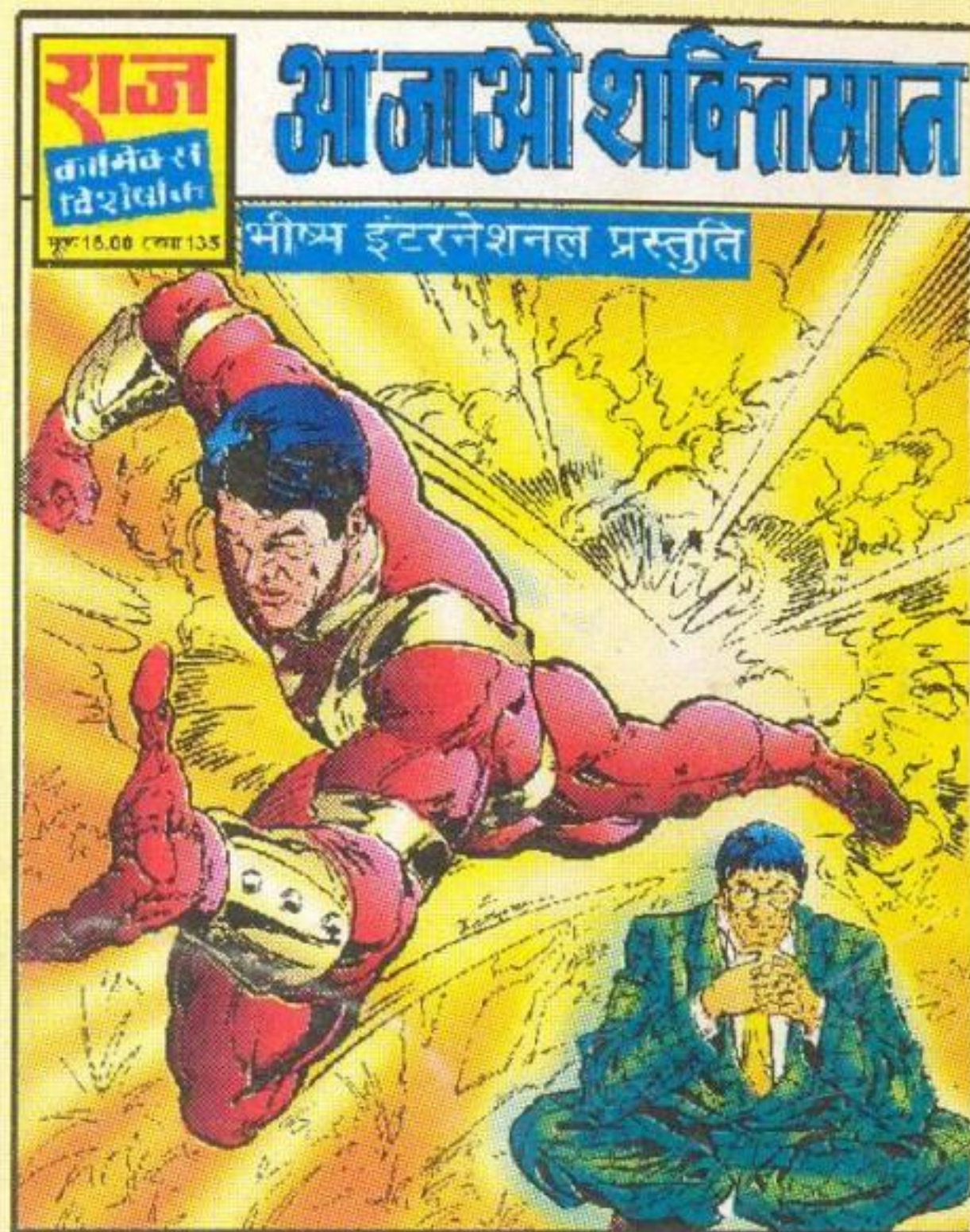
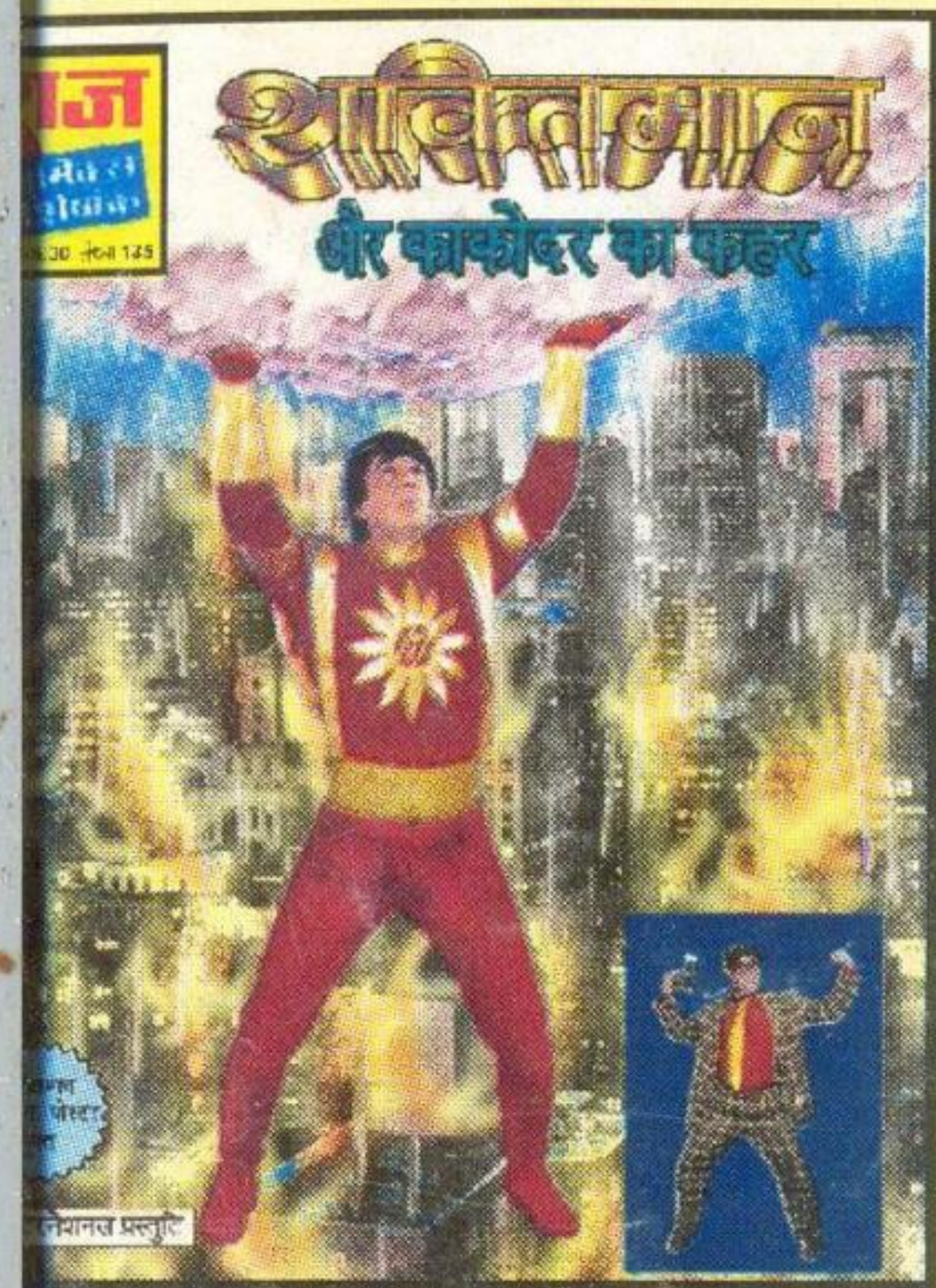
छः जिग्सा पजल का अपनी पसंद का कोई भी सैट घर बैठे डाक द्वारा मंगाएं। आपको जिस नम्बर का भी सैट चाहिए उस सैट के/मूल्य का मनीआर्डर नागराज नावल्लीज 330/2 बुराड़ी, दिल्ली-110084 के पते पर भेजें। हम आपका मनीआर्डर मिलते ही 15 दिन के अन्दर आपकी पसंद का जिग्सा पजल रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेज देंगे। दो सैट एक साथ मंगाने पर 20 रुपये मूल्य का नागराज का एक पर्स उपहारस्वरूप भेजा जाएगा।

थोक विक्रेता बंधु व्यापारिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।  
नागराज नावल्लीज, 330/2 बुराड़ी, दिल्ली-110084



# राज कॉमिक्स में शक्तिमान के रोमांचक कॉमिक विशेषांक

काकोदर का कहर आ जाओ शक्तिमान अदृश्य मानव



## की अपार सफलता के बाद

अब

# इन्विजिबल गैंग

मूल्य: 16/-  
पृष्ठ संख्या: 64

भी पुस्तक विक्रेताओं के पास  
मिलेगी। न मिलने पर हमें लिखें:  
राज पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी,  
दिल्ली-110084. फोन: 7221410.

